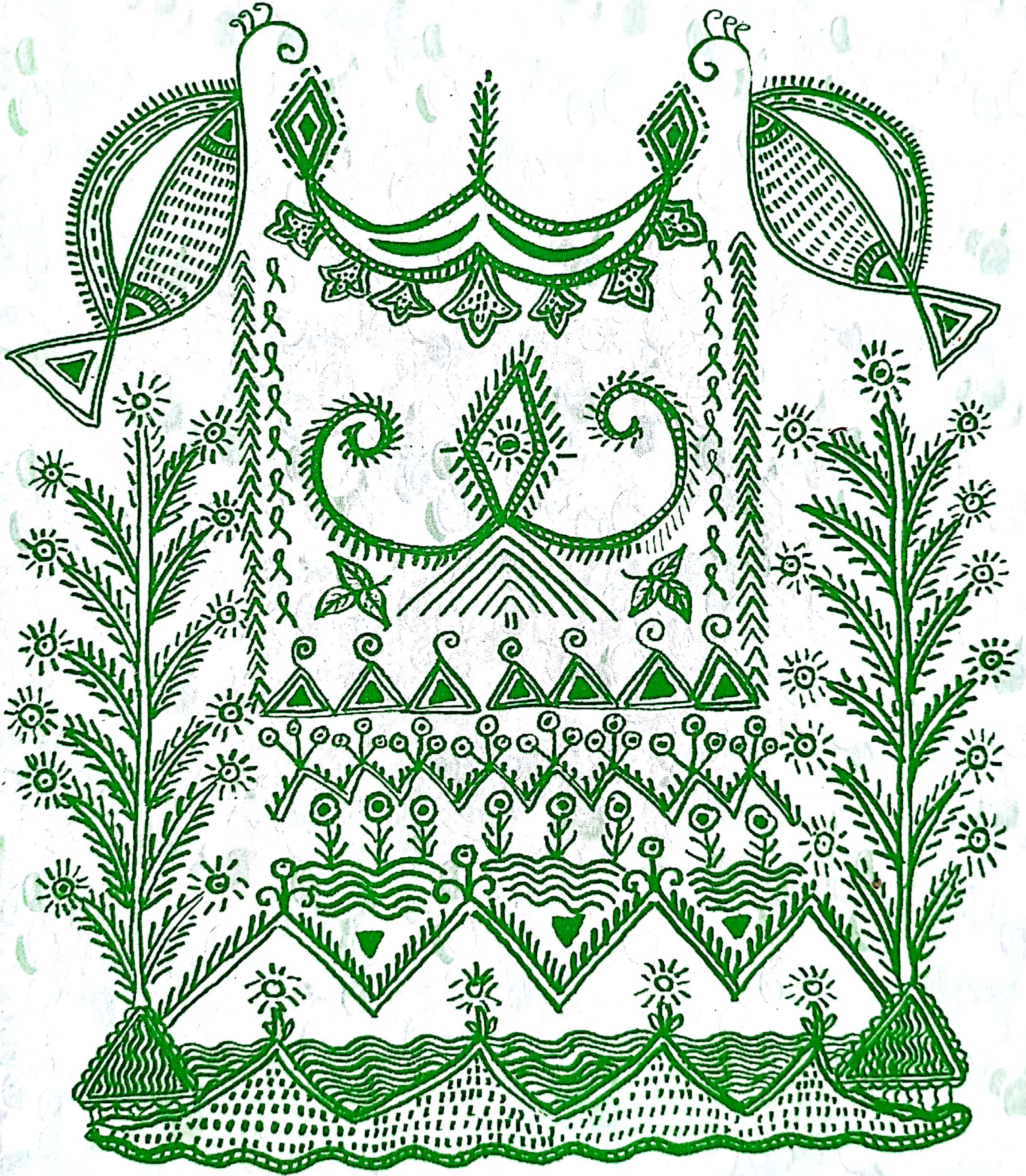
# बहिनाक विरोग



श्रीरामदेवझा

- सभ धी-बेटीकें एहिना एक ने एक दिन सासुर जाय पड़ैत छैक । दुनियाँक चलनिए यैह थिकैक ।
- एका एकी कऽ अपन बाड़ी-झाड़ी, पोखरि-झाँखड़ि, गाछी-बिरछी, बाध-बोन सभ पाछाँ छुटि गेल आ अनचिन्हार बाध-बोन सभ भेटऽ लागल ।
- तोहर विवेक केहन छह जे कोइली जकाँ कुहकैत अपन बहिनाक खोजो-पुछारी नहि करैत छह ।
- बियाह अपना हाथक बात नहि थिकैक। भगवान जकरा जतऽ चाहैत छथिन तकरा ततऽ पठा दैत छथिन ।
- रंग लऽ कऽ की होयतैक ? रंग धो-धो कऽ की लोक चाटत ? काम प्यारा कि चाम प्यारा ? नीक लोक चाही ।
- कोनो नव कनियाँक चालि-प्रकृति कोबरेमे चिन्हा जाइत छैक ।
- सासुरक सभ गप्प सिनेहमे बोरल रहैत छैक, मुदा नैहरोक गप्पमे ममताक फोहारा रहैत छैक ।
- सासुरक लोक कनियाँक नैहरकें छोटको-छोटको बात लऽ कऽ दूसि दैत छैक ।
- ....सुरू-सुरूमे अपना गामक बड़ सुरता अबैत छैक, मुदा फेर अपन सासुरेसँ लोककें सिनेह भऽ जाइत छैक । जाहि स्त्रीगणकें अपना सासुरसँ सिनेह नहि होयतैक ओ की सासुर डेबि सकत कहियो ? सासुर स्त्रीगणक मर्यादा थिकैक। झाँपन थिकैक ।
- जाहि स्त्रीगणक सासुरमे मान-दान होइत छैक तकरे नैहरोमे होइत छैक । जे सासुरमे गिरथाइन बनि कऽ रहैत अछि तकरे नैहर नैहर जकाँ रहैत छैक ।
- एहि बातक पंचैती के करत जे नैहर अधलाह थिक की नीक !

# बहिनाक विरोग

श्रीरामदेवझा

मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा - 846001

Bahinaka Viroga : A fiction by Ramdeo Jha



प्रकाशक - मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

वितरक - श्री शंकरदेवझा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

संस्करण - 2002 इ.

मूल्य - 125/- टाका

आवरण - कविता कुमारी

मुद्रक - प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

# प्रासंगिकी

मिथिला मिहिरक प्रकाशनक पहिल वर्षमे पटनामे रहैत **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** नामक स्तम्भ अव्याहत रूपमे लिखैत छलहुँ । ओ स्तम्भ 30 अक्टूबर 1960सँ 20 अगस्त 1961 धरि चलैत रहल। ओहि क्रममे पैंतालिस गोट चिट्ठी लिखलहुँ जाहिमे अन्तिम चारि गोट चिट्ठी किछु कारणवश मिहिरमे नहि छपि सकल आ फाइलेमे दाबल रहि गेल । हम अगस्त 1961मे एम.ए.क परीक्षा सम्पन्न भेलापर पटनासँ गाम चल अयलहुँ ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठी वेश लोकप्रिय भऽ उठल छल । बन्द भेलापर पाठक दिससँ बरोबरि माङ होमऽ लागल । मिथिला मिहिरक सम्पादक सुधांशुशेखरचौधरी वैयक्तिक समाद ओ पत्र द्वारा चरियाबऽ लगलाह जे अंगरेजीफूलक चिट्ठीक सम्बन्धमे माङ भऽ रहल छैक । ओ स्तम्भ तँ आब नहि चलत । तेँ ओहने सन कोनो नव वस्तुक सम्बन्धमे सोचू आ लिखि कऽ दैत रहू । स्तम्भ-लेखनमे नियमितताक निर्वाह अत्यन्त आवश्यक । अंगरेजीफूलक चिट्ठी लिखबाक अवधिमे पटनहिमे अवस्थित छलहुँ । कय बेर अनेक किस्त अगाउए दऽ देल करैत छलिऐक। तेँ अंगरेजीफूलक चिट्ठीक धारावाहिकतामे कहियो व्यतिक्रम नहि भेल । आब पटनासँ दूर गाममे छलहुँ। एम्.ए. कयलाक बाद कतहु नियुक्तिक व्यग्रता-चिन्ता छल । एहन स्थितिमे कोनो स्तम्भक हेतु सप्ताहे-सप्ताहे नियमित रूपसँ लीखि-लीखि पठायब सम्भव नहि बूझि पड़ैत छल । संगहि डाक द्वारा प्रेषित सामग्री समयपर यथास्थान पहुँचि जाय सेहो निश्चित नहि ।

अक्टूबर 1961मे शेखरजी सूचित कयलनि जे हम दरभंगा आबि रहल छी, दू-तीन दिनक लेल । ओहि समयमे भेट दी । शेखरजी दरभंगा अयलाह आ सबसँ अपन कार्यक प्रसंग विचार-विमर्श कऽ आपस गेलाह । ओही क्रममे पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार 21 अक्टूबर 1961केँ मिश्रटोला (दरभंगा)मे श्रीअमरजीक आवास पर शेखरजी आ हमरा मध्य विविध विषय पर विचार-विमर्श भेल । शेखरजी मिथिला-मिहिरक भितरिया उठा-पटक, सहयोग-असहयोग, प्रकाशन-सामग्रीक अभाव, सामग्री-संकलनक समस्या, मिहिरमे नव-नव वस्तु दैत रहबाक योजना इत्यादिक सम्बन्धमे विस्तारसँ चर्चा कयलनि। ओही क्रममे फेर ओ दोहरौलनि जे अंगरेजीफूलक चिट्ठीक माङ छैक परन्तु आब ओकरा आगाँ बढ़ायब ठीक नहि । ऐंठ वस्तुकेँ फेरसँ परसब नीक नहि । ओहने सन कोनो दोसर स्तम्भ लीखू जाहिमे मैथिल संस्कृति ओ विधि-व्यवहारक झलक सेहो रहैक ।

हम हुनका संग चर्चाक क्रममे अपन समस्या सब कहलियनि । पटनामे अपन कतोक प्रयोजनक सम्बन्धमे भार दैत आश्वासन देलियनि जे दू-एक मास सोचबाक समय दियऽ, तखन अहाँक आग्रहकेँ पूरा करब ।' शेखरजी पटना आपस भेलापर 30 अक्टूबर

1961कें एकटा पत्र लिखलनि जकर एक अंशमे हमर प्रयोजनक स्मरण करैत अपन आपसी यात्राक संक्षिप्त विवरण देने छलाह– हमरा (1) रेडियो स्मरण अछि, (2) राष्ट्रभाषा परिषद् स्मरण अछि (3) चुन्नू-मुन्नू (अजन्ता प्रेससँ प्रकाशित हिन्दी बाल-मासिक) स्मरण अछि । आइ 1 घंटाक बाद सुमनजी (सुमन वात्स्यायन, पटना आकाशवाणी)सँ गप्प करऽ जा रहल छी । काल्हि जयनाथबाबूसँ सन्ध्याकाल भेट होयत । चेतनाक बैसक छैक । राष्ट्रभाषाक सेहो पता लगबैत छी । हम 22कें–10 बजे प्रातः विदा भेलहुँ आ 23कें 5 बजे प्रातःकाल पहुँचलहुँ । तेघड़ा लग मालगाड़ी उनटि गेल रहैक तें अटकऽ पड़ल । गाड़ीक मेल छुटने भरि राति सभकें मोकामामे शीतमे रहऽ पड़लैक । शरदू ओ रंजूकें प्रातः भेने ज्वर भऽ गेलैक । काल्हि पथ्य खयलक अछि ।

1961क नवम्बरक अन्तिम सप्ताहमे एस्.पी. कालेज, दुमकामे मैथिली-व्याख्याता पद पर नियुक्ति भऽ गेल आ हम दुमका चल गेलहुँ । एकर सूचना दिसम्बरमे शेखरजीकें दऽ देलियनि । ओ दुमकाक पतासँ फेर पत्र द्वारा स्तम्भक प्रसंग स्मरण दियौलनि । तखन बहुत सोचि-विचारि कऽ **बहिनाक विरोग** शीर्षकसँ नियमित स्तम्भ लीखब आरम्भ कयल । ई स्तम्भ 21 जनवरी 1962सँ मिथिला मिहिरमे छपब आरम्भ भेल । **बहिनाक बिरोग** दुइ अंकमे छपि गेला पर शेखरजी 30-1-62 कें एकटा पत्र लिखलनि– **'बिरोग' छपि रहल अछि । देखितहि होयब ।.... बिरोग छोट जा रहल अछि । कमसँ कम एक पन्ना भरि जयबाक चाही, संगहि क्रम नहि टुटैक तें शीघ्रे आगाँक हेतु पठाबी** । ई स्तम्भ 2 सितम्बर 1962 धरि छपैत रहल । हम **बहिनाक विरोग**क चिट्ठी डाक द्वारा दुमकासँ पठाओल करी । डाकक गड़बड़ीक कारण कहियो काल चिट्ठी विलम्बसँ पहुँचैत छलैक । अतः कोनो-कोनो सप्ताह फाँक रहि जाइत छल। एहन घटना केवल दुइ बेर भेल। उनैसम चिट्ठी पठौलाक बाद जून मासमे गर्मी छुट्टीमे गाम चल आयल रही, चिट्ठी लीखि नहि सकलहुँ । तें दू सप्ताह (3 जून ओ 10 जून) फाँक चल गेलैक । पुनः जुलाइ मासमे 25 आ 26 क्रमांकक चिट्ठी समय पर मिहिरकें नहि भेटलैक । 22 जुलाइक अंक तें फाँक चल गेलैक । अगिला सप्ताह पूर्वक दुनू चिट्ठी पहुचबासँ पहिनहि 27म संख्यक चिट्ठी पहुँचि गेलैक । अगिला सप्ताह– 29 जुलाइकें वैह छपियो गेलैक । अतः 25म-26म चिट्ठी धारावाही क्रममे छपबासँ वंचित रहि गेल। क्रमांक यथावते रहलैक । अतः चिट्ठीक अन्तिम क्रमांक 32 रहितो वास्तवमे तीसे गोट चिट्ठी छपि सकल । 25म-26म चिट्ठीक मूल प्रति हमरा लग सुरक्षित छल जकरा वर्त्तमान संस्करणमे यथास्थान योजित कऽ देल गेल अछि ।

अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे दुइ गोट एहन ससुरवासू युवतीक आधार लेल गेल अछि जे अपन पारिवारिक जीवनक आरम्भिक अवस्थामे प्रवेश कऽ गेल अछि । अपन पारिवारिक उत्तरदायित्व ओ कर्त्तव्यकें बूझऽ लागल अछि । अंगरेजीफूलक नारी-जीवनसँ सद्यःपूर्वक मैथिल नवयुवतीक स्थिति ओ मानसिकताकें **बहिनाक विरोग**मे आधार

बनाओल गेल अछि । एहिमे दुइ गोट नवयुवती एक-दोसराकेँ परस्पर **बहिना** सम्बोधित करैत पत्राचार करैत अछि । एकटा बहिना अछि दुरगमनिञा कनिञा जे सासुरेसँ चिट्ठी लिखैत अछि । दोसर बहिना एक बेर सासुर बसि कऽ नैहर आयल अछि आ नैहरेसँ अपन सासुरमे स्थित बहिनाकेँ उतारा दैत अछि । एकटा बहिना सर्वथा अनुभवहीन अछि, नवस्थान आ नवलोकक मध्य डेराइलि-सहमलि अछि । किन्तु दोसर बहिना एक बेर सासुरसँ भऽ आयलि अछि । पहिल बेर कोनो नवयुवतीकेँ सासुर गेलापर की बीतैत छैक तकर अनुभव ओकरा छैक । तेँ थोड़ेक पकठोसलि अछि । दुहूक मानसिकतामे स्पष्ट अन्तर छैक जकर अवक्षेपण दुहूक चिट्ठी सबमे होइत रहल अछि । अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे गाम ओ शहर-दुहूक परिवेशक संयोजनक अवसर छलैक। परन्तु **बहिनाक विरोग**मे पूर्णत: ग्राम्यजीवनक अन्त:पुरक परिवेश अछि । घर, आङन, दलान यैह ओकर सीमा अछि जाहिमे स्त्रीगणेक प्रधानता रहैत छैक ।

**बहिनाक विरोग**मे बत्तीसम चिट्ठीक पश्चातो कथाक विकास होयबाक छलैक। सासुरवाली बहिनाक वऽर ओकरासँ किएक बिरुझल छथिन अथवा बहिनाकेँ तेहन बूझि पड़ैत छैक- तकर समाधान आगाँक चिट्ठी सबमे अयबाक छलैक । कथानकक शाखा-विकासमे उग्रतारा दाइक व्यथा-कथा, उमाक विवाहक प्रयास, प्रीतमक कथा आगाँ बढ़बाक छलैक । परन्तु चिट्ठी-लेखन रुकि गेल तँ कथाक विकासो ओही ठाम थम्हि गेल । पुस्तक रूपमे प्रकाशनक क्रममे इच्छा भेल जे ओकरा पूर्व कल्पित परिणति पर पहुँचा देल जाय । परन्तु समयाभावक कारणे ओ सम्भव नहि भऽ सकल । अत: **अध उघरे सुख देत** उक्तिकेँ आधार मानि एकरा पुस्तक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

**बहिनाक विरोग**क मुद्रणार्थ पाण्डुलिपि तैयार करबामे हमर जेठ ओ माझिल पुत्र क्रमश: श्रीकृष्णदेवझा, श्रीशंकरदेवझा एवं माझिल कन्या कविताकुमारी मनोयोग पूर्वक श्रम कयलनि अछि । एहि ठाम हम श्रद्धापुरस्सर स्मरण करब नहि बिसरि सकैत छियनि अपन पुण्यशीला माय स्वर्गीया **देवजतीदेवी** प्रसिद्ध **बच्चादाइ**केँ जनिक वात्सल्यक छायामे हमरा मिथिलाक लोकवृत्तक सूक्ष्मतम स्वरूपक ज्ञानोपलब्धि भेल तथा जे **अंगरेजीफूलक चिट्ठी** एवं **बहिनाक विरोग**मे सन्निविष्ट परम्परागत विश्वास, टोना-टापर, विधि-व्यवहार सभक अभिज्ञान करबैत रहल छलीह । हम स्मरण करैत छियनि श्रद्धेया स्वर्गीया माँ (सासु **हीरादेवी / दमयन्ती बहुड़िया**)केँ जनिकासँ प्राप्त स्त्रीगणोचित वाग्भंगिमा ओ स्त्रीगणक कतोक विधि-व्यवहारक सूचनाक समावेश उपर्युक्त स्तम्भमे होइत रहल छल। आशा करैत छी जे पुस्तक रूपमे प्रकाशित **बहिनाक विरोग** स्त्री-पुरुष उभय वर्गकेँ अवश्य नीक लगतनि ।

कार्त्तिक धवल त्रयोदशी '02
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

**रामदेवझा**
सदस्य, साहित्य अकादेमी,
नई दिल्ली

मजहरुलहक पथ, पटना—१
तिथि 30/6/१९६३

श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी
सम्पादक, मिथिला मिहिर

प्रोफेसर श्री रामदेव झाकेँ हम हुनक छात्र-जीवनसँ नीक जकाँ जनैत छियनि। ओ ज्ञान-पिपासु रहबाक कारणेँ आरंभेसँ अपन प्रतिभाकेँ मँजैत-चमकबैत अयलाह अछि। मातृभाषा मैथिलीक प्रति हुनक सहज स्नेह हुनक कार्य-क्षेत्रकेँ विशाल बना देने छनि। निबन्ध, नाटक, कविता ओ कथाक क्षेत्रमे तँ हुनक प्रतिभा नीक जकाँ प्रतिभासित भेले अछि, संगहि अनुसंधानक क्षेत्रमे सेहो हुनक दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म रहलनि अछि। वस्तुतः एतेक अल्प वयसमे अपन प्रतिभा ओ अध्यवसायक बलेँ मैथिली-जगतक विद्वत्-समाजमे ओ अपन नीक स्थान बना लेने छथि।

मिथिला मिहिरक तँ ओ लेखक रहबे कयलाह अछि, विशेषतया हुनक लिखल मिथिला मिहिरक स्थायी स्तंभ 'अंगरेजी फूलक चिठ्ठी', 'बहिनाक विरोग' ओ 'रामजोड़ी कागतक पाँतिपर' आदि समाजमे विशेष आदर पौलकनि अछि।

हमर दृढ़ धारणा अछि, हिनक सदृश दृढ़ चरित्र, बहुमुख प्रतिभासम्पन्न ओ अध्यवसायी व्यक्तित्व बड़ विरल देखल जाइत अछि। हम विश्वासक संग कहि सकैत छी, ई जाहि संस्थामे जयताह रहताह से अवश्यमेव चमकि उठत। हम हिनक सुन्दर भविष्यक आकांक्षी छी।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी
30/6/63

# बहिनाक विरोग

**हय बहिना !**

**1 [ सासुरसँ ]**

तोँ सभ तँ हमरा बिसरिये गेलि होयबह । हमरा अपने होइत अछि जे तोरा सभसँ बिछुड़ला एक युग बीति गेल । मुदा हमर सुधि-बुधि तँ तोरे सभ लग अछि। सदिखन तोरा सभकलेल कोँढ़ फटैत रहैत अछि । होइत अछि, जेना जहलमे बन्द होइ। हय, जहलमे जे लोक बन्द रहैत छैक तँ ओकरो एहिना ने बूझि पड़ैत होयतैक ? एहि ठाम ने चलू-फिरू, ने बाजू-भूकू, सदच्छन मुँह झँपनहि रहू, एनामे लोक कोना कऽ जीउत ! मोन तँ अकच्छ भऽ जाइत अछि, एतेक कतहु बन्हन होइ ! भरि दिन घरमे बैसल-बैसल डाँड़-पीठ एक भऽ जाइत अछि । जे क्यो आङन आओत से एकटा कऽ बोली कसने जायत । जेना हम सभक ढेलमारा गोसाञि होइ । हमरा तामस होइत रहैत अछि, सभ केओ हँसैत रहैत अछि ।

हय बहिना ! बेला, गङाजली, प्रीतम ई सभ सासुरसँ आयलि छलि आ खिस्सा कहने छलि तँ कतेक हँसी लागल छल हमरा ? विश्वासे ने होइत छल । तोँहू पहिल बेर अयलीह आ खिस्सा सभ कहने छलीह तँ हम तोरा पर कतेक हँसलि छलियह ? हमरा तँ होइत छल जे ई सभ ओहिना चतकार देखबैत अछि ! हम तँ अपने तीन मास मातृकमे रहि आयलि रही, कहाँ अपना गामपर लेल कोनो उदवेग लेने छल ! मुदा आब बुझैत छिऐक जे मातृक आ सासुर दुनू एके नहि होइत छैक ।

हय बहिना ! सिजनियाँ हमरा कहियो ने सोहायलि से तँ जनिते छह । जानि नहि, ओकरा देखि कऽ हमरा एतेक झरकी किएक उठि जाइत छल । से चलैत कालमे गामपर ओकरे हमरा संग लगा दैत जाइ गेलि । जखन हम ई बुझलहुँ जे सिजनियाँ हमरा लोकनिनमे जायति तँ तामस भेल छल । मुदा तोँही ने कहने छलीह जे एहन समयमे किछु बाजक नहि चाही । लोक सुनने खिस्सा करैत छैक, कुचेष्टा होइत छैक । मुदा हय, एहि ठाम आबि कऽ ओकरासँ जे सिनेह भऽ गेल से की कहियह ? होइत अछि जे अपने माय हो। तोहर सप्पत कहैत छियह, तोँ सूनि कऽ हँसबो करबह । होइत छल जे ओ सदिखन हमरे लग बैसलिये रहय । ओहो बेचारी हमरा जान-परानसँ बाढ़ि कऽ मानैत छलि । हमरा सासुकेँ सदिखन हमरे दऽ बुझबैत रहैत छलनि । आइ ओ चल जायत से सोचि कऽ तँ हमर छाती फाटल जाइत अछि। ओकरा बिनु हम एहि ठाम कोना रहब ? वैह तँ हमरा बोल-भरोस दैत रहैत छलि। ओ तीन दिनसँ जयबा लेल छटपट करैत अछि, हमही ओकरा

किरिया-सप्पत दऽ कऽ रोकने छलिऐक । मुदा आब कय दिन ओकरा रोकियौक ? गेनिहारकेँ के रोकतैक ? ओकर जयबाक नाम सूनि कऽ हम बड़े कनलहुँ, बड़े कनलहुँ। ओ हमरा कहलक जे बच्चीदाइ, अहाँ बताहि जकाँ किएक करैत छी ? सभ धी-बेटीकेँ एहिना एक ने एक दिन सासुर जाय पड़ैत छैक । दुनियाँक चलनिए यैह थिकैक ।

हम तँ ओकर गऽर धऽ कऽ कनिते रहलहुँ, होइत छल जे ओकरा छातीमे सटि कऽ कनिते रही। ओ कहलक जे हमरा तँ एहि ठामक सुख छोड़ि कऽ जयबाक मोने ने होइत अछि मुदा, हम की करू ? ओहि ठाम अहाँक मायोकेँ मोन लागल होयतनि। अहाँ बिना ओहि ठाम सौंसे आङन-घर, टोल-पड़ोस उदास लगैत होयतैक । अहाँक घरमे सभक मोन हीहऽरू भेल होयतैक । अहाँक समाद हुनका भेटतनि तँ सन्तोख होयतनि। फेर तँ हमरे पठयबे करतीह । हम फेर आयब ।' हम कहलिऐक जे– एहि अनभोआर ठाममे हम एसगर कोना रहब ?'

एहिपर ओ कहलक जे– अनभोआर आब कोना अछि ? सासु-ससुर अहाँक, ननदि-देयादनी अहाँक, देओर-जाउत अहाँक, घर-दुआर अहाँक । सभ तँ अपने थिक। सभसँ बढ़ि कऽ जिनगी भरिक संगी पाहुन छथि से सभ दिन लगमे रहताह ।' ओ हँसि देलक आ बाजलि– इह, हमर घरबला एना सभ दिन लगमे रहैत तँ नैहरक नामो ने लितिऐक ।' तैयो हम कनिते रहलहुँ । ओ बाजलि जे ओना नहि ने कानी, मासे दिनमे तँ फेर लैये जयताह । आ एखन कनैत छी, पाछाँ तँ नैहरकेँ बिसरिये जायब ।' सिजनियाँ तँ आइ विदा होइत अछि । ओकरे हाथेँ धड़फड़ीमे ई चिट्ठी लीखि रहल छियह । तोँ हमरा मायकेँ कहिहक जे हमरा जल्दी अनबा लेति । आ तोँ बिसरिहह नहि । **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **2 [ सासुरसँ ]**

ओहि दिन जयबासँ पहिने सिजनियाँ हमरा बुझबैत छलि आ हँसि-हँसि कऽ तोहर पाहुन दऽ कहैत छलि तँ होइत छल जे ई बड़ हियाक पाथरि अछि । एकरा एको रत्ती दरेग नहि छैक । जँ एकरा एको मिसिया भरि मम्मत आ मात्सर्य रहितैक तँ हमरा आँखिक नोर देखि कऽ एना हँसैत आ कहैत जे नैहर बिसरिये जायब ? बुझलहुँ जे तोहर पाहुनसँ आब सभ दिन भेंट होयत, मुदा नैहर फेर नैहरे थिकैक । से सिजनियाँ पर मोनेमोन तामस भेल छल । मुदा की कहियह हय बहिना, जाय कालमे ओ हमर गऽर धऽ कऽ जे कानलि से की हम बिसरि सकैत छी ? हमरा तँ भेल जे वैह ओहि दिन सासुर जाइत छलि। आँखिसँ दहो-बहो नोर चल जाइत रहैक । हमरो होइत छल जे सिजनियाँकेँ किन्नहु नहि छोड़ी, मुदा ओकर कानब देखि कऽ हम अपने कानब जेना बिसरि गेलहुँ ।

हय, हम दुनू गोटा घाड़ाजोड़ी कऽ कनैत रही आ हमर ननदि उग्रतारादाइ हमरा दुनू गोटाकेँ छोड़बैत रहथि । ओ कहलनि जे अय कनियाँ ! एना जुनि कानी, मोन भारी भऽ जायत । कहू तँ, एना कनने तँ लोक दुखिते ने पड़ि जाय ! हम अहाँक बाबूकेँ समाद

पठबैत छियनि, सुदिन तका कऽ लऽ जयताह । मायो तँ कहैत छलि जे कनियाँकेँ जल्दीये नैहर पठा देबनि ।' फेर ओ सिजनियाकेँ देह डोलबैत कहलथिन– अय खबासिनी ! अहूँ तँ दुरगमनिये कनियाँ जकाँ बताहि भेलि छी । उठू, आब साँझ पड़ल– आ ने तँ आइ नहि, काल्हि भोरे चल जायब ।'

सिजनियाँ आँखिक नोर पोछैत उठि गेलि आ कहलकनि– अँहँ, एहिना कऽ कय दिन ने अँटकि गेलिऐक अछि । गामपर अन्देसा होइत होयतैक ।'

'किदन होयतैक ? रहि ने जाउ एही ठाम । हमर कनियोँकेँ मोन लगतनि ।' उग्रतारादाइ बिना हँसनहि कहलथिन । सिजनियाँ कनन–हँसी हँसैत कहलकनि– जिनगी भरि लेल एक टा दइये देलहुँ, आब हमरो राखब एहि ठाम से सम्हरत ? जकरालेल हमरा राखब तकरा लेल एही ठामसँ जोगाड़ कऽ दियौन ।' हम मूड़ी गोंतने बैसलि छलहुँ से सिजनियाँक ई गप्प सूनि बड़ खुशी भेल जे, खूब छकौलकनि ।

हय, हमरा दुनू गोटेक कानब देखि कऽ उग्रतारोदाइक आँखि ढबढबा गेलनि । हम नीक जकाँ मुँह तँ नहि देखलियनि, मुदा हुनका बोलीसँ बूझि पड़ल । सिजनियाँ चलबा कालमे हमरा सासुसँ बड़ उचिती–मिनती कयलकनि– हे समधिन ! बच्चीदाइ एखन बड़ अबोध छथि । हुनकासँ बड़ अपराध होयतनि, तकरा छमि दिहऽथिन । जहिना उग्रतारादाइ आ उमादाइ छथिन तहिना बच्चीयोदाइकेँ बुझिहऽथिन । आब तँ हुनकर माय यैह थिकथिन । यैह ने दुलार–मलार करथिन !'

एक बेर हमरा लग आबि कऽ मुँह उठा कऽ देखलक । हमर छिड़िआयल लटकेँ समेटैत, आँखिसँ नोर पोछि देलक । हमर ठोरकेँ छूबैत बाजलि– दाइ, एक बेर ही भरि कऽ अपन मुँह देखि लेबऽ दियऽ, जानि नहि, ई चनरमा सन मुँह फेर कहिया देखब ।' फेर ओ बाजलि– दाइ ! अहाँ नीक जकाँ रहब आ कानब नहि ।'

हय बहिना, ओ तँ चलि गेलि आ हमर मनुआ कनैत रहल । भरि राति बूझऽ तँ निन्न नहि भेल । निन्न तँ ओहुना नहि होइत छल । तोहर पाहुन बतियाइते–बतियाइत भोर कऽ दैत छथुन । मुदा ओहि दिन रहि–रहि कऽ आँखिसँ हहा कऽ नोर खसि पड़ैत छल। ओहि राति किछु खयबोमे ने नीक लागल । बड़कीदाइ हमरा मारि सप्पत दैत छलीह । उग्रतारा दाइकेँ हम बड़कीये दाइ कहैत छियनि । से हुनकर बात रखबा लेल दू कऽर मुँहमे राखि लेलहुँ । एना जँ अपना गामपर रहितहुँ आ नहि खयबाक मोन रहैत तँ साँझे ओछाओन धऽ लितहुँ, मारि आहिअलम पसारि दितिऐक । माय सभटा काज छोड़ि कऽ हमरा सिरमामे आबि कऽ बैसि रहैत आ मुँह–हाथ धरऽ लगैत । मुदा एहि ठाम ककरापर करब ? आ करब से लोक की कहत ?

बड़कीदाइ तँ सप्पत खा कऽ कहलनि अछि जे ओ समाद पठबा देलथिन अछि हमरा लऽ जयबाक लेल । हय बहिना ! ओ समाद तँ मायकेँ पहुँचबे करतैक।

सिजनियोँकेँ हम समाद कहलिऐक अछि । तोरो कहैत छियह जे कनेक मायकेँ कहिहक जे हमरा जल्दी एहि ठामसँ लऽ जायत । आ तोँ हमरा बिसरिहह नहि । **–तोरे-बहिना**

**3 [ सासुरसँ ]**

**हय बहिना !**

तोँ एहन कठोर भऽ जयबह से हम बिसरभोरोमे ने सोचैत रही । हय, गामपर रहैत छलहुँ तँ दिनमे सतरह बेर पुछारी कऽ जाइत छलीह । हमरा कतेक बेर ने उपराग देने छलीह जे तोरासँ नहि भेंट होइत अछि तँ कतहु मोने ने लगैत अछि । लोको सभ कहैत रहैत छल जे जँ बहिना लागल छैक तँ फल्लीकेँ, से आब तोँ एहन निदरदी भऽ गेलीह जे अपना बहिनाक खोजो-खबरि ने लैत छह । होयबे करैत छैक जे आँखिक लेखेँ पीठ पछुआड़ । जावत धरि लोक सोझाँमे रहैत छैक तावते धरि सभ शील-संकोच । ओना कहबाक तँ नहि चाही, तोँ कहबह जे बहिना उलहन दैत अछि, मुदा मोन जखन बड़ अकुला गेल तँ कहैत छियह जे तोहूँ जखन सासुर गेलि रहह तँ तेसरे दिन भेने हमही पहिने उपकरि कऽ चिट्ठी देने रहियह आ तेसरा दिन पर कऽ दैते रहलियह । आ हम नेहोरा करैत छियह तैयो ने हमर सुधि लैत छह । आ कि, तोरा ई सभ कहलेसँ कोन फल ?

तोरा भगवान् एको रत्ती दया-माया छातीमे नहि देने छथुन से दुरागमन दिन बुझलहुँ । तोँ हमर बहिना छह तेँ तोहर गरदनि धयलहुँ, मुदा तोँ हमरा ठोंठ पकड़ि कऽ बलजोरी महफामे ठेलि कऽ धऽ देलह । नहि तँ हम किन्नहु ने ओहिपर चढ़ितहुँ । जखन बहिने हमरा त्यागि देलक तँ दोसर के सम्हारत ! तोँ तँ बिसरि गेलि होयबह, मुदा हमरा ओहिना मोन अछि जे तोँ जखन दुरागमनमे महफापर चढ़लि छलीह तँ गामक पछबरिया पोखरिक कदमक गाछ धरि तोहर गऽर धऽ कऽ कनिते गेलि रही । हय, तोरा तँ पानिओ हमही पियौने छलियह । जँ हमरा लोक पाछाँ नहि घीचि लैत तँ जानि नहि, कते दूर धरि पछुऔने जइतियह ।

हय बहिना ! तामसमे मारि की कहाँ लीखि देलियह । तोँही कोन अपराध कयलह ? जँ तोँ नहि चढ़बितह तँ केओ तँ जबरदस्ती चढ़ाइये दैत । ओहि दिन कदमक गाछ लगसँ महफा जखन आगाँ बढ़ल तँ तोँ मोन पड़ि गेलीह आ मोनमे भेल छल जे तोरो मोन तँ हमरे जकाँ ने उदास भऽ गेल होयतह ? आ कि तोरा ई सभ नहि भेल रहह ? अपन बात तँ तोँही जानह, मुदा हमरा होइत छल जे एहिपरसँ कूदि कऽ अपना आङन पड़ा जाइ आ कोनियाँ घरमे जा कऽ बिलैया ठोकि कऽ नुका रही ।

होइत छल जे केओ एहन हीत होइत जे हमर डेन पकड़ि कऽ कहैत जे बच्चीदाइकेँ नहि जाय देबैक । कहरिया सभपर तामस होइत छल जे कोढ़िया सभकेँ पयरमे एतेक फुरती कतऽसँ आबि गेलैक । हवा-बिहाड़ि जकाँ चलैत छलैक ने । तोँ सभ जे ठाढ़ि भेलि हमरा तकैत छलीह से होइत छल जे हम ओम्हरे तकिते रही । समदाउनिक भास तँ नीक नहि लगैत छल, मुदा तोरा लोकनिक गाओल छलह से होइत छल जे सुनिते रही ।

एका एकी कऽ अपन बाड़ी-झाड़ी, पोखरि-झाँखड़ि, गाछी-बिरछी, बाध-बोन

सभ पाछाँ छूटि गेल आ अनचिन्हार बाध-बोन सभ भेटऽ लागल । महफाक भीतरसँ कहरिया सभक खाली 'हम हुम' सुनैत छलिऐक । महफा ततेक डोलैत छलैक जे घुरमी लागि गेल आ जी फरियाय लागल । होइत दल जे ओक भऽ जायत । आब ओहि पाँतरमे हम की करी सेहो ने किछु फुराइत छल । संगमे सिजनियाँ धरि छलि । ओ बोलभरोस दैत जाइत छलि । कहैत छलि, दाइ, गीतमे सुनलिऐ नहि जे की कहैत छैक ? अहाँ तँ अपने गबैत छलहुँ पहिने जे 'सभ धिया सासुर जाय ।' एहिना होइत अयलैक अछि सभ दिन। एना छतिफट्टू नहि ने होइ ।

जी फरियाइत छल तँ ओकरे कहलिऐक । ओ महफाकेँ रखबौलक । बरियातीसभ तँ गाड़ीपर छलथिन तेँ लीख धयने अबैत छलथिन आ महफा एकपेड़िया धऽ लेने छलैक। मुदा एकटा बात बेस भेलैक । तोहर पाहुन ओही ठामक साइकिलपर चढ़ल ओहि ठाम पहुँचि गेलथुन । सिजनियाँ सभ बात कहलकनि । ओ ताहिपर कहलथिन– आहि रौ बा ! एहि लेल एतेक कानत लोक ? पुछियौन, यदि तैयार होथि तँ एही ठामसँ गामपर पहुँचा दियनि । बरु दू बरखक बादे जखन इच्छा होयतनि तँ जयतीह ।'

हमरा तँ भेल, सत्ते घुमाइयो ने देथिन । लोक की कहत ? लाजेँ तँ मरिये जायब। कहरिया सभ एक कात भऽ कऽ सुस्ताइत छल आ सिजनियाँ इनारपरसँ पानि आनऽ चल गेलि। एही बीच ओ महफाक ओहार कनेक हटा देलथिन आ भरि बाकुट अड़ाँची दैत कहलनि जे जी फरिएनाइ एहिसँ ठीक भऽ जायत। आ एना कानी नहि ने ।

–हय बहिना हय, उमादाइ मारि कहूँ भौजी-भौजी करैत छथिन । हुनका हाथमे जँ चिट्ठी पड़ि जयतनि तँ ओ सभकेँ पढ़ि कऽ सुना देथिन आ तोरा पाहुनकेँ हाथमे दऽ देथिन आ तोँ अपना पाहुनकेँ तँ नीक जकाँ चिन्हिते छहुन जे ओ केहन लोक छथि !

**–तोरे बहिना**

**4 [ सासुरसँ ]**

**हय बहिना !**

तोरा मोन होयतह जे पहिल बेर तोहर पाहुन अपना ओहि ठाम आयल रहथुन तँ परिछनिमे तोँ गौने रहक जे 'पुरुखक छतिया कठोर सारी दुनियाँमे' मुदा हमरा होइत अछि पुरुखसँ बेसी कठोर छाती मौगिएक होइत छैक । एहि गीतक बनौनिहार हमरा भेटैत तँ हम ओकरा किछु कहितिऐक । हय, सिजनियाँ कोनो समाद नहि कहने होयतह, मुदा तोहर विवेक केहन छह जे कोइली जकाँ कुहकैत अपन बहिनाक खोजो-पुछारी नहि करैत छह। हय, ओहि दिन महफामे बैसलि सोचैत रही जे हमर बहिना हमरा लेल आकुल होयत, मुदा तोरा लेल धन्न सन ! हे, फेर नेहोरा करैत छियह जे चारियो अच्छर तँ लीखह ।

हय बहिना ! ओहि दिन जे जी फरियाइत छल आ तोहर पाहुन जे अड़ाँची देलनि से हम रखने छी । गामपरसँ क्यो लोक औतैक तँ पठबा देबह । तोँ हमरासँ सत्त करौने छलीह ने, जे पाहुन हाथक पहिल वस्तु जे भेटतह ताहिमे हमरो हिस्सा दिहह । तँ पहिल

वस्तु भेटल अड़ाँची । हँ, ओहि दिनुक आरो गप्प तँ लिखबे ने कयलियह । एहि गाममे पहुँचबासँ पहिनहि कहरिया सभ महफा राखि देलकैक आ हमरासँ पनिपिआइ माङऽ लागल । हम तखन ओहि ठाम की दितिऐक ? हम तँ बड़ झंझटिमे पड़लहुँ, मुदा सिजनियाँ कहलक जे 'बच्चीदाइ ! अहाँक खोँइछामे माय अठन्नी राखि देने छलीह । तकियौक तँ ।'

हय, हमरा की कनबा-खिजबामे कोनो सोह रहय जे माय की दैत अछि आ की कहैत अछि ? सिजनियाँ जखन कहलक तखन अख्यास कयलहुँ तँ मोन पड़ल जे माय गोसाउनिक घरसँ बाहर होइत काल हमरा किछु देखा कऽ खोँइछामे धऽ देलक आ किछु कहलक । खोँइछाबला दूभि धानमे गोजियाड़ि कऽ देखलिऐक तँ चानीबला टाकाक संग अठन्नी सेहो भेटल । ओ हम सिजनियाँकेँ दऽकऽ जान छोड़ौलहुँ । सिजनियाँ हमरा नहुएँसँ कहलक जे बच्चीदाइ, आब अहाँक सासुर आबि गेल। अहाँ अपने बुझनुक छी, तैयो कहि दैत छी, देह समेटि कऽ बैसब ।

कहैत छियह बहिना, हमरा तँ अदंक पैसि गेल । हड़कम्प होमऽ लागल । केराक भालरि जकाँ छाती कापऽ लागल । सौंसे देह घामे-पसेनेँ नहा गेल । गीतमे गबैत छैक जे 'रोय रोय कजरा दहाय गेल ना, अदंकहि सिनुरा मेटाय गेल ना' से एहने ठाम ने होइत होयतैक ? होइत छल जे केहन लोकक बीचमे जाइत छी ? की कहत, की नहि ? सोचिते रही कि कहरिया सभ हुमचि कऽ महफा उठा देलकैक । मोने-मोन भगवतीकेँ गोहराबऽ लगलहुँ जे हे भगवतीमाता ! जँ एहि संकटसँ प्राण बाँचत तँ अहाँकेँ सीनुर-टिकुली चढ़ायब । एतबेमे घोल होइत सुनलिऐक जे 'महफा आबि गेलैक... महफा आबि गेलैक' । एके बेर टहंकारसँ गीत उठलैक । हय बहिना, आर जे कहह, मुदा ओ भास बड़ सुन्नर छलैक । हम तँ ओ भास ठेकना लेलहुँ अछि । तोरासँ भेंट होयत तँ तोरो अभ्यास करा देबह ।

सिजनियाँ महफामे मुँह सटा कऽ फुसुर-फुसुर कहलक जे 'दाइ ! आब दुरुक्खा लग आबि गेलहुँ, आँचर ई सभ सरिया लियऽ । हाथ-पयर एकोरत्ती उघार ने रहय ।' तखन जे हमर हाल भेल से तँ भेटहि कहबह । कहरिया महफा कान्हेपर रखने छलैक । भात आ गोबरक मुठड़ासँ परिछल गेलैक से बुझिलिऐक । आरो की-कहाँ भेल होयतैक से नहि बुझलिऐक । हँ, एकटा महजरो होमऽ लगलैक जे गुड़ोंत एखन होयतैक की कोबरमे । बड़ी कालक बाद सभक विचार भेलैक जे पहिने महफेपर गुड़ोंत होइत छलैक, मुदा आब कोबर घरमे होयबाक चलनि भऽ गेलैक ।

हय, ई सभ तँ ठाम-ठामक विधि-बेबहार सभ थिकैक । जते देस तते भेस। एहू लेल एते घोंघाउजि होइक ?... हय बहिना ! एतेक लिखिये कऽ की ? तोहर बज्जर छाती पसिझतह थोड़बे ? हमरा अपने नहि रहि होइत अछि तेँ उपकरि कऽ लिखैत छियह आ तोँ अदरगरि भेलि जाइत छह । जाहि दिन बड़ तामस उठत ताहि दिनसँ तोरा चिट्ठी लिखबासँ सप्पते खा लेब । **–तोरे बहिना**

हय बहिना !

5 [ सासुरसँ ]

हम ऊपर खसि कऽ तोरा लिखैत छियह, मुदा तोँ चुपकी सधने छह । जेना हम तोहर केओ ने होइयह । हय, हमरा ताइञे कोनो अपराध तँ ने भऽ गेलह जे तोँ हमरा तकर डंड दैत छह ? तोँ हमरा भने बिसरि जाह, मुदा हम तोरा कोना बिसरि सकबह ? मुदा जँ तोँ हमरासँ संबंध तोड़िये लेबह तँ हमर कोन सक ? तोहर देल लिफाफ जाबत हमरा लगमे रहत तावत तँ हम लिखिते रहबह, ने तँ तोँही मोने-मोन कहबह जे बहिना हमर सभ लिफाफ पचा लेलक । हम एहन गिल्लूसाहु नहि छी । जखन तोहर सभ लिफाफ सठि जयतह हमरा लगसँ, तखन एकटा अपना दिससँ लिफाफ तोरा पठा कऽ जिनगी भरिक लेल बाजा-भुक्की बन्द कऽ लेब । तोँ एहि ठामक विध-बेबहार दऽ हमरा कहने रहह लिखबा लेल तेँ ई बात सभ लिखैत छियह । आरो अपन मोनक गप्प लिखितियह से तोहर एको रत्ती आस पबितहुँ तखन ने । फेर कहैत छियह, अपन बहिनाकेँ निरसि देबह तँ बड़ पाप होयतह । कमला कातमे भरि छाती पानिमे पैसि कऽ बहिना लगौने छी से की बिसरि गेलह ? हय, पिपरा घाटक त्रिमुहानी परक पिपरक गाछ भासि गेलैक तँ की हमर सभक बहिनपा सेहो छूटि जायत ? हमरा लोकनि पीपरकेँ साक्षी रखने रही ने । पीपर भने नहि रहौक, मुदा ओकर सीर सभ तँ होयतैके । कमसँ कम ओ हलुअइयाक दोकान तँ छैके जाहि ठाम बतासा कीनि कऽ धारमे अपन बहिनपा लगयबाक उछाही चढ़ौना चढ़ौने रही। तोँ हमरा मुँहमे आ हम तोरा मुँहमे बतासा खुआ देने रहियह जे जनम जनम धरि हमर सभक संबंध मिट्ठ रहत । से आन जनमक गप्प तँ चूल्हिक पाछाँ जाओ, एही जनममे हम तोरा लेल तीत भऽ गेलियह ।

एहि ठाम जँ तोहर पाहुन नहि रहितथुन तँ हमर दिन-राति बीतब पहाड़े भऽ जाइत। भरि दिन तोरापर, माय पर, भौजीपर सुरता लागल रहैत अछि । आब आशा नहि अछि जे फेर ओ नगर देखि सकबैक हय । एहि जिनगीमे फेर तोरासँ भेंट होयत से भरोस नहि अछि।

अपने मोनक कथा लिखबामे ओझरा गेलहुँ । दुरागमन दिनुक गप्प तँ बिसरिये गेलियह । ओहि दिन परिछनि भेलाक बाद कहरिया सभ अड़ि गेलैक जे महफा धरतीपर रखबे ने करब । ओ सभ हल्ला करऽ लगलैक जे पहिने बँसधराइ दऽ लियऽ । बूझि पड़ल जेना गितगाइनि सभ कोनो बातक तिरेजन करैत छथिन । तोहर पाहुन महफा लग ठाढ़ भेल कछमछाइत छलथुन आ हम भगवतीकेँ गोहरबैत छलहुँ जे कहरिया सभ धरती पर महफा रखबे ने करौ । धरतीपर रखने तँ हमरा उतरइये पड़त । मुदा सभ बात भगवती नहि सुनैत छथिन । से कहरिया बँसधराइ आ निछाउर लऽ कऽ महफा रखलकैक । हमरा उतरैये पड़ल । हमरा भेल जे धरतीपर पयर रखैत देरी खसि पड़ब । कोना उतरब ? कोना चलब ? लोक की कहत ? मुदा हमरा भरसाहा भेटल, सिजनिया अपनेसँ हमर देह धऽ उतारलक आ देहसँ सटि गेलि । फेर क्यो दोसरि जनी पाछाँसँ हमर दुनू बाँहि धऽ लेलनि आ तोरा पाहुनक हाथ धरा देलनि । ई दोसरि जनी उग्रतारा दाइ छलीह, जनिका हम बड़की दाइ कहैत छियनि । हुनकर हमर डेन धरबाक ढंगेँ तेहन

छलनि जे बूझि पड़ल जे हमर माये हमरा धयने अछि। आ हय, तोँ हँसिहह नहि, आ ने ककरो कहिहक ने तँ लोक खिस्सा करत।

–तोहर पाहुन हमर हाथ धयलनि आकि हम कसि कऽ हुनकर आङुर पकड़लहुँ–एहन सन जेना छूटि ने जाय । तोरा मोन होयतह जे अपना ओहि ठाम परिछन कालमे कोना ओ आङुर छोड़ि दैत छलाह ! आ हमहूँ हाथकेँ ढील कऽ कऽ आङुर छोड़ा लैत छलहुँ । मुदा एहि ठाम दुनू गोटामेसँ केओ तेना नहि कयलहुँ ।

हय बहिना ! अजगुत बात तँ ई ने जे हुनक हाथ छुबिते देरी हमर सभ डर पड़ा गेल । बूझि पड़ल जेना अपने घरमे आबि गेलहुँ । ओना तोँहूँ कलजुगाहि कहबह आ जे सुनत सेहो कहत । मुदा सत्त पूछह तँ ईहो तँ अपने घर थिकैक ने । हमर जनम एहि ठाम नहि भेल, मुदा तोहर पाहुन तँ एही ठामक छथुन। जँ ओ हमर छथि तँ हुनकर घरो तँ हमरे घर थिक ने ! –तोरा हमरे सप्पत, ई बात सभ अनका कानमे नहि दिहक । **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !**

**6 [ सासुरसँ ]**

ओना तँ कहैत छैक जे बियाहसँ बिध भारी । मुदा अपना सभक ओहि ठामक बिधोसभ बड़ पियरगर होइत छैक । ओहि दिन जे महफापरसँ उतरलहुँ, कि तखने एक जनी जोरसँ बड़कीदाइकेँ कहलथिन जे 'हय उग्रतारा, दुरगमनिआ कनिआ घरक लछमी होइत छथि, लछमी । ओ धरतीपर कोना चलतीह ! तोरा लोकनि केहन बताहि छह जे धान-डाला ओरिया कऽ नहि रखलह, आब पयरेँ परीछि कऽ लछमीकेँ घर लऽ जाह ।'

ई गप्प सुनिते चारू कात जे कचबच होइत छलैक से सभ एके बेर सकदम भऽ गेलैक । एकटा दोसर गोटे टोक देलथिन जे 'उमाक मायकेँ बूझल नहि छलनि ? आन आङनमे बैह ओरिया-पोरिया दैत छथिन ।' तावतमे हमर सासु कहलथिन जे 'अय, सोहे ने रहलैक, डाला तँ आनि कऽ राखल छैक । लाबह ने हय ऊमा !!'

उमादाइ दौड़ि कऽ दू टा डाला अनलथिन । ओहिमे दूबि-धान आ पान राखल गेलैक । ओहीपर पयर धऽ कऽ हम घर गेलहुँ । आगाँ तोहर पाहुन आ पाछाँ हम नहुँएँ नहुँएँ अगिला डालापर पयर दी तावत पछिला डाला आगू कऽ राखि देल जाइक । ई देखि कऽ हँसियो लागल आ तामसो होअय ।

हय, गीत जे गाओल जाइत छलैक से कखनो-कखनो कऽ भास भसिया जाइत छलैक, से होइत छल जे हमहू संग दऽ कऽ सम्हारि दिऐक । एक बेर तँ ठोरो पट-पटायल, मुदा चेतलहुँ अपनाकेँ । एक बेर तँ गितगाइनि सभपर बड़ तामस भेल जे भासक अभ्यास नहि छनि तँ ओकरा गाबि कऽ एना दूरि किएक करैत छथिन ?

चौकठि लग आबि कऽ बाटे छेका गेल । उमादाइ देहरि-छेकाइ लेल ठाढ़ि। तोहर पाहुन हुनका हाथमे टाका देलथिन, मुदा ओ जिद ठनने जे 'जा धरि भौजी हमरा देहरि-छेकाइ नहि देतीह ताधरि हम नहि मानबनि ।' आब सभ चारू कातसँ हमरा कहय

जे 'कनियाँ, ननदिकेँ इनाम-बकसीस दियौक ।'

हम की करितहुँ । तोहर पाहुनक आङुर जतलियनि, मुदा एकदमे ने अनठा देलनि ! तावतेमे एक जनी कहलथिन 'अय उमादाइ ! एना उमतायलि किएक छी ? कनियाँसँ मङैत छियनि तँ ओ अपन एक टा भाइ इनाममे दऽ देतीह । मुदा तकर बेर तँ ई नहि थिकैक ।'

उमादाइ खौंझाइत बजलीह– देखि लियऽ भौजी, हम अहाँकेँ नहि टोकैत छी । ओ जे भाइ हमरा देतीह से अहीं लऽ ने लियऽ ।' ओ जनी फेर कहलथिन– हमरा आब कोन बेगरता अछि ? बेगरता अछि अहाँकेँ ।' फेर ओ हमरा कहलनि– अय देयादनी ! एकटा नीक दिलहगर भाइ हमरा उमाकेँ दऽ ने दियौन ।' एकटा तेसर जनी टीप देलथिन– बड़ जल्दी देयादनी बना लेलहुँ अय !'

एहिपर खूब जोरसँ हहारो पड़ि गेलैक । जे जनी देयादनी बनौलनि से तोरा पाहुनकेँ मुँहमे ठुनका मारैत कहलथिन जे हय मनसा ! बहीनकेँ हँटैत किएक ने छेँ ?'

कोनो तरहेँ उमादाइ बाट छोड़लनि । तोहर पाहुन तँ चुपचाप ठाढ़ छलथुन । अपना गामपर देहरि-छेकाइ बेरमे केहन फटर-फटर बजैत छलथुन ? से एहि ठाम आबि कऽ एकदम बमभोलानाथ भऽ गेलाह । एको बेर बजिते ने रहथि । ओ देयादनी तोरा पाहुनकेँ कहलथिन– हय मनसा ! सत-सत बाज जे सासुरमे की सभ भेटलौक । निकाल जेबीमेसँ ।' तोहर पाहुन कहलथिन जे– जे किछु भेटल से पाछूमे अछि ।'

'खेलाड़ नहि तन ।' फेर ओ देयादनी हमरा कहलनि– अय देयादनी ! एहि मनसाकेँ अहाँ सोझ करब ।'

हय बहिना ! निहुरल-निहुरल हमर डाँड़ आ गरदनि ऐँठि गेल । होइत छल जे एक बेर ठाढ़ि भऽ कऽ डाँड़ सोझ करितहुँ । मुदा से औसर कतऽसँ भेटैत ? मुदा हँ, तकरा बाद बिध-बाधमे थोड़ेक फुर्त्ती भेलैक । सीरामे गोड़ लागि कऽ कोबर-घर गेलहुँ । ओहि ठाम गुड़ोँत भेल । पहिने सासु हमरा मुँहमे गूड़ धऽ देलनि । तखने एक गोटाक बोल सुनलिऐक– अय बूढ़ी ! मोनसँ पुतोहुकेँ गूड़ खुआउ, जिनगी भरि मिट्ठ बनलि रहतीह ।' तकरा बाद तँ तमासा भऽ गेल । प्रायः घरमे जे केओ रहथि, हमरा मुँहमे गूड़ सटा देथि आ एक टा ढेप हमरा हाथमे धऽ कऽ हमरासँ माङि लेथि । पाछाँ तँ मोन अकच्छ भऽ गेल । तोहर पाहुन तँ ओहि ठाम बैसल कछमछ करैत रहथुन । हमर विधकरी जे छलीह से कहलथिन जे बौआकेँ अनेरे किएक बैसौने छियनि । हुनकासँ मुँहदेखाइ देआ ने देथुन ।

ओ देयादनी फेर टिपलथिन– से की कनियाँक मुँह देखने नहि छथिन ? आ रातिमे तँ फेर देखबे करथिन । मनसासँ टाका लऽ लियऽ आ मुँह नहि देखऽ दियऽ ।'

उग्रतारादाइ, कहलथिन– तँ की अहींक मुँह देखि कऽ बौआ सन्तोख करत ?' ओ देयादनी बजलीह– हमर किएक, अहाँ सभ तँ छियनिहेँ ।' एही महजरोक बीचमे तोहर

पाहुन मुँहदेखाइ दऽ कऽ देह झाड़ि कऽ पड़यलाह ।

हय बहिना ! आब एखन हाथ दुखा गेल । माथो भारी लगैत अछि । पलखति भेटत तँ फेर कहियो लिखबह । तोँहूँ चिट्ठी लिखह से तँ आब हम आग्रह नहियेँ करबह ।

**–तोरे बहिना**

**7 [ सासुरसँ ]**

**हय बहिना !**

ओहि दिन बिध-बाधक जे झमेल देखलिऐक से की कहियह ? भेल जे संसार भरिक जोग-टोन सभ आइये पूर भऽ जयतैक । मोनमे खौंझैनी उठय, तामस होअय । मुदा फेर सोचलहुँ जे ईहो सभ तँ जिनगीमे एके बेर ने होइत छैक ! जँ बेर-बेर होइत रहितैक तँ एतेक बिध करब पार लगितैक ? से ओहि दिन चाउर भरल कोठीमे हाथ देलिऐक । हमर विधकरी कहलनि जे ओहिमे की छैक से ताकि कऽ बहार कऽ लियऽ । पहिने तँ भेल जे ओहिना ठकैत छथि तँ हम अपन हाथ समेटनहि रहलहुँ । मुदा विधकरी हमर हाथ पकड़ि कऽ ओहिमे धऽ देलनि । हम आङुरसँ गोजि कऽ देखलिऐक तँ दू टा चानीबला टाका अभरल । हमर सासु कहलथिन जे हमर दुरागमन भेल छल तँ साते बरखक रही । हमर ननदि हमरा कोरमे उठा कऽ कोठीमे हाथ दियौने रहथि ।'

एहिपर हमर ओ देयादनी कहलथिन जे– तँ उठाबथु ने कोर कऽ एहि पुतोहुकेँ । ने तँ उग्रतारादाइ आ उमा दाइ कतऽ गेली ?

हमर बिधकरी कहलथिन जे अय सादीपुरवाली ! अहाँ उमाकेँ सदिखन एना किएक लूझैत रहैत छिऐक ?' ओ देयादनी कहलथिन– तँ छोड़ि देबनि कथी साती ।

हय बहिना ! राति बहुत बीति गेल छलैक आ ई सभ लटारहम खतम करबाक नामे ने लैत छलीह । फेर लोढ़ी-सिलौट आनल गेल । एक गैँठी हड़दि दऽ कऽ कहलनि जे एके हाथेँ एकरा तोड़ू । हम कनी थम्हि कऽ ओकरा दू तीन बेर नहूसँ थकुचलिऐक । एहिपर एक जनी बजलीह– कनियाँ तँ दुधकट्टू छथि । दोसर बजलीह– हिनकर माये रोगाहि छनि । तेसर बजलीह– एक बापक बेटी नहि छथि । बिधकरी बजलीह– हय, एना नेनाकेँ नंगो-चंगो नहि करैत जाउ ।' फेर हमरा कहलनि– कनियाँ ! ई सभ सुनैत नीक लगैत अछि ? जल्दीसँ हरदि तोड़ू ने ।

फेर एक जनी बजलीह– कतेक मायक दूध पीने छी से एहीसँ पता चलत ।

दोसर जनी बजलीह– एक बापक बेटी छी तँ एक हाथे एक चोटमे तोड़ू ।

हमरा बड़ पित्त उठल । ई सभ हमरा की बुझैत छथि ? हमरा माय-बापकेँ गरिऔने छथि । हम समधानि कऽ लोढ़ीसँ हड़दि पर चोट देलिएक, ओ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ गेलैक । बस एक गोटे बाजि उठलीह– गाय माय ! कनियाँ बड़ि जब्बरि छौक !'

हय बहिना, ई तँ ने ठीके राजी ने बटैए राजी । कयलहुँ तँ गेलहुँ, नहि कयलहुँ

तँ गेलहुँ । एतबेमे एकटा पातिल आगाँमे पड़ल । ढाकनसँ मूनल छलैक । फेर वैह हाल। एक हाथेँ ओकरा खोलू । गहूमक चिक्कससँ मूनल ओ ढाकन एक हाथेँ कोना फूजैत ? हय बहिना ! कन्नू बौआक दुरागमनमे तोँ हमरा हँसी कयने छलीह जे– बहिना ! सभ किछु सिखने जाह, बेर पर काज देतह ।' तँ हम तोरा ठुनका लगा देने रहियह । मुदा कहने तँ रहह उचिते । से ओहि दिन जँ तोरा बातकेँ अख्यासने नहि रहितहुँ तँ एतऽ हमरो वैह हाल होइत जे कन्नू बौआक कनियाँकेँ भेलैक । हय, मोन नहि छह जे एक हाथेँ पातिल फोलऽ लगलैक तँ पातिल कोना गुड़ुकि गेलैक ? हम मुदा चेतलहुँ । पातिल लगमे देलक तँ छुबे ने कयलहुँ पहिने । जखन बड़ कहल गेल आ पातिल एकदम लगमे ठेहुन लग आयल तखन हम चुपचाप सतर्कीसँ ठेहुन ओहिमे अड़ा देलहुँ आ पातिलक मुँहमे सटल ढाकनकेँ उनारि देलिऐक। फेर हहारो पड़लैक । एक गोटे फेर बजलीह– दाइ, कनियाँ बड़ि चतुरी छथि । देखलियनि बुधियारी ! सभ सीखि-पढ़ि कऽ आयलि छथि। हम तँ फक्क दऽ निसाँस छोड़लहुँ । ओहिमे अहिबक फड़ छलैक । पाँच टा अहिबाती पाँच मुट्ठी हमरा देलनि आ हमहूँ पाँच गोटेकेँ पाँच-पाँच मुट्ठी देलियनि।

बिध सभक तँ एक अध्याय लागल । ई सोचि कऽ मोन थोड़ेक हल्लुक भऽ गेल। मुदा कहाँ रे बा ! एतबेसँ जानक छुटानि होमऽ बला नहि । मुँहदेखाइ होयब तँ बाँकिए छल । से सुनैत देरी फेर जेना अदंक लऽ लेलक । सिजनियाँ आ उग्रतारादाइ दुनू गोटे दुनू पाँजरमे सटि कऽ बैसलि छलीह, सैह सुकुर छल । पियास से लागि गेल छल । ठोर एकदम सुखा गेल छल । जँ एक लोटा पानि तखन भेटैत तँ घटोसि जैतिऐक । आरो की सभ भेल से तँ आब एखन नहि, फेर दोसर बेर । चिन्तामे डूबलि तोहर-**बहिना**

**हय बहिना !** **8 [ सासुरसँ ]**

मुँहदेखाइक गप्प की लिखियह ? गाम ने दू, मुदा लोक एके, गप्प एके ! तोहूँ तँ सासुर गेले छलीह। सभ किछु तँ बुझले होयतह । से सिजनियाँ हमरा बाम भागमे बैसल छलि । ओ हमर मरोत उठा कऽ हमर मुँह देखबैक । मुँह देखनिहारि देखथि आ हाथमे टाका धऽ देथि । हम तँ आँखि मुनने रही, मुदा ई बूझि कऽ जे लोक हमरा देखि रहल अछि, कोना दन लागय । मोनमे डऽर सेहो पैसल छल । छाती हाल-काप करैत छल जे एहि ठामक लोककेँ केहन लगबैक, केहन नहि ! सभसँ बेसी हमरा अपन सासुक चिन्ता छल । ओ की सोचैत होयतीह ? हय, तोरा पाहुनकेँ हम नीक लगैत छियनि की नहि से तँ हुनके मोन जनैत होयतनि। मुदा एक दिन हुनका ओहिना हम कहने रहियनि जे अहाँक मोन जोग तँ हम नहियेँ छी ।' ओ कहने रहथि जे 'की माने एकर ?'

हम कहने छलियनि जे अहाँक मोन जोग लोक नहि भेटल । आन ठाम बियाह होइत तँ नीक लोक, नीक घर भेटैत ।' ओ बीचमे टोकि देने छलाह जे हमरा की अहाँकेँ?

हम कहलियनि जे अहाँकेँ । खूब गोर-नार कनियाँ भेटैत । खूब पढ़लि । खूब

गूनलि । खूब...

ओ फेर कहने छलाह जे हमर की मोन अछि से अहाँ बुझैत छी ?'

हम कहने छलियनि– नहि ।

एहि पर ओ कहने छलाह जे– तखन कोना बुझैत छिऐक जे हमरा मोन जोग वस्तु भेटल की नहि ? जँ नहि भेटल तँ की ओकरा अहाँ बदलि कऽ पूर कऽ देब ?'

हम गटर-गटर सुनैत रहलहुँ । हुनका मुँह दिस तकबाक साहसो ने भेल छल। ओ कनेक तमसायल जकाँ कहने छलाह जे– देखू, आबसँ एहन बात बाजब तँ से नीक बात नहि । हम अयबो ने करब एतऽ ।' ओहि राति ओ बड़ी काल धरि चुप्पे रहलाह । हमहूँ चुप्पे रहलहुँ । ओ बड़ी कालक बाद एकदम मधुर बोलमे कहलनि– अहाँकेँ हमर बात बड़ अधलाह लागल ?' हम खाली 'उहूँ' कहि कऽ रहि गेलहुँ ।

ओ एहिपर बाजल छलाह– अधलाह तँ अवश्ये लागल होयत, मुदा बात नहि बुझैत छिऐक जे बियाह अपना हाथक बात नहि थिकैक । भगवान् जकरा जतऽ चाहैत छथिन तकरा ततऽ पठा दैत दथिन। अहाँसँ बियाह नहि होइत आ आने ठाम होइत तँ एकदम अधलाहिए कनियाँ भेटि जाइत तँ ? जँ गोर-नार चिक्कन चुनमुन रहैत आ बौकी-बताहि रहैत तँ ? नीक स्वभावक नहि रहैत तखन ? अहींकेँ आन ठाम बियाह होइत तँ हमरासँ नीके घर-वर भेटैत सेहो तँ संभव छल ?'

हमरा तँ मोनमे भेल छल जे कहियनि जे– अहाँसँ नीक वर-घर हमरा नहि चाही। एहन हमरा आन ठाम कतऽ भेटैत ? मुदा से हम कहलियनि नहि । मुदा हय बहिना ! सभ लोक तोहरे पाहुन सन नहि ने होइत छैक । जतेक रंग लोक, ततेक रंग गप्प । से हमरो मुँह देखि कऽ तहिना भेलैक । एक टा बात तोरा मोन छह ने ? माय एकटा सुजनी सीबैत रहैक । कतेक सिनेहसँ ओकरा छनने छलैक ? हमरा आङन जे बूलऽ अबैक तकरा सभकेँ हमर माय ओ सुजनी देखबैक । आधा सीयल भऽ गेल रहैक तँ पार्वतीमौसी आयलि छलथिन। ओ देखि कऽ हमरा मायकेँ कहलथिन जे एहन सुजनीमे ई सीयनि नीक नहि लगैत छैक आ आब एकर चलनि उठाब भऽ गेलैक । नव रंगक सीयनि दहक।'

हमर माय पार्वतीमौसीक कहलामपर ओहि सीयनिकेँ उघारि देलकैक आ हुनके देखाओल सीयनि देलकैक । मुदा थोड़ेक दिनुक बाद सुबुधमनि बाबी अयलथिन तँ ओ पहिले सीयनिक परसंसा करऽ लगलथिन आ पार्वतीमौसीक सीयनिकेँ छनकटाह लगैत छैक से कहलथिन । एहि पर माय फेर ओकरा उघारि कऽ पहिले जकाँ सीबि देलकैक। ओहिमे मगजी लागय की नहि, लागय तँ केहन, से जतेक लोक अबैक ततेक रंग लगाबऽ कहैक । ओही अरसट्ठेँ ओ सुजनी कतेक दिन धरि पड़ले रहलैक । ओ तँ एहि बेर ओछाओनक खगता भेलैक तँ विन मगजीएक आधा-छीधा सीयल ओछाओल जाय

लगलैक । सैह कहलियह जे बीस रंगक लोक बीस रंगक बात । एकटा वस्तु एक गोटाकेँ नीक लगतैक तँ दोसराकेँ अधलाह । तँ से भऽ गेल हमर मुँह । आरो लोक की सभ बाजल से फेर लिखबह । **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **9 [ सासुरसँ ]**

मुँहदेखाइ बेरमे हमरा कोन-कोन बोल ने सूनऽ पड़ल । एक जनी हमरा देखि कऽ बजलीह जे आर सभ तँ बड़ बढ़िया, मुदा रंग खूब साफ नहि ।

दोसर जनी कहलथिन जे– तँ की आब बिलैती चाम सन रंग भऽ जयतैक ?

तावतमे तेसर जनी बजलीह– भक् ! कपार दिपली सन छैक । बिलाड़िक सिउँथि सन ।' हमर ओ देयादनी जे रहथि से कहलथिन जे– नहि बूझल रहय तँ नहि बाजी । मौगीक ओछे कपार भागमन्त होइ छैक । से हमर देयादनी खूब भागमन्ति छथि ।

कोनो जनी बजलीह जे कनपट्टाक केश एकदम गालपर चल अबैत छैक । मुदा, दुनू भौंहुक बीच कतेक चिक्कन छैक !

लोकक मिस्स पड़ैत रहैक । तिल रखबाक जगह नहि । गरमसँ हम सीझल जाइत रही । तावतमे सभसँ पाछूसँ केओ जोरसँ बजलीह– गे दाइ सभ ! जँ नहि देखऽ देबेँ तँ बजबो कर जे कनियाँ केहन छथुन ?' हमर ओ देयादनी टुप दऽ कहलथिन– किएक ? कौआ सन कारी, बगुला सन उज्जर । जेहन लोक होइत छैक तेहने छथिन ।

एहि पर ओ कहलथिन– अय ! अहाँ हमरा एना लुलकारैत छी किएक ?

ओ देयादनी कहलथिन– एहिमे लुलकारब की भेलैक ! खूब कारी-कारी धनगर नमछड़ केश । चिक्कन चाकन मुँह, भरल-भरल देह । नाम-नाम आङुर । कुम्मल तरहत्थी। कनियाँ बऽड़ सुन्नरि हे !! भेल ?

सौंसे घरमे हहारो पड़ि गेलैक । उमादाइ अइलीह मुँह देखबाक लेल । ओ आब ठुनकऽ लगलीह– भौजी, हमरासँ बाजथु । भौजी हमरासँ बाजथु ।' हमर मुँह अपने हाथेँ उघारि देलनि आ कहलनि– अय भौजी ! हमरासँ बाजू ने । हमर नाँओ थिक उमा । ओ छथि हमर भैया । अहाँ छी हमर भौजी । एक बेर बाजू ने ?' ओ सादीपुरवाली देयादनी कहलथिन– अहूँ हिनकर भौजी भऽ जैयनु तँ इहो बाजऽ लगतीह ।

एहि पर उमादाइ कहलथिन– देखि लियऽ भौजी ! बेजाय बात भऽ जायत। हम बिच्छल-बिच्छल गारि पढ़ब, से कहि दैत छी । हमरा नहि नीक लगैत अछि ।

सादीपुरवाली देयादनी बजलीह– कनियाँक मुँह ओहिना देखैत छैक, की ओहिमे दानो-दछिना लगैत छैक ?

उग्रतारादाइ कहलथिन जे– अपन भाइ तँ दैए देलियनि तँ आब की चाहियनि ? जँ

चाहती तँ एकटा बुढ़बा बाप तकबा देबनि ।' फेर हहारो पड़ल ।

उमादाइ फेर बजलीह– बेस, नहि बाजब तँ एक बेर आँखिए ताकि दियऽ ।' सभ एके बेर बाजि उठल– हँहँ, आँखि तकबामे की छैक ? कनियाँ एक बेर ताकि देथुन । उमादाइक सेहन्ता छनि तँ...।' उग्रतारादाइ कहलथिन– हँ ए कनियाँ, उमाकेँ बड़ लौलि छैक तँ एक बेर ताकि ने दिऔक ? की होयतैक ?

हय बहिना ! चारू कातसँ ततेक ने भेलैक 'ताकि दिऔक ताकि दिऔक' जे हमरो भेल जे एक बेर पऽल उठा कऽ ताकिए देबैक तँ की होयतैक ? हम तँ ताकियो दितिऐक, मुदा ततबेमे सिजनियाँ खूब जोरसँ हमर पाँखुर दाबि देलक । आ कि हम सचेत भऽ गेलहुँ– गय माय ! आइ जँ ताकि दितिऐक...

उमादाइ फेर बजलीह– बेस, नहि ताकब तँ एक बेर हँसबो करू ने ।' हुनके संगी केओ छलथिन से बजलीह– कनियाँक मुँह कनन मूँह छनि हय। ओ नहि हँसथुन ।

हय बहिना, तोँही कहह जे हम कननमूँह छी ? तोँही हमरा कय बेर कहने छह जे 'हय बहिना, तोँ बड़ हँसैत छह । नहियोँ हँसैत छह तँ बूझि पड़ैत छैक जे हँसिते रहैत छह ।'

उमादाइक कोनो संगी बजलीह– नहि अय, कनिआ नेनमूँह आ ननमूँह छथि।

हमर ओ देयादनी कहलथिन– से अहूँ सभकेँ जखन सासुर जाय पड़त तखन बुझबैक ।' उमादाइक ओ संगी बजलीह– किएक जाय पड़त ? नहि जायब ।

सादीपुरवाली तुरन्ते जबाब देलथिन– तँ की एहि ठाम भाइ संग सगाइ करब ?

ओ एहि पर तमसा कऽ कहलथिन– अय सादीपुरवाली, हम लिगरो-बिगरो कऽ देब ।' तावतमे उमादाइ फुसुर-फुसुर कहलनि-सत्ते अहाँ कननमुहँ छी अय भौजी ? उहूँ भौंहुपर हँसी उतरल, आँखि पर, आँखिपरसँ नाकपर– नाकपरसँ उतरल हँसी, उतरल हँसी, चल आयल ठोरपर, ठोरपर, ठोरपर हँसी आयल, हँसी आयल...

आ सत्ते हमरा हँसी आबिए गेल । उमादाइ 'वैह हँसी...' कहि कऽ कूदि उठलीह आ हमरा ततेक लाज भेल जे हम मूड़ी गाड़ि लेलहुँ ।

बिधकरी कहलथिन– हय उमा ! तोहर तँ भाउजि थिकथुन, सभ दिन देखबहुन। आनकेँ देखऽ दहक । आब बड़ राति बितलैक ।' हय बहिना ! तखन जा कऽ हुनका सभकेँ बूझि पड़लनि जे राति बहुत बितलैक अछि ! एक गोटे जे देखलनि तेँ बजलीह– नकार-सिकार तँ बड़ बढ़ियाँ, खाली रंगे कने...' हमर सासु कहलथिन– रंग लऽ कऽ की होयतैक ? रंग धो-धो कऽ की लोक चाटत ? काम प्यारा कि चाम प्यारा ? नीक लोक चाही । से असिरबाद दैत जाथुन, नीक गति-मति होइनि । वऽर-कनियाँक भोग होउक ।

सादीपुरवाली कहलथिन– बऽहुबलाकेँ जखन पसिन्न छथिन तँ हिनका सभकेँ नापसिन्ने कयने की होयतनि ? से हमर देयादनी हमरा देयोरक मोन मोहि लेने छथि । की

अय देयादनी ?' आ ओ हमरा पाँजरमे आङुर गोबि देलनि । एक जनी आरो बजलीह– कनियाँ अलगी–बलगी नहि छथि । बड़ सज्जनि। देखने नहि रहिऐक सोभाक भाउजिकेँ? एतबे कालमे कतेक उकस–पाकस कयने रहैक ? आ हिनकर एक बेर तऽनो ने डोललनि अछि । कोनो नव कनियाँक चालि–प्रकृति कोबरेमे चिन्हा जाइत छैक ।

बाप रे ! हय बहिना, एतेक लोक बकध्यान लगौने छैक से हमरा नहि बूझल छल। मुदा हय, डाँड़ तँ दुखाइत–दुखाइत पाथर भऽ गेल छल । पयरमे झुनझुनी भरि गेल छल से फराक । कोना कऽ हम भगवतीकेँ गोहरा कऽ ओ समय खेपलहुँ से की कहियह ? मौगी होयबाक ई सभ डंड थिकैक । हय बहिना ! फेर दोसर बेर लिखबह– **तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **10 [ सासुरसँ ]**

हमरा तँ भरोस नहि होइत छल जे ई समय बीतत । रंग–विरंगक लोक, रंग–विरंगक गप्प । हम ककरो बड़ अधलाहि लगलिऐक, ककरो बड़ सुन्नरि । जैह वस्तु एक गोटेकेँ नीक लगलैक, सैह दोसर गोटेकेँ अधलाह । हम मोने–मोने भगवत्तीमाताकेँ गोहरबैत रहलहुँ। हय बहिना ! तोरा पाहुनकेँ हम ई गप्प–सप्प कहने छलियनि तँ ओ कहलनि जे 'एहिना होइत छैक।' हम कहलियनि जे– जेना आन लोक सभकेँ हम नहि नीक लगलिऐक तहिना तँ अहूँकेँ नहि नीक लगैत होयब । मुदा अहाँक कपारपर पड़ल छी तँ लाजे–पच्छेँ निमाहि रहल छी ।' ओ तमतमा गेलाह जेना । बजलाह– एना अलर–बलर बाजब तँ हम बाजब छोड़ि देब ।'

हम हुनकर रुखि देखि कऽ सकदम भऽ गेलहुँ । कोनहुना साहस कऽ कहलियनि– अहाँ बहुत तमसा गेलहुँ । सत्ते, हमरा बजबोक लूरि नहि अछि । कोना बाजी, तकरो ढंग नहि ।' हय बहिना ! कहि नहि, किएक आँखि एमदमसँ नोरा गेल छल । सत्ते हय बहिना ! हम बड़ि अबढङाहि छी । छी ने ?' ओ हमरा चोटीकेँ अपना हाथमे लऽ कऽ कहलनि जे– हजार बेर हम कहने छी जे अहाँ हमरा बड़ नीक लगैत छी । बड्ड नीक, मधुओसँ मीठ । मुदा अहाँ छी जे... के बुझाबौ अहाँकेँ... । लोक किछु बजैत अछि तँ बाजऽ दियौक । ओहिसँ अहाँक की बिगड़ैत अछि ?

हमरा कंठ जेना बाझि गल छल, मुदा कोनहुना मद्धिमे कहलियनि– मायकेँ, बड़की दाइकेँ आ आरो लोकनिक मोनमे नहि होयतनि जे... ।

ओ बीचेमे टोकि देलनि– लोककेँ बहुत किछु नीक नहि लगलैक तँ अहाँक बहुत किछु नीको तँ लगलैक ! मोन अछि ने जे बियाह बेरमे हमरा ओहि ठामक लोक की–की ने कहने रहय । हमरा तँ कहने छल जे कनियाँ जोग वऽरे नहि अछि तेँ फिरा दियऽ । बाजू ने, मोन नहि अछि ? तँ कहाँ अहाँक बाबूक मोनमे भेलनि ।

बात तँ छलैक सत्ते । हय बहिना, तोरो तँ मोने होयतह जे तोहर पाहुन एहिपर कतेक तमसा गेल रहथुन ? मोन छह ने जे भैयाकेँ बजा कऽ कहलथिन जे हमरा दलानपर कने

लऽ चलू ?' आ मारि किदन सभ भेलैक । तोहर पाहुन कहलथुन जे हम बियाहे ने करब। आ अन्तमे फूजैत-फूजैत बात फूजल । तँ भैया हँसैत कहने रहथिन आ बरियातियो महक केओ आबि कऽ बुझौने रहथिन जे ई तँ ओहिना हँसी भेल छलैक । एहिना होइत छैक, एहि ले' तमसाइ जुनि ।

से तोहर पाहुन हमरा पुछलनि तँ हमरा जबाब दैत नहि बनल । हम चुप्पे रहलहुँ । ओ कहलनि– हमरा लोक कतेक दुसने छल, की-की ने कहने छल, मुदा हम सहैत रहलहुँ ।

–हँ, आ लोक ईहो तँ कहने छल जे बच्चीदाइ हाथी चढ़ि कऽ गौर पुजने छलि जे एहन वऽर भेटलैक ।' हम कहलियनि ।

–सते की ? अहाँकेँ मोनसँ हम पसिन्न पड़ल रही ? अवस्से मोनमे भेल होयत किछु ने किछु ।' –ओ बजलाह, –'फूसि नहि बाजू । कहू जे हमरा देखि कऽ अहाँक मोन बिधुआ गेल छल ने ?' 'ऊँहुँ ।' हमरा हँसी लागि गेल ।

'झुट्ठी नहितन ।' ओ हमरा पीठपर मुक्का मारबाक लेल उसाहलनि । हुनका हाथ उसाहैत देखि कऽ हमर पीठ ऐंचि गेल । ओ हलुके हाथेँ हमरा मारैत कहलनि– अहाँक मोनमे भेल तँ भेल । हमरा एहिसँ की ?'

हम कहलियनि– नहि, कोबराघरसँ हम लोकके‍ँ की-कहाँ कहैत सुनलिऐ तँ मोन उदास जकाँ अवस्से भऽ गेल छल । हम बहिनाकेँ कहने छलिऐक 'की हय बहिना ?' ओहिपर हमर बहिना डाँटि देलक जे चुप रहह । हम देखि अयलियह ।' हमरा तैयो विश्वास नहि भेल । बहिना कोबराघरक केबाड़ लगा देलकैक आ केबाड़क फाँकसँ देखऽ कहलक । अहाँ तखन दुरुक्खा लग ठाढ़ रही । बहिना हमरा कहलक जे आब चुपचाप बैसल रहह ने तँ केहन दन बात भऽ जयतह ।' ओहि बेरमे बहिनाक डटनाइ कनेक अधलाहे लागल रहय । बहिना हमर डेन पकड़ि कऽ घीचैत कहने छलि जे चलह बैसह, देखऽ लेल सौंसे जिनगी लगमे रहथुन । लोक सभ जे की-कहाँ बजैत छल से सूनि कऽ हमरा तकरा बाद रोख जकाँ लागय जे केहन अछि एहि गामक मौगी सभ । बड़ कुच्चरि सभ । अलगी, उचरिन ।

हय बहिना ! ओ हँसैत बजलाह, जे– धन्न भाग हमर जे देवीजीकेँ हम पसिन्न तँ पड़लियनि ।' हमरा बड़ केहनदन लागल हुनकर ई बात, तामसो भेल । हम कहलियनि– 'देखि लियऽ हमरा 'देवी जी, देवी जी' नहि कहल करू । खाली... ।

'बेस भाइ ! बच्चीदाइकेँ...

हम बीचमे टोकि देलियनि– अहाँकेँ हमरा खौंजाबऽमे कोन रस भेटैत अछि ?' ओ कहलनि– कोनो ने । खाली अहाँ आब ई कहू जे आब तँ ने हमरा गामक लोकपर तमसायलि छी ?' हम कहलियनि– नहि, अहाँ सभ बात बुझा देलहुँ तखन आब किछु ने । अहाँटा हमरा नहि उपेखी, आर संसार बजैत ने रहओ ।' हय बहिना ! हम कोनो अनर्गल तँ नहि ने कहलियनि ? आरो गप्प फेरो लिखबह । **–तोरे बहिना**

मुँहदेखाइक बाद जे सभ भेलैक से की कहियह ? अपना ओहि ठामसँ वऽर-विदाइमे जे वस्तु-जात सभ आयल छलैक तकरा सभ दूसऽ जकाँ लगलैक । वर्तन-वासनकेँ मारि दूसैत छलैक । सँचारक कटोरीकेँ कहैत छलैक जे ई तँ साइकिलक घंटी थिकैक । लोक सभ बाबूक कौचर्य करैत छलनि । कहैत छलैक जे साँठ-राज तँ करैए ने अबैत छैक ककरो ।

गहना-गुड़ियापर से फराके लोक तमसायल बूझि पड़लैक । एकटा बात आरो... हमरा कानमे किछु छल नहि । से लोक देखिते लाबा लोकऽ लागल– जाह, कान कतौ सुन्न रहलैक अछि ? कहू तँ, एहन निसरठ माय-बाप ! कनियाँक कान छुच्छ ?

हय बहिना ! हमरा तँ तामस, गरानि, डऽर सभ जेना एके बेर देहमे पैसि गेल। मोने-मोन सोचैत रही जे कतहु लोक 'कनसुन्नी-कनियाँ' परधाने ने जोड़ि लिअय। हय, कोढ़िलावाली भौजीक गप्प तँ बिसरल नहि होयबह ! दुरागमन भऽ कऽ आयल रहथि तँ कानक भूरमे कोढ़िला रहैनि से देखिते अपना गामक लोक सभ हुनका कोढ़िलावाली कनियाँ नामे धऽ लेलकनि । तीन टा धीया-पुता भेलनि, मुदा ई नाम धरि नहि मेटा सकलनि ।

मुदा हय बहिना ! हम अपन सासुक बड़ गून मानैत रहबनि जिनगी भरि । ओ लगले कहलथिन जे हय लोकनि सभ ! कनपासा तँ सुनलिऐक जे बनल छलैक, मुदा बौएकेँ ओ पसिन्न नहि अयलैक । से ससुर फेर दोसर कऽ बनाबौलथिन । सोनरा बेरपर नहि देलकैक, तेँ ओ बौआक संग कऽ देलथिन।'

ई बात सुनिते एक दाइजनी उड़ि कऽ तोरा पाहुन लग जा माङऽ लगलथिन प्रायः। हमर जी धुक-धक करैत छल जे ओ की उतारा देथिन ! मुदा जानि नहि, कोना फुरि गेलनि जे कहि देलथिन– हमरा पेटीमे राखल छैक, एखन के उधेसतैक ?

मुदा होइत अछि जे की ई बात नहि फुजि जयतैक जे हमर कान सत्तेमे सुन्न अछि। हमरा गहना-गुड़िया कहियो ने नीक लागल से तँ तोँ जनैत छह । नौ मन गहना देह पर लटकौने की लोक सुन्नर भऽ जाइत छैक ! मुदा बेबहार तँ थिकैक ।

एहि गहनाक चर्च हम तोरा पाहुन लग कयने छलियनि । मोन मोन सोचैत रही जे लोकक जनम बेटी भऽ कऽ नहि होउक, आ जे से होइत छैक तँ विधाता ओकरा धनिकक घरमे जनम देथुन । गरीबक बेटी बेटी नहि होइत अछि । तोरा पाहुनसँ जखन एतऽ पहिल बेर भेंट भेल तँ एही बात लऽ कऽ भेल छल जे खूब कानी ।

तोहर पाहुन हमरा कहने छलाह जे– चुप-चाप कानमे तूर-तेल देने सुनैत चलू। थोड़बे दिनमे लोक देब-लेब, गहना-गुड़िया सभ किछु बिसरि जयतैक ओ लोकक सोझाँमे खाली अहीं टा रहबैक । से जेहन अहाँ रहबैक तेहन अहाँक नैहरक निन्दा-प्रशंसा होयत।' हम

कहलियनि– जेहन अहाँ हमरा बना देब तेहन हम बनब । जे-जे कहब सैह करब । मुदा... ।'

–मुदा-तुदा किछु ने ।' ओ हमर आङुरक मट्टर फोड़ैत कहलनि– हमरा घरक लोकके° कोनो रागउपराग नहि छैक, ने रहतैक । मुदा सऽख-सेहन्ता लऽकऽ गामक लोक बजबे करत । हमरा लोकनि सुनिते रहब । ओहि खातिर अमलो नहि पीब ।' तोहर पाहुन केहन मुँहफट्ट जे ई बात दोसर दिन जा कऽ मायके° कहि अयलथिन । माय-आबि कऽ हमरा कहलनि जे गामक आइ-माइक बोल सूनि कऽ मोनमे दुख नहि करी । ई सभ तँ काज-परोजनक सोभा-सुन्नर थिकैक । आइ धरि कोनो वऽरक माय अपन बेटाक वऽर-विदाइक परसंसा कयलकैक अछि ? राजा जनकोके° अवधक लोक दूसि देने छलनि ।'

हय बहिना ! हमर बाकसमे साड़ी सभ कतेक खंड छलैक ! सेहो एहि ठामक लेल थोड़ । हँ, तोरा पाहुनक कपड़ा-लत्ताक बड़ परसंसा । साइकिल देखि कऽ लोक बड़ खुशी । बहिना हय ! कतहु बजिहह नहि तँ एक बात लिखियह । तोरा पाहुनके° घऽड़ी, औंठी, साइकिल आर की कहाँ ने ! जें ओतेक वस्तु छैक तें लोक खुसी छैक । मुदा थोड़ेक आरो खर्च कऽकऽ हमरा कानो लेल बनबा देने रहितथि तँ लोकक एतेक बोल नहि ने सूनऽ पड़ैत ? हुनको सभके° की फुरि गेलनि ? आ कि मोने ने रहलनि ? आ ओ कटोरी सभ कोन ज्ञाने दैत जाइ गेलथिन !

एकटा बात आरो लिखैत छियह, कतहु बजिहह नहि । तोरा हमरे आङ-समाङक सप्पत । रातिमे हमर सासु ओहि कटोरी सभके° नुका कऽ कतहु राखि देलथिन । सिजनियाँ ई देखैत छलैक । ओ हमरा कानमे आबि कऽ कहलक जे अय बच्चीदाइ! समधिन तँ बड़ कोनदन सोभावक लोक लगैत छथि ।' कनीकाल चुपचाप रहि कऽ कहलक जे कटोरी सभ नुका कऽ राखि देलथिन अछि ।'

हमरा सिजनियाँक बोल सूनि कऽ एहि घऽरपर असरधा जकाँ भऽ गेल । मुदा हय, एहन सासुक जँ फूल-अच्छत लऽ कऽ जिनगी भरि पूजा करी तैयो थोड़ । बात की भेलैक से बूझि कऽ तोरो बड़ सिनेह भऽ जयतह । हय, कोठीमेसँ पाँच छौ गोट कटोरा निकालि ओकरा माजि कऽ आ आरो तीन-चारिटा बट्टुक बासन सभ निकालि कऽ राता-राती माजि-धो कऽ पसारि देलथिन ।

दोसर दिन भेने वस्तु जात देखि कऽ लोकक जेना बिचारे बदलि गेलैक । ओकरा भीतरमे की छलैक से हम सभ बुझैत छलिऐक । दोसर दिन सिजनियाँके° ई सभ देखि छगुनता लऽ लेलकैक । ओ हमरा सासुके° एसगरमे पुछलकनि जे समधिन, ई सभ किए कयलथिन ?'

एहिपर हमर सासु उतारा देलथिन– केओ हमरा बेटा-पुतोहुके° खिधांस-कुचेष्टा करत जे नीक वस्तु-जात नहि भेटलैक, से किएक ! चीजे वस्तु देखि कऽ लोकके° सन्तोष होयतैक तँ से देखओ ।' तोँही कहह बहिना, जे एहन सासुक पयर पूजी की नहि ? **–तोरे बहिना**

कनैत-कनैत तँ ओहिना पेट भरि गेल छल, हम खैतहुँ की ? फेर खयबा कालमे महजरो भेल । हमरा आगूमे भरि थारी खीर आनि कऽ देल गेल । हम ओकरा आङुर भोंकि घुसका देलिऐक । लोक सभ चल गेल छलैक । खाली अपना आङनक लोक रहि गेल छलैक । पाहुन-परक सेहो खा लेने छलथिन । भरिया-खबास सभ सेहो खा कऽ सूति रहल छलैक । हमरा बैसल-बैसल औंघी लागि रहल छल जेना।

ठेहुनपर माथ राखि कऽ सोचैत-छगुनैत रही जे मनुक्खक यैह जिनगी थिकैक ! दिनमे अपना गाममे रही आ एखन अनभोआर जग्गहमे छी, जाहि ठामक लोक सभमेसँ ककरो कहियो देखने नहि छलिऐक। खाली एक गोटाकेँ छोड़ि कऽ। से ओ एक गोटा एखन कत्तऽ पतनुकान लेने छथि से नहि कहि। मोन तखन आतुर भऽ उठल छल अपन कोनो चिन्हारकेँ देखबाक लेल । तोहर पाहुन जँ ओहि ठाम अबितथि तँ सत्ते हमरा बड़ भरसाहा होइत । लगमे एकटा छलि सिजनियाँ, से फराके औंघा रहलि छलि । ओहो बेचारी बड़ थाकि गेल छलि ने । एतबेमे बड़कीदाइ थारी आनि कऽ आगाँ राखि देलनि। सिजनियाँ चौंकि कऽ जागि गेल आ हमरा बिट्ठू जकाँ काटि लेलक । मुदा हमरा तँ पहिनहिसँ छातीमे डऽर पैसल छल । से हम तँ सचेत छलहुँ ।

ओहि थारीमे भात छलैक, आर कटोरामे तीमन-तरकारी सभ । हम रहलहुँ एकदम थीर । उग्रतारा दाइ कहलनि जे— कनियाँ ! खाउ ने, लाज नहि करी एहिमे ।

तखने एक टा पीसी छलथिन से बजलथिन जे— हय उग्रतारादाइ, केहन बताहि छह ? ओना कतहु खयबा लेल कहल गेलैक अछि । तोँ चलि आबह आ खबासिनीकेँ कहुन खोआ देथिन । तोरा रहने संकोच होयतनि ।' उग्रतारादाइ बजलीह जे— हम सासुर गेलि रही तँ भरि थारी खीर खयने रही।

— हँ हँ, केहन खयने होयबह से बुझलियह ।' ओ पीसी उतारा देलथिन— सासुरसँ आयलि रहह तँ खऽढ़ सन देहसंग आयलि रहह ।' बड़कीदाइ एहिपर किछु बजलथिन नहि आ चुपे बाहर चलि गेलथिन । सिजनियाँ हमरा कानमे कहलक 'बच्चीदाइ ! भूख नहि लागल अछि ? दुइयो कऽर खा ने लियऽ।' 'भक !' हम कहलिऐक ।

थोड़ेक कालमे ओ पीसी अयलीह आ कहलनि जे— अय कनियाँ ! ई तँ आब अहाँक घर अछि। एहिमे कोन संकोच । जहिना ओहि ठाम माय छथि तेहने माय एहू ठाम छथि ।' हय बहिना ! हम विचारलहुँ जे हुनकर माय तँ कहिया-कतऽ ने मरि गेल होयथिन। तेँ एना होइत छनि । हमर माय केहन अछि से हमही बुझैत छी । एक साँझ नहि खाइत छलहुँ तँ मायक जी-हाथ उड़ि जाइत छलैक । हमर माय फेर हमरे माय थिक। मायक सिनेह दोसरामे कतऽसँ औतैक ? आ सभसँ पैघ बात भेल जे मायक नाम लैते मायक सुरता आबि गेल । भेल जे खूब भोकासी पाड़ि कऽ कानी । हय, हम छगुनैत रही

जे मायक जी हमरेपर टाङल होयतैक । ओकरा एकसर खायल गेल जयतैक आइ !

हय बहिना ! हमरा मोन नहि पड़ैत अछि जे आइ धरि माय बिना हमरा लऽगमे बैसौने खयने होयत । हम सूति रहैत छलहुँ तँ हमरा उठा कऽ खोअबैत छलि । तोरो तँ कैक दिन कहने छलह जे बच्चीदाइक बिना हमरा एको कौर धसबे ने करैत अछि।

पीसी हमरा तखन टोकैत बजलीह– कनियाँ, छगुनैत छी की ? अहाँ जतेक एहि ठाम छगुनब, कानब; ततेक ओहि ठाम मायक छाती फाटत ।'

की हय बहिना ! हमरा मायक छाती बड़ फटैत होयतैक ?

पीसी कहलथिन– अय खबासिनी ! बहुआसिनिकेँ अहीं बोधियनु ने ।

सिजनियाँ बाजलि– सनतोखे ने बन्हैत छथि । रहि-रहि कऽ छाती फटैत छनि। रहि-रहि कऽ माय मोन पड़ैत छथिन ।

पीसी कहलथिन– कखन-कहाँ मुँह ऐंठौने होयतीह ।' ओ हमर देह हँसोथैत कहलनि– एह ! कहू तँ ! देह केहन लारो-बातो भेल छनि !'

सिजनियाँ हमरा कहलक जे– दाइ, पैघ लोकक बात नहि ने काटी । दोख होइत छैक ।' हम तँ बड़ असमंजसमे पड़ि गेलहुँ । बात नहि काटू तँ खाउ । आ भूख अछिए ने । बलहुँ खाउ तँ लोक की कहत जे कनियाँ पेटाहि छैक, खाधुर छैक। मायो कहने रहय जे खयबा-पीबामे संजमसँ रहऽ लेल । हम बात राखक लेल नहुएँसँ आङुर लऽकऽ भात ढाहि कऽ हाथ समेटि लेलहुँ । भऽ गेलैक बातक पालन ।

पीसी उठि कऽ बाहर चल गेलीह । थोड़ेक कालक बाद सिजनियाँकेँ सोर कयलथिन । दुनू गोटामे की-कहाँ गप्प भेलनि । हम खाली सिजनियाकँकेँ कहैत सुनलिऐक– एखन छोड़ि देथुन । खयबाक एको रत्ती खाँहिस नहि छनि ।

उग्रतारादाइ कहलथिन– अय खबासिनि, अहूँ बेबूझेबला गप्प करैत छी । राति कऽ लोक कतहु उपास पड़ल अछि ?' हमर सासु बजलीह– हँ हय, हमर घरक लछमी पहिले-पहिल उपास पड़ि जयतीह से कोना ?'

पीसी बजलीह जे– नहि किछु तँ कमसँ कम दहिए घोरि कऽ पिया दियनु। कनैत-कनैत कंठ सूखि गेल होयतनि, पियासो लागल होयतनि ।'

एतबेमे उमादाइ ओहि ठाम अयलथिन । बड़कीदाइ हुनका टोकलथिन– की हय, आइ खयबा-पिउबामे तोरे सोराज भेटि गेलह ?' उमादाइ तुनुकि उठलीह– हय बहीन, हमरा ई सभ नहि नीक लगैत अछि । तोँहू खाह ने, के मना करैत छह ?

एतबेमे सासु कटोरीमे दही लऽ अनलथिन । उमादाइ अरमज ठानि देलथिन जे भौजीकेँ हमही खोअयबनि ।' बड़कीदाइ कहलथिन– तँ लैह ने, के मना करैत छह ? एहि बेर तोँही जाह ।

उमादाइ घरमे आबि कऽ केबाड़ बन्द कऽ देलथिन । फेर हमरा लग आबि हमर मुँह उघारि देलनि । गुदगुदी लगा देलनि । हम जे आँखि बन्द कयने रही से भक् दऽ फूजि गेल । उमादाइकेँ जेना लड्डू भेटि गेलनि ।

ओ नेहोरा करैत बजलीह— अय भौजी, अहाँ हमरासँ बजैत नहि छी । अहाँकेँ हमरे सप्पत, अहाँ कनियो मुँह ऐंठा लियऽ ।' हम मूड़ी झुका लेलहुँ तँ फेर मूड़ी उठा देलनि— अय भौजी, सुनू ने !' ओ तेना ने हमरा गहि लेलनि जे अन्तमे हमरा हारि–दाड़ि कऽ दहीमे आङुर बोरि कऽ एक रत्ती ठोरमे लगा लियऽ पड़ल । यैह तँ छल एहि ठामक हमर पहिल खायब । आरो बात सब फेरो लिखबह । **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **13 [ सासुरसँ ]**

खाइत–पिबैत, सैंतैत–सम्हारैत, बड़ी राति भऽ गेल छलैक । सिजनियाँ केँ सेहो खुआ कऽ दोसर दुआरिपर सुता दैत गेलथिन । हम रहि गेलहुँ घरमे एकसरि । उग्रतारादाइ आ पीसी आबि कऽ घरमे ओछाओन कऽ देलथिन । दुइ टा ओछाओन रहैक, एक टा पलंग आ एक टा पटिया । पटियापर तँ हम बैसले रही से हमरा उठा कऽ ओहिपर सेहो ओछाओन कऽ देलथिन।

हम ई दूटा ओछाओन देखि कऽ छगुनतामे पड़ि गेलहुँ । माय तँ कहने छलि जे कोबर घरमे भड़फोड़ी धरि पटिएपर सूतऽ पड़ैत छैक । आ एहि ठाम ई दूटा !

एतबेमे पीसी कहलनि जे– कनियाँ ! जाहि ओछाओनपर मोन होअय ताहिपर अपन सूति रहब । जाउ, सूति रहू । देह बढ़ थाकल होयत । खबासनी तँ पहिनहि सूति रहलीह।' ई कहि ओ केबाड़ लगा कऽ बाहर चलि गेलीह । बाँकी घरमे रहि गेलहुँ हम । घरक एक दिस तीनटा नमहर–नमहर कोठी । ओकरा नीचाँमे हमरे ओहि ठामसँ आयल पेटी–बाकस आ भार–दोरक चङेरा–चङेरी राखल । दुइ गोट ओछाओन– एकटा पटिया ओ दोसर पलङ । आ आगाँमे, घरक पुबरिया पाखाक खूब नाम–चाकर भीत ढेउरल । ओहि पर रंगटीप दऽ कऽ कोबर लिखल ।

हय बहिना । कोबर धरि बड़ बढ़ियाँ लिखल, भेल जे देखिते रही । तोँहूँ जँ देखितह तँ होइतह जे देखिते रहि जाइ । जे केओ ई कोबर लिखलनि तनिकर हाथ धरि खूब बैसल छनि आ नव–नव सिरखार सब सेहो खूब फुराइत छनि । अपना सभक कोबर लिखियाक जे चलनि छैक ताहिसँ किछु फराके ई कोबर छैक । बहुत रास नव–नव वस्तु एहिमे उरेहल छैक । एतेक सुन्दर कोबर अपना गाममे कहाँ ककरो लिखऽ अबैत छैक ? हय, हमरा कोबरमे केहन दूटा मोछक्कर सिपाही लिखि देने छलैक ? एहन सन जेना ओ कोबरा घर नहि कचहरी होइक ! हय, कोबरमे तँ नीक–नीक मनलगू वस्तु रखबाक चाही ने ?

हय बहिना, भीत पर ऊपर–नीचाँ, बाम–दहिन मने चारू दिस पाढ़ि काटल । ओहि पर लत्ती, फूल, पत्ती बनल । ऊपर दिस बाम भाग दिस सूर्य, चन्द्रमा आ नवग्रह उरेहल । ठाम–ठाम लओङक लत्ती, बेल, कदम आ घौंदायल केराक गाछ आ बाँसक बीट उरेहल ।

जहाँ–तहाँ सुग्गा, मजूर आ भमरक पाँती । एक कात बसुली बजबैत कृष्णजी । बीचमे कमलदह ओहिमे नाल सहित पुरैनि आ कमल बनाओल । माछ, काछु, बीछ, संख, साप उरेहल । निचला भागमे बीचमे सबरङ पटिया आ पुरहर–पातिल । दहिन भागमे महादेव पार्वती आ बाम भागमे वर–कनियाँ बैसल । ओकर नीचा तोहर पाहुन आ हमर नाम लिखल । हय, आर की–की सभ छैक से लिखल तँ नहि पार लागत। कहियो होयत तँ कागतपर सौंसे कोबरे काढ़ि कऽ पठा देबह ।

हय बहिना, हम ओछाओनपर बैसलि कोबराघरक फूलपत्तीसभ निंघारैत रही। अहिबातक पातिलमे दीप जरि रहल छलैक । कोबराघरक कोनमे केराक पौंछ आ कड़ची राखल छलैक । एक दिस लालटेम जरैत छलैक । हय, पीसी जे केबाड़ लगा कऽ बाहर गेलीह तकरा बाद तँ आँखिसँ निन्ने पड़ा गेल । होइत छल जे आब तोहर पाहुन औथुन. ... आब औथुन । मुदा बाट तकैत–तकैत आँखि पथरा जकाँ गेल। तोहर पाहुन बड़ निट्ठुर छथुन । छातीक कठोर छथुन । हय, पुरुख जातिएक सोभाव उसरठ होइत छैक, एकदम बेलसि–नीरस । एको रत्ती तँ ध्यान रखितथि जे एहि अनभोआर ठाममे वैह हमर अपन छथि। हुनकर बाट हम तकैत होयबनि से एको रत्ती चिन्ता नहि । हम सोचैत रही जे तोहर पाहुन विचारने होयथुन जे आब तँ बच्चीदाइ हमरा घरमे आबि गेलि तें निश्चिन्त भऽ जाइ।

हय, अपना गामपर कोबरा घरमे बड़ी राति भऽ जाय जयबामे तँ तोहर पाहुन बड़ तमसा जाइत छलथुन । हमरा होइत छल जे एहन तामसक कोन काज ! जखन बुझले छनि जे हम अयबे करब तँ कनेक देरिए भेने कोनो बड़का अन्हेर भऽ गेलैक! एक दिन तँ हम कहियो देने छलियनि जे हम अबेर कऽ अबैत छी तँ ओहिमे अहाँकेँ की होइत अछि ?' ओ तँएहिपर कोनदऽरंगक मुँह बना लेलनि । थोड़ेक काल चुप रहि कऽ बजलाह– की होइत अछि से तँ अहाँ नहि बुझैत छिऐक । जहिया अपना पर बीतत तहिया बुझबैक।'

हय बहिना, से तखन मोन पड़ल जे तोहर पाहुन हमरा वैह महिरम बुझा रहल छथि। सोचलहुँ जे आब तँ हुनका वशमे छी, जे सभ बुझयबाक होइनि से बुझा लेथु। अपना गामपर देरीसँ भेंट होयबाक कारण ओतेक तमसाइत छलाह आ एहि ठाम ओ इच्छे जेना नहि रहि गेलनि ।

हय, अपनो गामपर तँ हुनकासँ भेंट करक लेल मोन ललचाइत छल । हय, सुधीक कथा बिसरल नहि होयबह– ओकरा जखने थोड़ेक राति बितैक, ओ कहऽ लगैक जे हमरा औंघी लागल, हम जाइत छी सूति रहऽ । एहिपर ओकर भौजी कहथिन– अय सुधीदाइ, बेसी आहि–आलम नहि पसारू । चलू, हम चुपचाप कोबरा घर कऽ अरियाति दैत छी । अहाँक मोनक बात तँ हम बुझैत छी । कहैत छैक, जे तोरा हीयामे से हमरा कीयामे ।' मुदा तोँही कहह जे ई सभ करैत हमरा पार लगैत ! एहि लेल खाहेँ जे होइतैक ।

अँय हय, ओहि समयमे तँ ओ भेंट करक लेल ओतेक आतुर रहैत छलाह आ ओहि

राति जेना सभ बिसरि गेलाह । एखनो हुनकर वैह ताल अछि । बाट तकैत-तकैत हारि-थाकि कऽ सूति रहैत छी, तखन कहूँ अबैत छथि । ई तँ हुनका नहि करक चाहियनि ने ?

से ओहू राति चारू कात निसबद भऽ गेल छलैक । प्राय: थोड़ेक कालक बाद पहर दितैक। हम ठेहुनपर माथ रखने बैसलि रही से बैसले-बैसले अझक लागि गेल। थाकल सन देह, किछु बुझिए ने पड़ल जे तोहर पाहुनक बाट तकैत-तकैत कखन निन्न आबि गेल । हय बहिना, सत्त पूछह तँ हम निराश भऽ गेलहुँ । भेल जे दुरागमनमे यैह बिधे होइत होयतैक । आ तेँ मोन टुटि जकाँ गेल छल आ निन्द आबि गेल छल । ने तँ ओना कतहु निन्न अबैक ? निन्नक बादक गप्प फेर कहियो । **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **14 [ सासुरसँ ]**

ओहि राति, कनेक काल अझक लागल छल कि एके बेर चौंकि उठलहुँ । तोहर पाहुन केबाड़ लगा कऽ हमरा लग आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह आ हमर माथ डोला देलनि। हम चौंकि कऽ मूड़ी उठौलहुँ तँ देखलहुँ हुनका मुसकैत । ओना, हुनका मुसकैत देखि कऽ हमरा तामसो भेल आ रोखो । तामस एहि दुआरेँ भेल जे आब जा कऽ हिनका मोन पड़लनि अछि जे क्यो हुनकर बाट तकैत छनि । भेल जे हम बजबे ने करियनि । हुनका दिस तकबो ने करियनि । से हम मूड़ी गाड़ि लेलहुँ। ओ हमर माथ धऽ कऽ उठबैत कहलनि जे– एना बैसलिए रहब ? एना अहाँ चुप्प किएक छी ?' हम चुप्पे रही ।

ओ फेर कहलनि– बड़ बेसी तमसायलि बूझि पड़ैत छी ? अपना श्रीमुखसँ किछुओ तँ बाजू । नहि तँ पड़िए रहू, बैसलि किएक छी ?' हम फेर चुप्प रही । ओ हमर हाथ धऽ कऽ फेर उठाबऽ लगलाह । हम हाथ झिकझोड़ि कऽ कहलियनि– हमरा छोड़ि दियऽ, बड़ औंघी लागल अछि ।' ओ चट दऽ बजलाह– हँ, औंघी तँ हमरो बड़ जोर लागल अछि ।' हम कहलियनि जे– तँ मना के करैत अछि, अपन सूति ने रहू ।'

हम एते बजिते रही कि हमरा भक्‌दऽ मोन पड़ि गेल जे एखने हम नहि बजबाक विचार कयने छलहुँ आ से बजाइए गेल । गामोपर तोँ सभ कहने छलीह जे चतुर्थीए राति जकाँ जा धरि बहुत नेहोरा नहि करथि तावत बजबाक लेल नहि । से बजाइए ने गेल ! हय, सत्त पूछह तँ चतुर्थीयो राति अन्तमे हमरासँ एहिना बजा गेल रहय । हय बहिना, चतुर्थीयो राति एहिना हमरासँ धोखासँ ओ बजबा लेने छलाह । ओहि बेर नेहोरा धरि खूब करबौने रही ! ई बात तँ हमही बुझैत छी कि तोरे पाहुन बुझैत छथुन ।

हय, एक बात भेल । ओहि बेर तोरा पाहुनसँ बड़ डऽर होइत छल । कड़रीक पात जकाँ हमर सौसे देह कपैत छल, मुदा एहि बेर से सभ नहि भेल । सत्त पूछह तँ हुनका अबिते एक टा भऽर भऽ गेल छल । सप्पत खा कऽ कहैत छियह जे हमरा तखन एको रत्ती ने औंघी लागल छल । हुनका अबिते निन्न पड़ा गेल जेना । हम तँ फुसियो हुनका कहलियनि । एक बेर तँ भेल जे सरिपो ओ तानि चदरिया सूति ने रहथि । हुनकासँ कोनो

बात असंभव नहि । हम रही पटियापर । ओ कहलनि पलङ्पर चलऽ । हमरा तँ माय कहि देने छलि जे कोबरमे पटियापर सुतैत छैक लोक । मुदा तोरा पाहुनकेँ के मनाबओ । ओ ता कयलनि, ता कयलनि जे हमरा घीचि-तीरि कऽ पलङ्पर बैसाइए देलनि । हम नहि-नहि करिते रहलहुँ, मुदा तकर कोन मोजर ?

हय, पाछाँ बुझलिऐक जे ओ जबरदस्ती पलङ ओछबौने छलाह । लोक सभ कहलकनि तँ कहलथिन जे आर जे कोनो बिध होउक, मुदा पटियापर धरि हम नहिये टा सूतब । एहिसँ नहिये सूतब से बरु कबूल । ओ हमरासँ तकरा बाद मारि की-कहाँ पूछऽ लगलाह, एहि ठामक लोक केहन लागल, गीत केहन लागल, घर केहन लागल, बोली केहन लागल । आब सभ बातक जबाब हम देले ताकी से कोनो जरूरी छैक ? मुदा ओ सभ बातक जबाब चाहबे करताह । जँ चुप रहू तँ कहताह जे तमसायलि छी ? सभ सबाल पुछलाक बाद पूछि बैसताह जे हम केहन लगैत छी ?

आब कहह, एहनो कतहु बात भेलैक अछि ! हय, एक दिन तँ हमरा बड़ तामस भेल छल आ हम तमसाइए कऽ कहलियनि– बड्ड अधलाह !' आ मुसकैत बाजल छलाह– केहन ?' हमरा अपना बातपर कचोट भेल छल जे एना किएक बजलहुँ । हम कहलियनि– जेहन मधु खराब होइत छैक ।'

एहि बातक बदला ओ एक दिन एहिना लेने छलाह । हम गप्पक क्रममे कहलियनि जे अहाँ हमरा तँ पुछैत रहैत छी आ हम अहाँकेँ केहन लगैत छी से कहबे ने करैत छी ?' ओ सोखमे जकाँ की कहलनि से बुझबह ? कहलनि– केहनदन !!

हम तँ ठुकमुका गेलहुँ । हम पुछलियनि तँ तकर यैह जबाब ? लोक जे ई बात सभ पुछैत छैक से नीक उतारा सूनक लेल ने । हम पुछलियनि जे– तँ केहन नीक लगैत अछि ?

ओ एकदम गम्भीर भऽ कऽ बजलाह– जामुन सन कारी, पीचल नाक, बिलाड़ि सन आँखि, पलड़ल मोटका ठोर, थुलथुल मोट...

एहने-एहने तँ कथा सभ होइत छनि हुनकर । से ओहि दिन हुनका ओ बात सभ कहलियनि जे लोक सभ मुँहदेखाइ बेरमे आ साँठ-राज देखबऽ बेरमे कहने रहय । हमरा कहैत-कहैत आँखि नोरा गेल । भेल जे हम एकदमसँ कानऽ लागी । खूब कानी । ओ हमरा मारि कहूँ बुझाबऽ लगलाह । ओ तँ अपना गामेपरसँ मारि बुझबैत छलाह । आँखिसँ नोर तँ पोछि देलनि, मुदा मोन कनिते रहल । मोन हमर खसि पड़ल छल । ओ कहलनि जे एना मोन खसौने रहब ताहिसँ तँ काज नहि चलत ।'

– तँ हम की करू ?' हम कहलियनि ।

–हँसू, आर की !' ओ बजलाह ।

हम बजलहुँ– इह, हँसू ! आँखि नोर दाँत निपोड़ !'

'नहि हँसब तँ हम गुदगुदी लगबैत छी ।' ई कहि ओ हमरा पाँजरमे गुदगुदी लगाबऽ लगलाह आ मारि कहूँ उकठ करऽ लगलाह । बड़ अधलाह छनि हुनकर उकठ करबाक अभ्यास । हमरा यैह नहि नीक लगैत अछि ।... हय बहिना । एतबेमे गितगाइनि सभ पराती उठौने छलीह– हे हरि हे हरि सुनिअ स्रवन भरि, ई न विलासक बेला' । हय, कतेक सिनेहसँ ई गीत हम सभ सुधीक बियाहमे गौने रही, मुदा अपना बेरमे बड़ अधलाह लागल । भेल जे ई सभ एहि भोरुकी रातिमे नहियेँ गबितथि तँ की होइतनि ? **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **15 [ सासुरसँ ]**

सन्तोष कयलहुँ तोरा सभसँ । हमरा लेल तोरा लोकनि आब किछु ने । माय हमरा निरसिए देलक अछि । ओकरा लेल तँ जेना हम मुइले छी तेँ ने एखन धरि ककरो खोजो करबा लेल नहि पठौलकैक अछि ।

जाहि दिन कहुतिया भार गेल छल ओही दिनसँ हमर माय दिन-राति कनिते रहैत छलि । सदिखन कहैत रहैत छलि जे बच्चीदाइ ! हम तोरा बिना कोना रहब ? से सभ जेना माय बिसरि गेलि । बिसरि गेलि जे ओकर बेटी ओकरा लेल कतेक आकुल रहैत छैक । हमरा मायकेँ तँ ईहो ने मोन होयतैक जे कहियो बच्चीदाइ ओकर बेटियो छलैक । ओ माया-ममता सभ तेयागि देलक । ओकर छाती पाथर भऽ गेलैक, बज्जर सन कठोर भऽ गेलैक । सत्तेमे बेटी आन घर गेल कि विरान भऽ गेल । से माय हमरा आब विरान बुझैत अछि आ जिनगी भरि बुझैत रहति । मुदा ई जरलाहा मोन अछि जे अपना गामपरसँ कखनो हटबे ने करैत अछि । रातिमे सपनाइतो छी तँ होइत अछि जे अपने गाममे छी । कखनो-कखनो बैसले-बैसले होमऽ लगैत अछि जे हम अपना गाम चलि गेलहुँ आ अपन संगी-बहिनपा सभसँ खूब गप्प करैत छी... ।

हय बहिना, तोहूँ हमरा लेल विरान भऽ जयबह से आशा नहि छल । तोँ कमसँ कम अपन बेचारी बहिनाकेँ मोन रखितह । बोल-भरोस लीखि कऽ पठबितह । मुदा से तोरासँ नहि होयतह, तोरा भगवान मोनमे कहियो ममता नहि देलथुन, सभ दिन तोरा हमरा दुख देबामे मोन लगलह । सभ दिन तोँ हमरा की तँ खौंझबैत रहलीह आ नहि तँ रूसलि रहलीह । एहिसँ बरु तोँ झोँट पकड़ि कऽ चारि मुक्का मारि दितह तँ तकर दुख हमरा नहि होइत । मुँह लागल चारि चाट कि दू ठुनका लगा दितह तँ हमरा ततेक अभिरोख नहि होइत । मुदा आइ कतेक दिन भऽ गेल आ तोँ एको बेर हमर जिज्ञासो ने कयलह । आइ पन्द्रहम चिट्ठी लिखि रहल छियह मुदा तोरा एतेक रोच नहि भेलह जे एकोटाक उतारा दितह ।

तोँ गौरवाहि तँ नहि छलीह, भऽ सकैत छैक हमरा अयलाक बाद भऽ गेलि होअह । भऽ सकैत छैक जे आब ओतेक सिनेहे ने रहि गेल होअह । आकि सोचने होयबह जे बहिना तँ सासुर चलि गेलि, आब ओकरासँ कोन संबंध ?

हय बहिना ! हम तोरा पाहुनकेँ कहने रहयनि जे बहिना हमर चिट्ठीक उतारा नहि

दैत अछि । एहिपर ओ कहलनि– जँ अहाँ दुनू गोटेक सत्तक सिनेह होयत तँ अवश्ये उतारा देतीह ।' ओही कहनामपर हम अपना दिससँ चिट्ठी लिखैत रहलियह । हम तँ बुझैत छी जे हमर सिनेह सत्तक सिनेह अछि । तोहर सिनेह केहन छह से तँ आब भगवाने जानथि।

राति खन फेर हम कहलियनि तोरा पाहुनकेँ तँ ओ कहलनि जे से तँ अहाँ जानी आ अहाँक बहिना जानथि, मुदा जँ हमरासँ हमर कोनो संगी एना करैत तँ हम किन्नहु ओकरा पत्र नहि लिखितिऐक । ओ तँ अहीं छी जे लिखने जाइत छियनि ।' हय, हमरा हुनकर बात बड़ लागल । आ तोरा हम आइ खुलासा लीखि दैत छियह जे ई हमर आखरी चिट्ठी थिकह । आब हमरा तोरा एक दमसँ छुट्टा-छुट्टी। तोँ बूझि लिहह जे तोहर कोनो बहिना-तहिना नहि छलह । जँ एको रत्ती मोन होइयह तँ तकरा बिसरि जइहह ।

हमर गप्प पढ़ि कऽ तोरा बड़ तामस होयतह । तामस होयतह तँ होयतह । हमरा तकर कोनो चिन्ता नहि अछि आब । हमरा मोनपर जे बितैत अछि से हमहीं जनैत छी । तोँ अपना गामपर छह तँ निश्चिन्त छह, अनका मोनक दुख बुझबाक चिन्ता नहि छह । मुदा हमरा तोरा सभक, अपना मायक, अपना गामक आन-आन लोकक मुँह देखबाक लेल जी तरसैत अछि । सोचैत छी जे आब जिनगी भरि जी तरसिते रहत एहि लेल । तखन जँ बीच-बीचमे दुइयो आखर कऽ लिखितह तँ हमरा कतेक भरोस होइत से तोँ नहि बुझबह । ई वैह लोक बुझत जकरा हमरासँ मिसियो भरि सिनेह होयतैक । हय, तोँ तँ नहियेँ चिट्ठी लिखैत छह आ हमहूँ आब नहि लिखबह, तेँ पुछैत छियह जे तोँ जखन सासुर गेलि छलीह तखन तोरा अपना लोकक मुँह देखबाक कंछा नहि होइत छलह ? की सेहन्ता नहि होइत छलह जे अपना गामक लोकसँ भरि छाक गप्प करितहुँ ? हमरा तँ बुझि पड़ैत अछि जे तोरा मोनमे ई सभ नहि होइत होयतह, खाली हमरे मोनमे होइत अछि । जँ तोरो मोनमे एहन बात उठितह तखन अवस्से हमर मोनक दुख पतिऐतह ।

आकि हमही बड़ि अभागलि छी जे हमरा सभ अपन लोक बिसारि देलक । माय बिसरि गेलि । तोरा सन हमर सिनेही बहिना हमरा बिसारि देलक तँ एहिसँ बढ़ि कऽ अभागलि के होयत ? हमरा तँ होइत अछि जे हमरासँ कोनो अपराध भऽ गेलह, कोनो अनट हमरासँ कयना गेल, ने तँ कोनो बेउरेब काज हमरासँ तोरा प्रति भऽ गेल, तेँ हमरा तोँ निरसि देलह । जे किछु भेल होइक, तकरा तोँ छमि दिहह आ छमिहह तँ बिसरि जैहह। आर किछु ने । बस । –तोरे सिनेहक भूखलि अभगली– **बहिना**

**हय बहिना !** **16 [ नैहरतः ]**

धन्न छह तोँ, धन्न छथि हमर पाहुन ! हय बहिना एतऽसँ जाइत काल तोँ कतेक बेर कहने रहह जे हम अवस्से चिट्ठी लिखबह । से अवस्से कहैत-कहैत तोँ अवश भऽ गेलीह । कोन एहन मधुर वस्तु छैक जाहिमे तोँ एतेक लिपित भऽ गेलीह जे हमरो सन बहिनाकेँ बिसरि गेलीह । ओहि ठाम नव लोक, नव गप्प, नव स्थान, ओहि सभमे मगन

भऽ गेलीह, मुदा तकर माने तँ ई नहि जे लोक अपनो हित-प्रेमकेँ बिसरि देअय ! हय, पाहुन लगमे रहैत होयथुन सदिखन । मोन आनन्दमे डूबल रहैत होयतह । पाहुनक मिठमिठ गप्प सभ सुनैत होयबह । ओहि सभमेसँ थोड़-बहुत अपना बहिनोकेँ तँ चिखबितह ?

हय, ओना सासुर सभकेँ पियरगर लगैत छैक । होइत छैक जे सभ दिन ओही ठाम रही, मुदा अपन गाम-घर लेल सेहो दिन-राति कचोट होइत रहैत छैक । कखनो-कखनो तँ अपना माय लग जयबा लेल बान्हल बाछी जेना छटपटाय लगैत छैक तहिना मोन करऽ लगैत छैक । मधु-माखन-मिसरी सन सासुरमे अपन गाम, अपन नैहर, अपन लोक बिसरल नहि जाइत छैक । एहन-एहन बेरपर बूझि पड़ैत छैक जेना पिजरा महक सूगा-मैना होइ । मुदा तोँ जुग-जीति गेलीह । एहन कलिजुगाहि तँ देखबे ने कयलहुँ कतहु ? हय, हमहूँ सासुर बसि आयलि छी । हमहूँ ओतऽ गेल रही तँ सदिखन लोक सभ चारू कातसँ घेरने रहैत छल, मुदा तखनो पुरैनिक पातपरक पानि जकाँ हमर मोन ओहि सभसँ फराक भऽ कऽ उड़ल-उड़ल अपना गापपर चल अबैत छल । सासुरक सभ गप्प सिनेहमे बोरल रहैत छैक, मुदा नैहरोक गप्पमे ममताक फोहारा पड़ैत रहैत छै, से बूझि पड़ैत अछि जेना हमरा बुझबऽ पड़त ।

हय, तोरा विना हम कोना उदास रहैत छी से तँ विश्वासो ने करबह । हमही की, अपन संग-सहेली जे केओ अछि से सभ तोरा बिना उदास रहैत अछि । मुदा तोँ छह जे सभकेँ एकठहुरीए बिसारि देने छह । हय बहिना ! हमरा तँ बूझि पड़ैत अछि जे हमर पाहुन तोरा नोन पढ़ा कऽ चटा देलथुन अछि । तोहर मति मारि लेलथुन अछि । पुरुखमे कोन एहन मोहनी मन्तर होइत छैक जे लोक ओकर बसि भऽ जाइत अछि से नहि कहि । बिसरत तँ एकदमसँ निरसि देत, एक बेर खोजो-खबरि ने लेत आ मोनो ने पाड़त; लगमे रहत तँ मोनेकेँ हरि लेत । हमर पाहुन सेहो बड़ निरमोहिया छथि । एहि ठामसँ गेलाह तँ फेर चर्चो ने, एको रत्ती मोह नहि । ओ ओहि ठाम तोरा मोहि लेलथुन ।

हय, हमरा पाहुनकेँ की ? हुनका तँ तोरासँ सम्बन्ध छलनि, तोँ भेटि गेलहुन, खिस्सा खतम । तोँ आब एहि ठाम नहि छह, तँ ई नगरो हुनका मोन रहतनि कि नहि, हमरा ताहीमे सन्देह अछि । तखन हमर सभक कोन कथा ? तोँ तँ कहने रहह जे जाइते देरी चिट्ठी लिखबह, से बिसरि गेलीह की ? एतबे दिनमे हय ?

तोरा बिना एको घड़ी मोन नहि लगैत अछि । ओहि दिन जे तोरा विदा कऽ कऽ अयलहुँ तकरा बाद चित-मति थिरे ने रहय । होअय जे कतऽ जाइ, कतऽ बैसी ? तोँ भने बिसरि जाह, मुदा हम नहि बिसरि सकैत छियह । तोरा आङन जयबाक मोने ने करैत अछि। जखन जाइत छी तखन काकीक छाती फाटऽ लगैत छनि । बेर-बेर तोहर चर्च करैत रहैत छथुन । हम तँ कय दिन बुझौलियनि जे ओना अहाँ कानब तँ बहिनाक छाती फटतैक, मुदा से कहैत-कहैत हमरो छाती फाटऽ लगैत अछि ।

कका सेहो बड़ अनमनायल जकाँ रहैत छथि । तोँ पूजाक पारखत माजि दैत

छलहुन आ पूजाक सरमजाम ओरिया दैत छलहुन ने, से आब ओ अपने करैत छथि। कय दिन तँ हमही जा कऽ सभ किछु ओरिया दैत छियनि। हम सभ किछु ओरिया-पोरिया दैत छियनि तँ कहि दैत छथि जे एनमेन बच्ची जकाँ तोँ सभ किछु कऽ लैत छेँ। बच्चीदाइ सभ सिखा गेलौक की ?' हय, हमरा तँ होइत अछि जे जावत तोँ नहि छह तावत सभ किछु हमही ओरिया दियनि सभ दिन जा कऽ, मुदा से भऽ नहि पबैत अछि।

काकी कहैत छलीह जे तोरा ओहि ठाम ककरो पठौथिन देखि अयबाक लेल। दू-चारि दिनमे पुछारिक भार लय सनेसबाड़ीक ओरियान करतीह। कहैत छलीह जे ओहि ठामक लोक सभ बड़ तमसायल छैक। से किएक हय ? ककाजी सेहो कहैत छलाह जे ओझाजी मोनसँ प्रसन्न नहि छथि।' हय, तोरा केहन बूझि पड़लह ? हमर पाहुनो तमसायल छथि की ?

ओहि ठाम तोरा कयटा ननदि आ देयोर छह ? सासु केहन छथुन ? पिसिया सासु कयटा छथुन ? ई सभ बात लिखिहह। हँ, पाहुनकेँ कय टा घर छनि ? कोन मुँहक घरमे तोहर कोबर छह। सेहो सभ लिखिहह। हम जे तोरा लिफाफ देने छलियह सेहो रखनहि छह, ओकरो तँ खर्च करह। चिट्ठीक उतारा अवस्से दैह। बिसरिहह नहि। पाहुनकेँ एक बेर हमर नाम कहि कऽ मोन पाड़ि दियऽहुन। तोरा विरोगमे- **बहिना**

**हय बहिना !** **17 [ सासुरसँ ]**

हय, भगवतीक दयासँ, हम तोरा मोन तँ पड़लियह ! आइ तोहर चिट्ठी भेटल तँ भेल जे एकरा उठा कऽ पीबि जाइ। कतेक बेर ओकरा पढ़लहुँ, मुदा सन्तोखे ने होइत छल। पढ़ैत-पढ़ैत बुकौर लागि गेल। भरि राति ओकरा छातीसँ सटौने कनैत रहलहुँ। रहि-रहि कऽ होइत छल जे आब तोरा कहियो ने देखि सकबह। एको रत्ती धैरज बान्हिये ने होइत छल। जखन हम तोहर चिट्ठी पढ़ैत रही, तखने उमादाइ अइलीह। ओ चिड़ै-चुनमुन्नी जकाँ फुदकैत अबैत छलीह। प्रायः हमरासँ कोनो हँसी करितथि, मुदा हमरा आँखिमे नोर देखि ओ थकमका गेलीह। ओ हमरा टोकलनि- भौजी, अहाँ कनैत छी ?' हम हबर-हबर नोर पोछि लेलहुँ आ तोहरबला चिट्ठी आँचर तऽर नुकबैत कहलियनि- कहाँ, ओहिना आँखि नोरा गेल होयतैक।

ओ हमर दुनू गालपर हाथ रखैत कहलनि- नै अय भौजी, हमरा ठकू नहि। हम तँ देखैत छी जे अहाँ हबोढकार भऽ कऽ कनलहुँ अछि। जाइत छिऐक बहीनकेँ कहक लेल...।' ई कहि ओ फुर्र दऽ उड़ि गेलीह। जा हम रोकी-रोकी ता ओ जा कऽ कहि अयलथिन। उग्रतारादाइ सेहो दौड़ल अयलीह- किएक अय, अहाँ कनैत छी किएक ?

हम मूड़ी झुकौने कहलियनि- दाइ ओहिना जा कऽ कहि देलनि।

उमादाइ कहलथिन- नहि हय बहीन ! तोरे सप्पत कहैत छियह। भौजी खूब कनैत छलीह। एखन ई फूसि बजैत छथि।' उग्रतारादाइ हमरा परबोधऽ लगलीह- अहाकेँ की भेल

अछि से हमरा कहू । ई छौंड़ी सभ कोनो तेहन बात तँ ने कहि देलक ?' उमादाइ कहलथिन– नहि हय बहीन, तोरे सप्पत कहैत छियह । हम सभ, किछु नहि कहलियनि । जनता भगवान, कहैत छियह । की अय भौजी ! अहीं गवाही छी...

बड़कीदाइ बजलीह– तोँ चुप रहह । सौंसे गामक अलगी छौंड़ी सभकेँ नोति–हकारि कऽ लऽ अबैत छह । क्यो किछु बाजि देने होयतैक, तोँ चल जाह एहि ठामसँ । जाह ने !!' उमादाइक मुँह विधुआ गेलनि । बड़कीदाइ ओना डटलथिन से हमरा नहि नीक लागल । भेल जे उमादाइ मङनीयेमे बात सुनि लेलनि ।

उमादाइ एकदमसँ कनै–कनै–सन भऽ कऽ ओहि ठामसँ विदा भऽ गेलीह । ओ जा कऽ अपना मायकेँ कहि देलथिन– माय गे ! भौजी मारि कनैत छथुन आ ताहि लेल बहीन मारि कहूँ हमरापर तमसाइत अछि ।' माय कहलथिन जे– तोँ छेँहे बड़ सैतान ।

उमादाइ कहलथिन– हमरासँ तँ कोनो गप्पो ने भेलनि अछि आ अनेरो सभ गोटे हमरा दोख दैत छेँ ।' ओ विरुझि कऽ कानऽ लागल छलीह ।

माय कहलथिन– अयँ गे ! बात ने बतकहाँ, तोँ किएक एना ठुनकऽ लगलेँ ?

ओ उमादाइक डेन पकड़ने अयलीह । हमरा लगमे बैसि गेलीह । हमरा तँ विचित्रे लागल । एक दिस बड़कीदाइ, दोसर दिस माय, तेसर दिस उमादाइ हिचकैत ठाढ़ि । बड़कीदाइ आ माय दुनू एके बेर हमरासँ पुछलनि । हम सोझे नहिमे मूड़ी झुला देलियनि । माय कहलनि– हम से कोना मानब ?

बड़कीदाइ कहलथिन– दुनू आँखि कनैत–कनैत लाले–लाल भऽ गेलनि अछि । पुछैत–पुछैत थाकि गेलहुँ, कोनो बातक उतारे ने दैत छथि ।

हमर सासु बजलीह– कहू तँ ! नैहर सासुर एहिना होइत छैक । एहि ठाम अहाँकेँ कोन बातक दुख अछि ?

हम मोने–मोन कहलहुँ जे कोन बातक दुख नहि अछि । अपन गाम घरक लोक–बेदसँ संबंध छोड़ा कऽ एहि ठाम पिजरामे राखि देने छथि आ...

ओ फेर बजलीह– देखू ! उमा कनैत–कनैत हेहऽरू भऽ गेल अछि ।' हमरो भेल जे अनेरे ने उमादाइ एतेक बात सूनि लेलनि ।

बड़कीदाइ बजलीह– गय माय ! नैहर लेल हिनकर सदति छाती फटैत छनि । पठा दहुन ओतहि ।' हमरा तँ भेल जे कहि दियनि जे– तह ! हमरे नैहर लेल एतेक छाती फटैत अछि की ? अनका की एको रत्ती नैहर लेल दरेग होइत होयतैक ?

हमर सासु कहलथिन– हम तँ सोलह आना राजी छी । भड़फोड़िये दिनसँ कहैत छियनि जे पठा देब, मुदा केओ लेमइयो आबनि तखन ने ? एहि ठामसँ अपनहि पठा देबनि, से लोक की कहतनि आ हमरा की कहत ?

एतबेमे हमर ओ देयादनी पहुँचि गेलीह– की थिकैक ? कथीक महजरो थिकैक ?' बड़कीदाइ कहलथिन– कनियाँ मारि कनैत छथिन ।' हमर सासु कहलथिन– तँ हम सभ की करियनि ? माय तँ छथिन करेजक पाथरि। बेटीक मुँह देखबाक सेहन्ते ने छनि । सतधी जकाँ बियाहि कऽ फेकि देलथिन । बड़ भारी लगैत छल होयथिन ।' हय बहिना, हुनकर ई गप्प हमरा एकदम तीत लागल । हमर माय ओहन नहि अछि । आ जँ अछियो तँ हमर माय अछि । हमरा लेल अछि । तेँ ई सभ एतेक हिनताइ करथिन ! मोन एकदमसँ उखड़ि गेल । हमर माय एहि ठाम एतेक बात सुनैत अछि !

हय, एक रत्ती कनलहुँ नहि कि सौंसे गाम ढोल पिटा गेल– कनियाँ कनैत छथि। जेना कननाइ बड़ भारी पाप होइक । आ दोसर, मङनीमे हमरा मायकेँ एक ढाकी गारि सुनऽ पड़त छैक । हम किछु बाजि तँ सकैत नहि छी । चुपचाप सहि लैत छी । हय बहिना ! अपना गामक कुचेष्टा लोक करैत छैक तँ हमरा बड़ अधलाह लगैत अछि । होइत अछि, जहर–माहुर खा ली । से ई चिट्ठी लिखैत–लिखैत मोन बड़ केहनदन भऽ गेल तेँ एतबे पर– **तोरे बहिना**

**18 [ सासुरसँ ]**

**हय बहिना !**

एकटा चिट्ठी देलह आ बैसि रहलह । एहन टोका नमस्कार तँ तोरेसँ भऽ बनय। पूछी ने आछी चल गेला गाछी, से परि करैत छह तोँ । तोहर चिट्ठीक पबिते उतारा देने रहियह, मुदा ओ रहि गेलह आधा–छिधा।

हय, ओहि दिन तँ ततेक कोँढ़ फाटऽ लागल छल जे अपन मोनक करुने लिखैत–लिखैत ओर लागि गेल । तोहर ओ बिक्ख सनक चिट्ठीक आखरक जबाब तँ हम देबे ने कयलियह । हय, कहैत छैक जे उनटे चोरा मारा–मारी !

तोँ जे सोखमे जकाँ चिट्ठी लिखलह जे 'हम एहि ठाम आबि कऽ तोरा बिसरि गेलियह आ चिट्ठी नहि लिखलियह' से सत्त छह ? तोँ बुझैत छह जे बच्चीदाइ बकलेलिये अछि ! हम बकलेल, अबढङाहि जे कहह से सभ छी, मुदा चिट्ठी लिखबा काल से नहि रहैत छी । ओहि बेरमे हमर मोन आने लोक जकाँ तलफैत रहैत अछि । तोँ हमरा अबढङाहि जानि कऽ ठकि रहल छह कि ने ?

आयँ हे, हम तोरा एक–दू कऽ गनि कऽ पन्द्रहटा चिट्ठी लिखलियह । गोहरौलियह, कानि–कानि कऽ समाद देलियह । मुदा छह तोँ पाथरि । एको रत्ती माया–ममता रहितह तखन ने ! पन्द्रह टा चिट्ठीक पाँचोटा आखरमे जबाब दितह तँ सन्तोख होइत । उनटे हमरे उपराग दैत चिट्ठी लिखलह अछि ।' जँ लऽगमे रहितह तँ देखा दितियह । तामस तँ ततेक होइत अछि जे..., मुदा हम करू की, परवश पड़लि छी । बात ई छैक जे तोँ छह ओरकेर फुसियाहि । फूसि बजैत तोरा कनेको संकोच नहि ने होइत छह। तोँ कतेक बेर फूसि बजलीह से मोन पाड़ि दियह ? हय, तोँ भरि–भरि राति

ओझाजीसँ फदका करैत छलीह आ हम पुछैत छलियह तँ कहैत छलीह जे 'कहाँ, हम तँ साँझे सूति रहलहुँ ।' कहियो कहैत छलीह जे 'ओझाजी बजबे ने करैत छथुन ।'

आ तोँ अपने केहन अपस्वार्थी छलीह जे हमरासँ सभटा बात छानि-छानि कऽ पूछि लैत छलीह । हम अनठा दैत छलियह तँ तोँ कहैत छलीह जे 'हँ तँ, बहिना ! पाहुन की सभ गप्प कयलथुन ? तोँ रूसलि छलीह तँ कोना मनौलथुन ?' तोँ ता करैत छलीह, ता करैत छलीह जे हमर पेटक बात बहारे कऽ लैत छलीह । एहू ठाम आबि कऽ तँ सैह भेल अछि । पन्द्रहटा चिट्ठी लिखलियह । सभ बात फोलि कऽ लिखलियह, मुदा तकर उतारा नहि देलह । एकटा लिखलह तँ यैह देखबैत जेना तोरा हमर एकोटा चिट्ठी भेटले ने होअह ।

तोँ लिखैत छह जे पाहुनकेँ मोन पाड़ि देबाक लेल से हमरा कोनो खगता नहि अछि । जानथि पाहुन आ जानथि पाहुनवाली । हम बीचमे बजनिहारि के ? हम तोहर के ? हम तोहर केओ नहि । तोँ अपना घर हम अपना घर । नै चिट्ठी लिखबह तँ हम खुसामदो ने करबह । बड़ महग छह तोहर चिट्ठी तँ राखह अपन पौतीमे जोगा कऽ । लिखैत रहह ओझाजीक नामेँ । ओहो ! आब मोन पड़ल ने ! तोरा तँ ओझाजीकेँ बड़का पतड़ा लिखबासँ फुरसतिये ने होइत होयतह । कहाँ ओझाजी आ कहाँ बहिना !! लिखहुन, ओझाजीकेँ खूब चिट्ठी लिखहुन ।

मोन होइत अछि जे बिच्छल-बिच्छल कटाह बात तोरा लिखियह जे तोँहू बूझह जे बच्चीदाइ कोना तमसाइत अछि । मुदा ने ओतेक कटाह-बाते भेटि रहल अछि आ ने ओतेक धैरजे आब अछि । आ जखन मोन पड़ैत अछि जे बच्चीदाइ सोझे बच्चीदाइ नहि, तोहर बहिनो छह तँ तोरा बुद्धिपर दया आबि जाइत अछि ।

हय, आइ एतेक तामस नहि होइत, मुदा संजोगसँ तोहर चिट्ठी सिरमामे राखल छलैक से रातिखन तोहर पाहुनक हाथमे पड़ि गेलनि । हम हुनकासँ छीनऽ लगलहुँ, मुदा पुरुखक हाथमे हम सकितहुँ ? हारि-दारि कऽ मारि गोड़ लगलियनि, सप्पत देलियनि मुदा ओ चिट्ठी पढ़िये लेलनि । चिट्ठी पढ़ि कऽ मोनमे की सभ भेलनि से तँ नहि कहि, मुदा एतबा धरि अवस्से बजलाह जे बहिनाकेँ ने हम बिसरलियनि अछि ने बहिने हमरा बिसरलीह अछि । मुदा अपना बहिनाकेँ बिसरि गेलीह ।'

हमरा फेर कहलनि जे भरि दिन भरि राति बहिनेक रटना रटैत छलहुँ । जखन पुछैत छलहुँ जे की करैत छो तँ जबाब दैत छलहुँ जे बहिनाकेँ चिट्ठी लिखैत छी । मुदा अहाँक बहिना छथि जे कहियो खोजे ने लेलनि आ एकटा सऽर-सगुन कऽ चिट्ठी लिखलनि तँ अहाँक चिट्ठीक कोनो चर्चे ने ।' हय बहिना, तोँही कहह जे ई बात लगइबला छैक की नहि ? हमरा बहिनाक खिस्सा केओ करत तँ हमरा तामस होयत की नहि ? आ ओ तामस ककरापर देखयबैक ? तोरे कारण ने तोहर पाहुन हमरा बहिनाक कुचेष्टा कयलनि ? तेँ हम तोरा एतेक बात कहलियह अछि । आब तँ हमर विवशताकेँ बूझह ।

हय, एतेक बात तँ ओकरा ने बुझा कऽ कही जे सासुर नहि गेलि अछि । तोँ तँ अपने सासुरसँ भऽ आयलि छह । जनैत छहक जे सासुरक लोक कनियाँक नैहरकेँ छोटको-छोटको बात लऽ कऽ दूसि दैत छैक ।

तोहर चिट्ठीमे तोहर पाहुन आ घरक लोकक तमसयबाक बात छलैक, तोँ एहि ठामक घर दऽ लिखने छलीह से हुनका केहनदन लागल होयतनि । की कहाँ सोचि लेने होयताह । से सभ बिचारि कऽ मोन कोना दन करैत अछि । डऽर होइत अछि । तोहर पाहुन भाङ तँ नहि पिबैत छथुन, मुदा छथुन धरि किछु भङतराह जकाँ। तोँ चिट्ठीक उतारा दैह जे भरोस होयत । **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **19 [ नैहरतः ]**

तोहर चिट्ठी भेटल । चिट्ठी पबिते भेल, जेना कोनो हुड़िया गाड़ल भेटि गेल । जेना भमरा फूलकेँ देखि खुसी भऽ उठैत अछि तहिना हमरो मोन भऽ उठल । मुदा चिट्ठीमे तोहर तामस देखि कऽ बड़ दुख भेल । हमर बहिना हमरासँ कहियो कठोर बोली नहि बाजलि से एतेक कठोर भऽ कऽ लिखति से विश्वासे ने होइत छल । मुदा विश्वास करऽ पड़ल, किएक तँ ओ तोरे अच्छर छलह । अनकर अच्छर तँ किन्नहु ने भऽ सकैत छैक ।

हय, सिजनियाँ जे तोरा ओहि ठामसँ आयलि तँ ओकरासँ खोधि-खोधि कऽ मारि पुछलिऐक । ओ कहलक जे बच्चीदाइ बड़ कनैत रहैत छथि । किछु खाइत-पिबैत नहि छथि । हमरा कहलक जे अहाँकेँ कहलनि अछि जे बहिनाकेँ कहबैक बिसरऽ लेल नहि, हमरा मोन राखत ।' हय, हम कहलिऐक– बहिना कोनो चिट्ठी-पुर्जी सेहो देलकौक ?' एहिपर ओ कहलक जे– बच्चीदाइ कहने तँ रहथि जे बहिनाक नामे चिट्ठी देबौक, मुदा चलबाक कालमे देलनि नहि हमरा ।

हय बहिना, हम सोचलहुँ जे एखन जे चिट्ठी लिखबह तँ ककरा हाथमे पड़तैक, ककरा नहि । से, बहिनाक चिट्ठी पाबि ली तखन उतारा दिऐक । मुदा तोहर चिट्ठी तँ हमरा भेटल नहि । तोँही कहह जे हम की करितहुँ ? हमर एहिमे कोन दोष ? तोँ लिखलह अछि जे पन्द्रहटा चिट्ठी लीखि चुकलियह, मुदा हमरा भेटल एकोटा नहि । तखन भेलैक की ? हमरा तँ होइत अछि जे जकरा तोँ खसयबाक लेल दैत छलहक सैह तँ ने फाड़ि कऽ राखि लैत छलह ? के एहन निसोख अछि जे एना कयलक ? तोँ जे एना तमसायलि छह से तमसायब उचिते छह ।

हय, सुनैत छी जे बड़ दुब्बरि भऽ गेलीह अछि । खाइत-पिबैत नहि छह की ? आ कि सासुए हथकट्टी छथुन हय ? तोँ जे सदिखन कनैत रहैत छह से किएक ? सभ धी-बेटीकेँ एक दिन सासुर जाइये पड़ैत छैक । बेटीक जनमे एही राशिये होइत छैक । हय, सुरू-सुरूमे अपना गामक बड़ सुरता अबैत छैक, मुदा फेर अपन सासुरेसँ लोककेँ सिनेह भऽ जाइत छैक । जाहि स्त्रीगणकेँ अपना सासुरसँ सिनेह नहि होयतैक ओ की सासुर डेबि सकत कहियो ?

सासुर स्त्रीगणक मर्यादा थिकैक । झाँपन थिकैक ।

हय बहिना ! नैहर तँ मन–प्राणमे बसल रहैत छैक, मुदा जावत कुमारि रहैत अछि तावते धरि नैहरमे आदर सत्कार रहैत छैक । तकरा बाद तँ अपन घर सासुरे भऽ जाइत छैक । जाहि स्त्रीगणक सासुरमे मान–दान होइत छैक तकरे नैहरोमे होइत छैक । जे सासुरमे गिरथाइन बनि कऽ रहैत अछि तकरे नैहर नैहर जकाँ रहैत छैक ।

तोँ कहबह जे हमर बहिना बूढ़ीमैयो जकाँ गप्प करैत अछि । सत्ते, हमरा सभक वयस कोनो से नहि भेल अछि जे एहन गप्प करी । मुदा तोँहू अपन सासुरसँ आब अयबह तँ तोँहू एहिना बजबह ।' ई सभ बात तोरा एहि दुआरेँ लिखलियह अछि जे थित–मति राखि कऽ सासुरमे मोन लगाबह । ओहि ठामक वस्तुकेँ अपन वस्तु बुझहक । ओहि ठामक लोककेँ अपन लोक बुझहक । ओहि ठाम तेहन व्यवहार राखह जे सभक हीमे बसि जाह । एहन करह जे ओहि ठामसँ तोरा अबिते बूझि पड़ैक जे एक टा लोक कमि गेल । ओहि ठामक लोककेँ तोहर खगता होमऽ लगैक ।

बहिना हय ! पहिल बेरमे तोहर आचार–विचारक जे प्रभाव पड़तैक सैह जिनगी भरि रहि जयतह । कहैत छैक जे पहिल रंग ने रङल गेल दोसर रंग भठरंगे भेल । से, पहिले बेरक तोहर सुजनता तोरा जिनगी भरिक सतोजनी बना देतह ।

हम जखन सासुर जाइत रही तँ माय कहने रहय जे दाइ अपन जीह–ठोर समटि कऽ राखब । लोक कतबो बात कहय, मुदा अहाँ कल्ला नहि अलगायब । हमरा सभक जऽस–प्रतिष्ठा आब अहींक हाथमे अछि ।' कतेक बदलि गेलि ओहि दिन माय, जे हमरा तोँसँ अहाँ कहऽ लागलि ? बड़ अधलाह लागल छल हमरा ।

हय, नैहरक जऽस–प्रतिष्ठा सत्तेमे बेटिए रखैत छैक कि बुड़बैत छैक । सभ बात तँ काकी तोरो चलबाक काल कहनहि छलथुन ।' हमरापर जे तोहर तामस छह तकरा मेटा दिहह आ चिट्ठी दिहह । हमर बहिना हमरा अवस्से चिट्ठी देत । देत ने ? **–तोरे सिनेही बहिना**

**20 [ सासुरसँ ]**

**हय बहिना !**

तोहर चिट्ठी भेटल । चिट्ठी पढ़ि कऽ भेल जे ओकरा छातीमे साटि ली । सत्ते हम कतेक कठोर छी जे तोरा ओना कऽ चिट्ठी लिखलियह । हम तोरा पाहुनकेँ कहलियनि जे बहिनाक चिट्ठी भेटल अछि, मुदा हमर चिट्ठी सभ बहिनाकेँ नहि भेटलैक । हम अनेरे ने बहिनापर ओतेक तमसयलिऐक ।

एहिपर तोहर पाहुन कहलनि जे हम तँ सभ दिन कहैत छी आ ई कोनो पैघ आदमीक कहल बात छैक जे जखन मोन चंचल रहय, तमसायल रहय, खिन्न रहय तँ कोनो व्यक्तिकेँ चिट्ठी नहि लिखी । चिट्ठी एकदम शान्त चित्त आ निर्मल हृदयसँ लिखक चाही । अहाँ ओना कठोर भाषामे बहिनाकेँ चिट्ठी देलियनि एहिपर तँ अहाँक

बहिनपा छुटियो जा सकैत छल । धन्यवाद दी अहाँक बहिनाकेँ जे ओ बुझनुक जकाँ काज कयलनि ।' हय बहिना, हम अपराधी जकाँ सभ बात सुनैत रही । आबसँ हम सप्पत खाइत छी जे बिना बिचारने चिट्ठी लिखी ।

हय बहिना ! सिजनियाँक हाथेँ पठयबा लेल जे हम चिट्ठी लिखने रही से सत्ते सिजनियाकेँ नहि दऽ सकलिऐक । बात ई भेलैक जे हम कनबा-खिजबामे रहि गेलहुँ आ ओ चिट्ठी ओछाओनक चद्दरि तरमे रहि गेलैक । से कहियो मोने ने पड़ल । तोहर चिट्ठी भेटलाक बाद एक दिन ओछानओकेँ सुखबा लेल रौदमे दैत रहिऐक तँ ओ चिट्ठी भेटल। जी तँ धक दऽ रहि गेल । ओहो चिट्ठी एही संग पठा दैत छियह, कमसँ कम ओहि दिन धरि हम कोन दशामे रही से पता चलि जयतह ।

बाँकी बचल चौदह टा चिट्ठी, से ओ की भेलैक से भगवाने जानथि । खसयबाक लेल तँ हम तोरा पाहुनेकेँ दैत छलियनि । ओ तँ कय बेर कहबो कयलनि जे अहाँ तँ मारि चिट्ठी दैत छी खसयबाक लेल आ पोस्ट आफिससँ अनबाक लेल तँ चिट्ठी एकोटा ने भेटैत अछि ।' हय बहिना, हमरा तँ होइत अछि जे अपना गाममे डाकपीनसँ क्यो चिट्ठी लऽ लैत अछि । हय, अनकर चिट्ठी फाड़ि लेलासँ आ मारि देलासँ लोककेँ कोन फल भेटैत छैक ? तोँ भैयाकेँ कहियहुन जे डाकघरमे अपने जा कऽ बुझथिन । एहन ठाम तँ डर ने मानक चाही !' हय बहिना, तोरा के कहलकह अछि जे हम दुब्बरि भऽ गेलहुँ ? तोहर पाहुन कहैत रहैत छथि जे अहाँ दिनो दिन मोटायलिए जाइत छी ।

हय, ओना तँ सासुरे थिकैक । कतबो घर भरल रहौक तैयो खयबा-पिउबामे असौकर्य होइते छैक। अपने खयबामे कोनदन रंगक बूझि पड़ैत छैक । एहि ठाम तँ बूझि पड़ैत अछि जेना भरि दिन मुँह चलिते रहैत अछि । कखनो हाथ नहि सुखाइत अछि जेना। ताहिपरसँ सेयाख ने ई जे गाम भरिक जतेक आइ-माइ औतीह तनिका आगाँ घरक लोक यैह बात पसारि देथिन जे कनियाँ एको रत्ती ने खाइत छथि। सुग्गा जकाँ टोङि कऽ छोड़ि दैत छथि । हय, सुग्गा जकाँ टोङब तँ हम जीब कोना ? तखन हँ, खयबो करब तँ पेटे भरि ने, ओहिसँ फाजिल तँ नहि । हम जेहने अपना गामपर छलहुँ तेहने एहू ठाम छी, दुब्बरि-तुब्बरि नहि छी । एहि लेल चिन्ता नहि करिहह ।

हय बहिना, तोँ तँ बुढ़ियामैयो जकाँ की-कहाँ ने लीखि गेलीह । तोरा चिट्ठीसँ तँ एहन बूझि पड़ल अछि जेना तोरा अपना गामसँ मोन उचटि गेलह अछि, मुदा हमर मोन तँ अपना गामेपर लागल अछि। तखन एहि ठाम जखन रहबाक अछि जिनगी भरि तँ अपनाकेँ एही ठाम जकाँ बनाबऽ पड़त । से बात बुझितो अपन मोन नहि मानैत अछि जे ई अपने घर थिक। बूझि पड़ैत अछि जेना थोड़ेक दिनुक लेल एहि ठाम अयलहुँ अछि आ फेर चल जायब ।'

बहिना हय ! एकटा बात तोरा लिखबा लेल छलियह । एहि ठाम तँ सभक हुड़बा

जेना हमही भऽ गेलिऐक अछि । जे अबैत अछि से एक हुड़पेट देने जाइत अछि, जेना हम कोनो ढेलमारा गोसाँइ होइ। खास कऽ मायकेँ आ बाबूकेँ लोक बड़ गारि पढ़ैत छनि। बड़ असर्ध-असर्ध बात सभ हुनका लगा कऽ बजैत रहैत छनि । हमरा ई नहि नीक लगैत अछि । कखनो-कखनो तँ होइत अछि जे उनटा कऽ हमहू कहि दिऐक, मुदा कहैत छी जे रहह हे मोन ! सहि लैत छी । आब तोँही कहह जे हम सभ मनुक्ख नहि छी जे ऐना कहैत जाइत छथि ।

एक दिन एकटा कूकुर आबि कऽ अङनाक मोखा लग बैसल रहैक । सौंसे आङनमे लोक सभ बाबूक नाम लऽ कऽ बाजऽ लगलनि जे फल्लाँ बाबू आयल छथि, पीढ़ी-पानि दियनु । उमादाइ आबि कऽ कहलनि जे अहाँक बाबू आयल छथि। हम हुलकी दऽ कऽ देखलहुँ तँ ओ कूकुर अजेगर जकाँ बैसल ।

एक दिनक आरो गप्प लिखैत छियह । एकटा बिलाड़ि देहरिपर दऽ चल जाइत रहैक कि पीसी कहलथिन जे ओमहर कतऽ जाइत छथिन समधिन ! बेटी ओहि घरमे बाट तकैत छथिन । आब तोँही कहह जे ई सभ खराब बात छैक कि नहि ? हमरा बेसी तामस लहरत तँ हम बाजियो देबनि गोटेक दिन ।' हय बहिना, माय-बाबूकेँ कहैत नहि छहक जे हमरा लऽ जायत ? हम एहि ठाम एहिना किलोल करैत रहब की ? उतारा जल्दी दिहह । **–तोरे बहिना**

**21 [ नैहरसँ ]**

**हय बहिना !**

तोहर चिट्ठी भेटल । आब तोहर चिट्ठी आन ककरो हाथमे नहि पड़ैत छैक । तोँ पहिने हमरापर तमसायलि छलीह । ओही तामसमे चिट्ठी लिखने छलीह, पाछाँ तोरा ओहि लेल मोनमे दुखो भेलह । मुदा हम कहैत छियह जे एहिमे दुख करबाक कोनो काज नहि। संगी-बहिनपामे एहिना चलिते रहैत छैक । तोहर चिट्ठी पढ़ि कऽ, तोहर तामस देखि कऽ हमरा कनेको छोह नहि भेल ।

हय बहिना, तोँ जतेक चिट्ठी लिखलह तकर जे उतारा नहि भेटलह तँ तामस होयब उचिते छलह; मुदा एतऽ की सभ भेलैक से तँ बूझि कऽ विचित्रे लगतह । हय, तोहर पठाओल चिट्ठीसभ भैयाक हाथमे पड़ैत छलनि । ओ हमर नाम देखि कऽ बुझैत छलाह जे तोहर ओझा हमरा चिट्ठी लिखने होयथुन, तँ ओ संकोचेँ अपने दैत नहि छलाह । ओ लऽ जा कऽ भौजीकेँ दऽ दैत छलथिन । भौजीक बुद्धिक संबंधमे तँ तोरा बुझले छह जे ओ कतेक बिसरभोरि छथि ! हय, हुनका जखन ईहो बात ने मोन रहैत छनि जे ओ खयलनि कि नहि, तखन आन बातक के कहय ! हय, एक दिन तँ भातक अदहन दऽ कऽ भरि भानस खाली पानिमे आँच दैत रहलीह, जखन हम भनसाघर गेलहुँ आ अदहनकेँ उधियाइत-हहाइत देखलिऐक तँ कहलियनि जे सीधा नहि लगौलिऐक अछि की ? एहिपर ओ कहलनि जे– आब तँ सिझलो होयतैक ।' हमरा हुनकर बात सूनि कऽ हँसी आ तामस दुनू भेल । हम कहलियनि जे लाड़ि कऽ देखियौक तँ ।' ओ जखन लाड़लथिन तँ दाँत निपोड़ैत बजलीह जे जाह, अय

फूलदाइ ! चाउर तँ हम लगयबे बिसरि गेलिऐक । आब हम की करिऐक ?'

हम कहलियनि— अहाँ तँ एक दिन ईहो बात बिसरि जायब जे ककर बोहु-बेटी छी । बाट चलैत कोनो मौगी-मनुसाकेँ अपन माय-बाप बना लेब । लाउ, ओरिया कऽ सभ वस्तु, हम भानस तर बैसैत छी ।'

हम भानसतर बैसलहुँ आ ओ आन काज कयलनि तखन भानस भेल । ई हाल तँ सभ दिनुक अछि । कहियो दालि-तीमनमे दू-दू बेर नोन दऽ देथिन आ कहियो नोने ने देथिन । कहियो भातेमे नोन दऽ देथिन । जाहि दिनसँ दुखित पड़लीह ने, ओही दिनसँ ओ एना बिसराहि भऽ गेलीह अछि । एहि लेल ओ भरि दिन बाते सुनैत रहैत छथि, मुदा ओहो बेचारो की करथि ? अपना हाथक बात रहनि तखन ने ? भरि दिन ओ हमर गोंझनौट धयने रहैत छथि । कोनो बात होयतैक तँ हमरे पूछि देतीह जे— फूलदाइ, ई काज भेलैक ? फूलदाइ ! ओ काज हम कयलिऐक ?

एक दिन तँ ओ एही भासितपर भरि दिन सहैत रहि गेलीह जे ओ खा लेलनि। साँझमे हम कहलियनि जे अहाँ खयलिऐक नहि ?' एहि पर ओ थोड़ेक काल चुप रहि कऽ बजलीह जे मोन तँ नहि अछि, भरिसक खा लेने होयबैक।

हम कहलियनि जे— खायक तँ ओहिना झाँपल राखल अछि, खयलहुँ कखन ?' ओ बजलीह— हँ अय फूलदाइ, सोआइत आइ भरि दिन हमरा भूख लागल छल ?' मारि कहूँ दवाइ-वीरो भऽ रहल छनि । डाकदर कहैत छनि जे बड़ बेसी कमजोरी छनि ।

तँ हम तोहर चिट्ठी दऽ लिखैत छलियह । भौजी तोहरबला लिफाफ लऽ कऽ कतहु-कतहु राखि दैत छलथिन आ हमरा कथी लेल देतीह ।' तोहर चिट्ठी ओहि दिन संजोगेसँ हमरा हाथ आयल । हम जे तोरा चिट्ठी लिखलियह से आशबाट तकैत रही जे तोँ ओकर उतारा अवस्से पठयबह । हम सभ दिन डाकपिउनक बाट देखिऐक । डाकपिउन अयलैक तँ भैयाक नाम धऽ कऽ सोर पाड़लकनि। मुदा ओ नहि रहथिन तँ हमही लऽ अनलहुँ ।

ओहिमे जखन तोहर राग-उपराग देखलहुँ तँ छगुनता लागि गेल । दोसरो तेसरो चिट्ठीमे ओतबे बात छल । तखन हम भैयाकेँ कहलियनि जे— बहिना ओतऽसँ हमरा चिट्ठी सभ अबैत अछि से बाटमे केओ मारि दैत छैक । कनी डाकखानामे जा कऽ बुझितिऐक ।' भैया कहलनि-किएक, तोहर चिट्ठी भेटलह अछि नहि की ?

हम कहलियनि— कहाँ भेटल अछि आ बहिना मारि तमसा कऽ लिखलक अछि जे पन्द्रहटा चिट्ठी पठौलियह अछि ।' ई कहि हम तोहरबला चिट्ठी धरा देलियनि । ओ भभा कऽ हँसि देलथिन— तोहर तँ सभटा चिट्ठी हम अनलियह । वैह बकलेलही रखने होयतह । पुछहक-पुछहक । हमरा तँ होइत छल जे ओझाजी चिट्ठी पठौलथुन अछि ।' हम थकमकायलि सनि ठाढ़ि रहि गेलहुँ । फेर हम दौड़लि भौजी लग गेलहुँ। कहलियनि

जे अय भौजी ! अहाँकेँ हमरासँ कोनो सतुरा-बैरी छल जे एना हमरा संग कयलहुँ ?

ओ अकचकाइत अपन सन मुँह बनौने बजलीह– अय फूलदाइ ! हम कहाँ-किछु कयलहुँ अछि ? की भेल जे एना तमसायलि छी ?

–अहाँकेँ एहिना रहैत अछि । बजैत छी कोना, जेना किछु बुझले ने होअय ?

–सत्ते, हमरा एकोरत्ती ठेकानपर नहि अछि जे हमरासँ कोन अपराध भेल ।

हम कहलियनि– हमर बहिनाबला लिफाफ जे भैया देलनि से अहाँ किएक धऽ रखलहुँ ?' हमर बात सुनिते कतहुसँ प्राण पलटलनि– हँ अय दाइ ! अहाँक भैया हमरा कय दिन ने देलनि, कतहु-कतहु कऽ राखि दैत छलिऐक से देबाक सुरते ने रहल। तकिऔक ने एही सभमे, कोनो ठाम राखले होयतैक ।

हय बहिना ! ने लोहक दोख, ने लोहारक दोख-सभ दोख लोहरसारिक । तोँ चिट्ठी लिखलह आ उत्तर नहि भेटलह तेँ तामस, हमरा चिट्ठी भेटल नहि तेँ रोख। मुदा बीचमे तँ ओझरौट लगा देलक ई भुलकरी मौगी । भौजोकेँ हम कोनो दशा बाँकी नहि रखलियनि । ओ केहन, तँ सभ किछु गटर-गटर सुनैत रहलीह । हमरो दया लागि गेल तँ भरि पाँज कऽ पकड़ि पलङपर बैसा देलियनि, ने तँ भरि दिन ठाढ़िए रहि जइतथि । भगवतीसँ मनबैत छी जे तोँ आ पाहुन खूब आनन्दसँ रहह । **–तोहर बहिना**

**22 [ सासुरसँ ]**

**हय बहिना !**

तोहर चिट्ठी भेटल । फेर तँ तोँ हमरे बहिना ने । हय, तोँ जे लिखलह जे हमरबला सभ चिट्ठी भेटि गेलह से बूझि बड़ हर्ख भेल । हय, लोकके अपना संबंधीक नोकरी लगबाक समाद सूनि जेहन खुसी होइत छैक तेहने खुसी हमरो भेल ।

हय बहिना ! भौजी जे हमरबला चिट्ठी ओना कऽ बिरहा देने छलीह से ओ केहनि भथम्मरि छथि ! हुनका हमरे सभसँ सतुराबैरी छलनि जे ओ सधौलनि अछि! हुनकापर हमरा बड़ तामस भेल छल तोहर चिट्ठी पढ़ि कऽ, मुदा से एक मोने । दोसर मोने विचारलापर हुनकापर हमरो दया भेल जे भगवान कोन मति कऽ देलथिन ? हय, हुनकर बिसरभोरबला दुख तँ ओही बीचे भेल रहनि ने, से एखन धरि नीक नहि भेलनि अछि?

कोना-कोना कऽ चिट्ठी सभ भेटलह से तँ लिखबे ने कयलह । हय, ओ चिट्ठी सभ पढ़लह, पढ़ि कऽ मोनमे की सभ उपकलह, केहन लगलह हमर चिट्ठी से सभ तँ लिखलह नहिये ने । बड़ मोन लागल अछि जे हमर बहिनाकेँ हमर चिट्ठी सभ केहन लगलैक । तोँ हमरा चिट्ठीक उतारा जल्दी दिहह आ फड़िछा कऽ सभ बात लिखिहह। बड़ मोन लागल अछि ने । हय, हम तोरा पाहुनकेँ कहलियनि जे– हमर लिखलाहा चिट्ठी सभ बहिनाकेँ भेटि गेलैक ।

ओ चौंकि कऽ कहलनि जे– भेटि गेलनि ? कोना भेटलनि ? एते दिन लिखैत

छलीह जे भेटबे ने कयल आ आब सभ भेटि गेलनि ? की बात छलैक ?

— छलैक एकटा बात ।' हम कहलियनि । ओ कहलनि जे– की बात छलैक से हम नहि बुझिऐक की ?' –'ऊहुँ' हम मूड़ी डोलबैत कहलियनि– नहि, अहाँक बुझऽबला बात नहि छैक।' –किएक, हम की बिगाड़लहुँ अछि जे हमरा नहि कहब ?'

ओ मारि कहूँ नेहोरा करऽ लगलाह । हम कहलियनि जे– हम किन्नहु ने कहब ।' एहिपर ओ रुष्ट भऽ गेलाह । हुनकर तँ ई पुरान अभ्यास छनि जे छनेमे खुसी रहताह तँ खूब रहताह आ छनेमे कनेको टा बात लऽ कऽ रुष्ट भऽ कऽ मान कऽ बैसताह । हय, हमरा तँ हुनका माने–मनौती करैत–करैत समय गुदस्त भऽ जाइत अछि । भरि–भरि राति ओ जिद्द बान्हि लेताह ने । से चिट्ठीबला गप्पपर ओ रुष्ट जकाँ होइत कहलनि जे– आबसँ अहाँक चिट्ठी पोस्ट आफिसमे खसयबो ने करब आ ने आनि कऽ देबे करब ।' हम तँ मोनमे बिचारलहुँ जे भेल आब आपठ सुरू । आब ई राति भरि हमरासँ खोसामदि करबौताह ।

हम कहलियनि जे हमरा कहबामे तँ कोनो छति ने, मुदा अहाँ तँ सूनि लेब आ फूटल ढोल जकाँ सभकेँ कहि अयबैक । काल्हिसँ अहूँ हमरा खौंझायब आ लोकोसभ खौंझाओत ।' ओ कहलनि– हमरा अहाँ एहन अनढनाह बुझैत छी ? जैह बात कहबा योग्य होइत छैक सैह ने कहैत छिऐक । सेहो मनोरंजने लेल ने । एहि लेल तँ नहि जे अहाँकेँ ओहि बातसँ दुख होअय आ कचोट पहुँचय ।'

—हम अनढनाह नहि कहैत छी । मुदा लोक सभ बूझि लैत छैक तँ खिस्सा करऽ लगैत छैक । आङनमे बैसि कऽ लोक सभ पघरा–पघरा कऽ बात बाजऽ लगैत छैक तँ हमरा केहन अधलाह लगैत अछि से तँ अहाँ बुझिते ने छिऐक ।' हम एके साँसमे हुनका कहि देलियनि । ओ कहलनि– जँ अहाँकेँ अधलाह लगैत अछि तँ काल्हि सभकेँ डाँटि कऽ कहि दैत छिऐक जे अहाँक संबंधमे क्यो किछु ने बाजौ।'

—हे भगवान् ! हम अहाँकेँ से तँ नहि कहैत छी जे सभकेँ रोकि दियौन । अहाँ जा कऽ रोकि देबनि तँ ओ सभ मोनमे की कहतीह ? आ दुख कतेक होयतनि ?' हम बजलहुँ ।

ओ कहलनि– अहीं जैह बात कहैत छी तकरे काटियो दैत छी ।'

—अच्छा छोड़ू ई बात सभ' –ई कहैत हम हुनका सभ बात कहि देलियनि जे तोरा हमरबला चिट्ठी किएक ने भेटलह आ फेर कोना–कोना कऽ भेटलह । ओ सुनैत रहलाह आ अंतमे कहलनि जे– अहाँ सभ तँ जासूसोक कान कटलहुँ। होइत–होइत अहाँ सभ अंतमे चिट्ठीक पता लगाइये लेलहुँ । हय, आब तोहर चिट्ठीपर हमर सुरता लागल रहत से फुरती देखबिहह । तोँ हमरा मायकेँ कहबो ने करैत छहक जे लऽ जायत । आब एहि ठाम पिजरामे बन्द सुग्गा जकाँ बुझाइत अछि । अन्न पानि विष सन लगैत अछि । होइत अछि जे खूब कानी । **—तोरे बहिना**

तोहर चिट्ठी भेटि गेल, खूब प्रसन्नता भेल । तोहर चिट्ठी पढ़बामे बड़ मोन लगैत अछि । हमरा तँ होइत अछि जे हमर बहिनाक विरोग भरल चिट्ठी जँ आन क्यो पढ़त तँ ओकरो बड़ मोन लगतैक । हय, संसारमे सभ मौगी सासुरे बसैत अछि । सासुर तँ स्त्रीगणक शोभा थिकैक । आ तोँ छह जे ओकरा पिजरा बुझैत छह । हय बहिना, हय, वैह पिजरा पाछाँ चलि कऽ तोरा जिनगीक रसमे मीलि नोन-पानि जकाँ समरस भऽ जयतह । चारियो दिनुक लेल पाछाँ नैहर अयबह तँ कहबहक जे गामपर सभ वस्तु इलटैत-बिलटैत होयत । छिजाव होइत होयत । एखन बरु ओहि सासुरकेँ बिखे बुझैत रहह, मुदा एक बेर नैहर अयलाक बाद वैह सासुर अमरितोसँ बाढ़ि कऽ बूझि पड़तह । हय, तोँ तँ आँखि-पाँखिबाली भेलीह, समर्थि छह, मुदा तोरासँ छोटि-छोटि छौंड़ी सभ जे सासुर गेलैक अछि, से कोना सासुर बसतैक ? ओकरा लोकनिकेँ तोरा जकाँ नैहरलेल आफन तोड़ैत कहाँ देखैत छिऐक ?

हय, तोँ जे हमरा लिखलह जे नैहरसँ विराग भऽ गेलह से ई सभकेँ होइत छैक । एक बेर एहि ठाम आबि जयबह तखन सभ बात फड़िछा जयतह जे नैहरसँ लोकक मोन नहूँ-नहूँ कोना मोट होइत जाइत छैक । कोना कऽ बेटी नैहरक हेतु विरान भऽ जाइत छैक, से एक बेर आबह तखन बुझबहक । तोँ जे एना कनैत छह से कानह-खीजह जुनि । एना कनने लोक सभ खिस्सा करतह । कहतह जे कनियाँ नेपियाहि छैक । की ई नीक लगतह ?

हय बहिना ! एक बात बूझि कऽ हमरा बड़ दुख भेल । ओहि ठामक लोक सभ जे धूर्त्तता करैत छह, हँसी करैत छह ताहिलेल तोरा मोनमे दुख होइत छह आ ओहि बात सभक रोख होइत छह । हय, ई सभ एहिना होइत छैक आ छैक ई सोआरस । एहि सभ लेल मोनमे रोख जुनि करी । एहि सभमे तोरा खुसी होयबाक चाहियह । जकरा मानैत छैक तकरेसँ ने हँसी करैत छैक ? अँय हय ! तोँ लिखलह अछि जे एक दिन बात सभ उनटाइयो देबनि से बड़ अन्हेर करबह ने । जे सोचलह से सोचलह, आब सपनोमे एहन बात नहि अनिहह । हय, कहबी छैक जे बात कही जमायकेँ जे उनटाबय नहि, बात कही पुतोहुकेँ जे दोहसाबय नहिं । सासुरमे दूटा बोल सुननहि, कनेक लऽत भेनहि लोक सतोजनी रहैत अछि ।

हय बहिना ! ई तोरा लोकनिकेँ की भऽ गेलह अछि जे छोटो-छीन बातपर एना लड़ि लैत जाइत छह ? एना जे दुनू बेकती रूसा-फुल्ली करैत रहैत छह से किएक ? हम पाहुनकेँ चिट्ठी लिखियनि की ? हय, पाहुन तोरा खूब मानैत छथुन ने ? दुनू गोटा मेल-जोलसँ रहिहह आ पाहुनकेँ मना कऽ रखिहह । जिनगी भरि तोरा पाहुनेक संग रहबाक छह । नैहर आ माय-बाप दु-चारिए दिन ओलाबिलम दैत छैक । जिनगी निमाहैत छैक सिनुरदाते ।

हय, तोहर पुरना चिट्ठी सभ जे भेटल से कथा सभ तँ लिखनहि छलियह । खाली ओकरा एकट्ठा करबामे बड़ परिश्रम भेल । एक टा कोनो खोधलीमे, तँ दोसर चिट्ठी

कोठीक धनहारीमे । मुँहपोछनीमे, ओछाओन तऽर, कोनो तौलामे तोहर चिट्ठीसभ बन-राहड़ि भेल । सभकेँ ताकि ताकि एकट्ठा कऽ रहल छी । पढ़बामे खूब मनगर लगैत अछि । जेना कोनो उपन्यास पढ़ैत होइ । जेना कन्यादान, दुरागमन, भलमानुस आ मधुश्रावणी, वीरकन्या आ नवतुरिया पढ़बामे मोन लगैत छल तेहने लगैत अछि तोहर ई चिट्ठी सभ । एखन सभ नहि पढ़लहुँ अछि। आरो सभ कुशले कुशल। तोहर ओझाक कोनो चिट्ठी-पत्री ने । तोँ उतारा जल्दी दिहह । **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **24 [ सासुरसँ ]**

तोहर चिट्ठी भेटल । चिट्ठी पाबि कऽ जे हुलास हमरा होइत अछि, से तोँ ओहि ठाम रहि कऽ नहि बुझबहक । ओ हमहीं बुझैत छिऐक । तोँ जे लिखलह जे सासुर स्त्रीक शोभा थिकैक से बात तँ ठीक, मुदा ई बात किएक ने बुझैत छहक जे नैहर जन्म-धरती थिकैक । एहि ठामक वस्तु सभसँ सिनेह जोड़ऽ पड़ैत छैक आ ओहि ठामक वस्तु सभक सिनेहक बीच तँ जन्मे भेल अछि । एहि ठाम तँ रहबाक अछि तेँ छी आ रहबो करब, मुदा जँ हमरा जिनगी भरि ओही ठाम रहऽ देअय तँ हम खुसीसँ रहब । जानि नहि, तोरा अपना गामसँ कोन झरकी लागल छह जे नहि रहऽ चाहैत छह । बूझि पड़ैत अछि जेना ओहि ठामसँ मुहछी मारि देने छह ।

हय, आन छौंड़ी जकाँ हम भोकासी पाड़ि कऽ कहाँ कनैत छी ? तखन एहनो नहि जे कनियाँ कानय नहि, लोकनियाँ भोकारि पाड़य । जखन कोंढ़ फाटि जाइत अछि तँ आँखिमे नोर ढबढबा जाइत अछि । तोँही कहह जे एहूसँ हम गेलहुँ ?

एहि ठाम जे लोक धूर्त्तता करैत अछि ताहि संबंधमे हमरासँ अनट बात लिखा गेलह । हम कतहु हिनका लोकनिक बातकेँ उनटबियनि ? तोहर बहिना बताहि नहि छह । हय, तोरा पाहुनसँ हम कहाँ लड़ैत छियनि ? हम तँ सतत मुहेँ धयने रहैत छियनि । तखन वैह कोनादान करैत रहैत छथि । हमरा बूझि पड़ैत अछि, जेना हुनका हम नीक नहि लगैत छियनि । सदिखन रुसिते रहताह । एमहर आबि कऽ हुनका व्यवहारसँ एहन बूझि पड़ैत अछि जेना ओ हमरा दुरदुरबैत होथि । चारिम-पाँचम दिन बड़ गरम होइत छलैक तँ हम हुनका पंखा हौंकैत रहियनि। ओ हमरा कहलनि जे अपने पंखा हौंकि लियऽ । हमरा बसात नहि चाही ।' एक दिनुक आरो गप्प कहैत छियह । कोनो गप्प हम कहलियनि ताहिपर हमरा झाड़ि कऽ बाजि लेलनि । पियास जँ लगतनि तँ हमरा हाथक पानि नहि पिउताह । अपनेसँ घैलसँ ढारि कऽ पिउताह। आब एहि बात सभकेँ तोँ जे बूझह । हमर जे दोष होअय ।

हय बहिना ! अपना गाममे आम-ताम फड़ल छैक कि नहि ? एहि ठाम तँ आम सोहरल छैक । आङनघर आमसँ महकैत रहैत छैक । भरि आङन अमोट पसरल आ ओहिपर बिढ़नी आ माछी भिनकैत ! हमरा बड़ असर्ध लगैत अछि ओ देखि कऽ। हय, तोँ तँ खूब गाछी जाइत होयबह ? कय बरखपर तँ एहि बेर फड़लैक अछि । हय बहिना !

एहि बेर गाछीमे मचकी तँ खूब लागल होयतैक । तोँ खूब आस दऽ कऽ झुललीह अछि कि नहि ? एह ! कतेक सुन्नर लगैत छैक मचकीपर बैसि कऽ बरहमासा गयबामे ! जखन कऽ कारी-कारी मेघ अबैत होयतैक, कनेक-कनेक डोली बहैत होयतैक, पाकल-पाकल आम धबधब खसैत होयतैक आ लोक सभ दौगि-दौगि कऽ बीछैत होयत ! आ जखन झमझमा कऽ पानि बरिसऽ लगैत होयतैक तखन मचानपर बैसि कऽ तोँ सभ बरहमासा उठबैत होयबह । हय, ओहि हेड़मे हमरा नहि रहने तोरा दुख नहि होइत होयतह ? प्रीतम, गंगाजली, बेला, अकाशफल आ रामजोड़ीकेँ हमर खगता नहि बूझि पड़ैत होयतैक ? आ किएक बूझि पड़तैक, कहैत छैक जे आँखिक पाछाँ पीठ पछुआड़ । हमरा तँ मोन होइत अछि जे उड़ि कऽ ओहि ठाम चल जइतहुँ ।

बहिना हय, सुनैत छिऐक जे सभा खतम भऽ गेलैक । अपना गाममे सभागाछीसँ ककर-ककर बियाह भेलैक अछि ? एहि बेर के सभ मधुश्रावणी पुजतैक हय ? एहि ठाम सेहो उमादाइक विवाह होमऽ लेल छलनि । कय ठाम कथा लगैत छलनि, मुदा कहूँ स्थिर नहि भेलनि । बड्ड टाका मङैत छैक । आङनमे लोकसभ बजैत जाइत छलथिन जे जहिना हम एखन बेटाबलाक खुसामदि करैत छिऐक तहिना अपनो बेटाक प्रति कन्यागत सभक नाक रगड़बयबैक । तोरा पाहुनकेँ सभ कहैत छनि जे अहाँ तँ आदर्श विवाह कयलहुँ आ आब बहिनिक बियाहमे दतखिष्टी करैत रहू ! तोहर पाहुन मुँह बिधुऔने रहैत छथुन ।

भरि दिन एहि कोनसँ ओहि कोन करैत रहैत छी आर की करू ? कखनो-कखनो लोक मुँह देखबा लेल आबि जाइत छथि । कहियो-कहियो तँ देखनिहार सभक सोरमडीह लागि जाइत छनि । कोन-कोन जुगक बुढ़िया दीदी सभ एहि बेर आयलि छलथिन । सभकेँ गोड़ लगैत-लगैत तबाह रहैत छी । कय गोटा तँ सभ दिन मुँह देखबा लेल अबैत छथिन । आरो कुशल चाही । **–तोहर बहिना**

**25 [ सासुरसँ ]**

**हय बहिना !**

तोहर चिट्ठी भेटल । हलसि कऽ पढ़लहुँ । ओकर उतारा सेहो तुरन्त दऽ देने छलियह । तोहर आपसी चिट्ठीक बाट तकैत रहलहुँ । तोरा सुगबुगाइत नहि देखलियह तँ हमही उपकरि कऽ चिट्ठी दऽ रहल छियह । एहि ठाम हम कोना रहि रहल छी से कोना कऽ बुझबियह ? एमहर तोहर पाहुनक रंग-ढंग आने तरहक भेल जाइत छनि, से हमरा नीक जकाँ बुझबामे आबि रहल अछि ।

हय, जखन आङनमे टोल-पड़ोसक नव-नौतार छौंड़ी सब, मने हमरे-तोरे तुरिया सब आयल रहैत अछि, तखन कोनो-कोनो लाथेँ ओ आबि जाइत छथि आ बाजि दैत छथि– हे, बच्चीदाइकेँ बड़ नीक-नीक गीत सब अबैत छनि । गबितो छथि बड़ भास लगा कऽ । तोँहूँ सब सीखि लेबेँ से नहि ?' एहि पर सब लुधुकि जाइत अछि– भौजी, एकटा गीत गाउ ने । एकटा गीत गाउ ने जे हमहूँ सब सीखब ।' कहैत-कहैत बकछिहुलि

लगा दैत अछि ।

कहियो बाजि देताह– बच्चीदाइ कोबर बड़ बढ़ियाँ लिखैत छथि । हमरा तँ सासुरमे केओ केओ कहलक जे ई अपन कोबर अपने लिखने छलीह ।' ई कहि ठिठिया कऽ हँसि देताह आ आङनसँ झटकि कऽ चल जयताह । हुनकर एहन बोल सूनि कऽ हमर मन तँ जरि कऽ भुरकुस्सा भऽ जाइत अछि ।

केओ दाइ-माइ सब पूछि देथिन– कनियाँ मन-पसिन्न छथुन ने ? मिलान रहैत छह ने ?' हय बहिना, पुरान लोकक एहने-एहने खोद-बेद किएक रहैत छैक ? मुदा तोहर पाहुनक उतारा तँ आरो मनकेँ बेधि देबऽ बला होइत छनि जे– एह ! बच्चीदाइ सन बकलेल लोकतँ लालटेम लऽ कऽ ताकब तँ दुनियाँमे नहि भेटत ।

ई तँ दू लोकक बीचमे दूरि करौनाइ ने भेलैक ? ई नहि बुझैत छथिन जे लोक की कहत ? एक रत्ती संकोच नहि होइत छनि । एहि ठामक लोक तँ हमरा सत्ते बकलेल-ढहलेल बूझि लेत । एहिसँ तोहर पाहुनक कोन प्रतिष्ठा बढ़तनि ?

हय, तोरा मोन छह ने ? अपना ओहि ठाम कोना भरि दिन तोरा सब लग 'बच्चीदाइ बच्चीदाइ' रटना रटैत रहैत छलथुन ? मोने होयतह, चतुर्थीक परात जे तोँ सभ हुनकासँ पूछऽ गेलहुन जे रातिखन बहिनासँ की सब सभ गप्प भेल ? तखन ओ जबाब देने रहथुन– 'बुच्चीदाइ चुप्प' । हमर नामकेँ बिगाड़लनि से तँ फराके, जे पाछाँ सब गोटे मीलि कऽ हमर खिसियौनी बना लेने छलीह– 'बुच्चीदाइ चुप्प' । हम तोरा पाहुनकेँ कहनहुँ रहियनि जे– हम की अहाँसँ नहि बजैत छी जे अहाँ हमरा हरिमोहनबाबूक बुच्चीदाइ बना देलहुँ ? सौंसे गामक छौंड़ी सब परधान जोड़ि लेलक अछि ।'

ताहि पर ओ बाजल छलाह– तँ की, हम ई कहितिऐक जे बच्चीदाइ भरि राति हमरासँ खूब फदका करैत रहैत छथि ? तैयो तँ लोक कहबे करैत जे बच्चीदाइकेँ वरसँ बजइ बिना रहल नहि जाइत छैक । हम तँ ओहिना बहटारबाक लेल कहि देलिऐक जे जल्दी जान छोड़ि देत । ने तँ सभ खोधिया-खोधिया कऽ पुछैत रहैत जे की सब गप्प कयलहुँ, से कहू । पुछैत-पुछैत अकच्छ कऽ दैत ।

हय बहिना, उग्रतारा दाइकेँ तोहर पाहुनक ई चरजा सब अनसोहाँत लगैत छनि । ओ कहबो कयलथिन– बौआ ! एना जे की– कहाँ बजैत रहैत छहक, से किएक ? एहिसँ कनियाँक मनमे दुख होइत होयतनि ।' फेर ओ मायकेँ जाय कहलथिन– माय ! कनियाँक एकटा सुन्नर नाम राखि देबहुन, से नहि होइत छौक ? लोक हुनका नैहरेक नाम धऽ कऽ बजबैत रहतनि की ?' माय कहलथिन– तँ तोँही सब ताकि दहुन ने कोनो नीक नाम । जे नाम पसिन्न पड़ौक, ताहीसँ दू-एक दिन सोर करबऽहुन तँ सब वैह नाम कहऽ लगतनि ।'

उग्रतारादाइ कहलथिन– हमरा नहि, तोरा काज पड़तौक हुनकर नामक । हम तँ भौजी कि कनियाँ कहि कऽ काज चला लेब ।

हे हय, जेना परिवारमे नव बच्चा जनमैत छैक तँ ओकर नाम राखल जाइत छैक, तहिना एतऽ हमरो बूझह । एहन सन जेना हमहूँ नवे जनमलि होइ । हय, तोरो एहिना भेल छल होयतह ने ? तोहर सासुरक की नाम थिकह ? तोँ अपन सासुरक कतेक रास खटमधुर गप्प सब कहने छलह मुदा अपन सासुरवला नाम कहियो ने कहलह । ओकरा तोँ हमरासँ छपा गेलीह ।

हय, हमरा तँ सोचि-सोचि कऽ हँसी लगैत अछि जे एतेक दिन अपना गाममे सब बच्चीदाइ कहैत छल, मुदा एतऽ आब हमरा मनि, वती, मती, कुम्मरि, सुन्नरि, रानी, बहुआसिन, बहुड़ियामेसँ कोनो एकटा पदकेँ हमर नव नामक संग नाङड़ि बना कऽ सोर कयल जायत । मनमे होअऽ लागल जे हमरा सदच्छन ओ नाम ठेकानऽ-अकानऽ पड़त। अभ्यास तँ पड़ल अछि 'बच्चीदाइ' सुनबाक तेँ सदिखन ठेकानमे राखऽ पड़त जे आब हमर की नाम अछि । मनमे डऽर सेहो पैसि गेल जे नव नाम धऽ कऽ लोक सोर करय आ हम नहि बुझिऐक तँ लोक हमरा अकान-बकान, बकलेल-ढहलेल ने बूझऽ लागय । हय बहिना, हमरा तँ होइत अछि जे हमर बच्चीएदाइ नाम नीक अछि । हमर यैह नाम एतहु रहय तँ कोन बितय होयतैक ! हम उग्रतारा दाइकेँ दोसर दिन कहबो कयलियनि-हमर अपन नाम एहि ठामक लोककेँ अधलाह लगैत छनि की ?

ओ हँसैत कहलनि- अधलाह किएक लगतैक ? मुदा, से अहाँ किएक पुछैत छी ?' हम कहलियनि- ओहिना पुछलहुँ । हमर नाम बजबामे जँ कोनो ओझर होइत होइनि तँ सोझे कनियाँ कहलासँ सेहो काज चलि सकैत छैक ।

उग्रतारादाइ हमर बाम गाल पर दुलारक हल्लुक चटकन मारैत कहलनि- बताहि छी अहाँ ? नव बियाह-दुरागमन करा कऽ जे केओ अबैत अछि, से सब कनियेँ रहैत अछि। नमहर परिवारमे तखन सभ घरमे कनियेँ-कनियाँ भऽ जयतैक। स्त्रीगणक नैहरवला नाम नैहरेमे रहि जाइत छैक । सासुर गेला पर सभक नव नाम धयल जाइत छैक । बियाहलि बेटी जँ सासुर बसबाक बदला नैहरेमे बसि गेलि तखने ओकर नैहरवला नाम परचरल रहैत छैक । पहिने कन्यादानी बेटी सभक नैहरेवाला नाम रहैत छलैक । अपनो आङनमे कय गोट दीदी सब, बुढ़िया-बुढ़िया अबैत रहलीह अछि से ओहने सब छथि । गामक पुतोहुकेँ नैहरवला नामसँ सोर करैत अहाँ अपना गाममे ककरो सुनलिऐक अछि ? अय, जँ कोनो नाम नहि राखल जायत तँ लोक अहाँक गामेक नाम धऽ कऽ सोर करत-कहाँ छी अय फल्लाँगामबाली ! तखन ?' हमरा मनमे भेल जे अनेरे ने एकटा झंझटि बेसाहि लेलहुँ । एहिसँ बरु चुप्पे रहि जैतहुँ तँ नीक छल । उपसँ चुप भला ।

हय बहिना, तोहर पाहुन हमरासँ बिरुझल जकाँ बूझि पड़ैत छथि, ताहिमे हमरा कोनो सन्देह नहि अछि । मुदा कखन हुनकर मुँह बिहुँसल रहतनि आ कखन भौंह घोँकचल- से जानब हमरा लेल असंभय लगैत अछि । ओ भरि दिन एतबे चऽर-चित लैत रहैत छथि, जे के हमरा देखऽलय आयल, ककर केहन व्यवहार भेलैक ? हमरासँ,

कि हमरा दऽ के-की बजैत अछि, हम की बजैत छी, से जनबाक लेल जेना ओ सदिखन कनसो धयने रहैत छथि । तेँ कोनो बात हुनकासँ छपित नहि रहैत छनि। सासुरमे हमर एकटा नव नाम राखल जायत, से खबरि हुनका भेटिए गेल होयतनि । आब देखा चाही जे एकान्तमे भेट भेला पर की बजैत छथि आ की करैत छथि ।

हय, मनमे तँ बहुत रास बात घुरियाइत रहैत अछि जे तोरा लिखियह । मनक बात तोरा नहि कहबह तँ ककरा कहबैक ? तोरा खुलासा सब बात लिखि देलासँ मन जेना हल्लुक भऽ जाइत अछि । धैरज बन्हा जाइत अछि । मुदा जखन ध्यानपर अबैत अछि जे तोँ हमरा चिट्ठीक उतारा नहि दैत छह, तखन मन असोथकित आ झमान भऽ जाइत अछि । और की लिखियह ? अपन बहिनाक सुधि लिहह आ चिट्ठीक उतारा तुरन्त दिहह । बिसरिहह नहि । अनठबिहह नहि । तोरा हमरे सप्पत । **–तोरे बहिना**

**26 [ सासुरसँ ]**

**हय बहिना !**

तोँ हमर दू-दू गोट चिट्ठीक कोनो उतारा नहि देलह, ताहिमे तोहर कोनो दोख नहि। सब हमर भाग्यक दोख । हमरा तँ ई सोचैत-सोचैत मन हहरैत रहैत अछि जे हमरा जीवन भरि एही ठाम, एहिना रहऽ पड़त, एहिना सहऽ पड़त । भितरे-भितरे कूही होइत रहत । अपन लोकक मुँह देखबाक लेल मोन तरसैत रहत ।

हय, ई कोन रीति भेलैक जे लोक जन्म लेलक कतहु आ सौंसे जीवन बितौलक कतहु ? माय-बाप, भाइ-बहीन, बाबा-बाबी सन अपन लोक आन भऽ जाइत छैक आ आन गाम-ठामक लोक बलहुँ अपन बनि जाइत छैक । आन लोकसँ सम्बन्ध भेला पर कतहु सहजहिं सिनेह अँकुरि कऽ लतरि-पसरि जाइत छैक आ कतहु करमक लिखलाहा बूझि सिनेह-सम्बन्धकेँ उपरका मनसँ जीवन भरि निमाहऽ पड़ैत छैक । नहि निमहला पर इनार-पोखरिमे धऽस दऽ दियऽ पड़ैत छैक । विधाताक ई कोन विधान थिकनि ? ओ स्त्रीगणेक संग एना किएक करैत छथिन ? पुरुख-पातकेँ तँ एना नहि होइत छैक ?

बहिना हय बहिना ! सब किछु बदलि गेल । लोक-वेद बदलि गेल । धरती बदलि गेल । गाम बदलि गेल । एतेक धरि जे नाम सेहो बदलि गेल । हय, ओहि दिन उमादाइ हमरा घरमे अयलीह आ हँसैत कहलनि– भौजी ! अहाँक नवका नाम धरा गेल । हमहीं अहाँक नाम फुरौलहुँ ।' हम उमादाइक हँसीमे हँसी मिलबैत पुछलियनि– से की ?

ओ कहऽ लगलीह– एह ! भरि घरक लोक जमा छल । अहाँक नाम विचारैत काल सब बुढ़िया-बुढ़िया नाम उचारैत छल । हम कहलिऐक जे भौजीक नाम पुरना ढब पर नहि रखैत जाहुन । आब पुरना नाम के लैत छैक ? भौजी हमर फूल सनि छथि तेँ हिनकर नाम फूलपर रखहुन 'कुमुदरानी'। सबकेँ ई पसिन्न पड़लैक । हमरा तँ ई नाम बड़ नीक लगैत अछि । अहाँ केँ केहन लागल ?

हम कहलियनि– अहाँकेँ नीक लागल, आनो गोटेकेँ नीक लगलनि तँ हमरो नीके

लागल ।' फेर उमादाइ पुछलनि– किएक ई नाम धयलहुँ से बूझब ?

हम कहलियनि– बुझा देब तखन ने बुझबैक ?

ओ कहऽ लगलीह– कुमुद फूल दिन भरि सिकुचल रहैत छैक आ रातिमे चन्द्रमाक उगला पर भकरार भऽ कऽ फुला जाइत छैक । अहूँ पोखरि सन एहि आङनमे भरि दिन समटल-सैंतल-सम्हारल रहैत छी आ रातिमे भैयासँ भेट होइत देरी हुलाससँ भकरार भऽ जाइत छी, तेँ अहाँक नाम भेल कुमुदरानी... ।' ई कहैत उमादाइ हिहियाय लगलीह ।' हम कहलियनि– दाइ ! आब अहूँ रसगर गप्प सब खूब बूझऽ लगलिऐक अछि । आब....' मुदा ओ हमर आधा-छिधा गप्प सुनलनि कि खिखियाइत घरसँ पड़ा गेलीह ।

हय, तोहर पाहुन तँ किछु सुनल ताकथि । हमर नवका नाम सुनलनि तँ हमरा सुना-सुना कऽ अनेरो 'कुमुदरानी' 'कुमुदरानी' रटना रटऽ लगलाह । सूनि-सूनि हमरा संकोच होइत रहल आ हुनका कोनो संकोच नहि । हय, एतबय नहि । ओ हमर नामकेँ ऐंठि-बिगाड़ि कऽ बाजऽ लगलाह 'कुदरानी' 'कुदरानी' । से कोन ठाम बाजी तकर कोनो धरीधोख नहि । हमरा हुनकर एहि चालिसँ एक दिन बड़ तामस उठल, की बूझि लेलनि अछि हमरा ? हमरा जेना एकटा खेलौनियाँ बना लेलनि अछि ।

हय बहिना, तोरा एकटा बात पहिने नहि लिखने छलियह । आब लिखैत छियह। तोहर पाहुन सभ दिन कोनो ने कोनो लाथेँ आङन अबैत छलाह । जेँ कि अबैत छलाह कि हमरा दुनू गोटेक नजरि मीलि जाइत छल । हुनको बिहुँसी आबि जाइत छलनि आ हमरो बिहुँसी आबि जाइत छल । बस, हुनका एतबे चाहियनि । जँ नहि केओ रहलैक तँ ठोर पटपटा कऽ किछु गप्पो कऽ लैत छलाह । हय, भनहिं हुनक भौंह घोँकचल रहनु मुदा एखनो ओना करितहिं रहैत छथि ।

ओहि दिन ओ दू-तीन बेर घुरिया-घुरिया कऽ अयलाह । गोटेक बेर कनेक ठोरो पटपटौलनि मुदा हम हुनकासँ ने नजरि मिलौलहुँ, ने हँसलहु, ने ठोर पटपटौलहुँ। जेँ कि ओ आबथि कि हम मरौत काढि कऽ बैसि रही, ने तँ टरि कऽ उग्रतारादाइ लग, की माये लग चल जाइ । तोहर पाहुन बेचारेकेँ मुँह अपन सन भऽ जाइत छलनि । रातिमे जखन ओ अयलाह तँ सभसँ पहिने यैह जिज्ञासा कयलनि जे– दिनमे अहाँ एना किएक छिटकैत छलहुँ ?' हम मुदा किछु बजलहुँ नहि । दोसर दिस मुँह घुमा कऽ चुपचाप ठाढ़ि रहलहुँ । ओ फेर पुछलनि– की बात छैक जे अहाँ एना चुप छी ? किछु बजैत नहि छी ? बड़ रुष्ट बूझि पड़ैत छी । की बात ?'

ओ सगरियो राति बौंसैत-मनबैत रहलाह आ हम मान कयने रहलहुँ । हमरा बजबाक लेल जखन बड़ खोभाटलनि तँ एक बेर हम गोँहछि कऽ कहलियनि– बुच्चीदाइ चुप्प, कुदरानी आ की-कहाँ बनौनहि छी । हमरा सन अलबौक, बकलेलि, ढहलेलि लोक लालटेमो लऽ कऽ तकने नहि भेटत । एहन लोक कोन मुँहसँ बाजत? की बाजत ?

घेघाहि, बताहि– जेहन, जे छी, से छीहे । अहाँक माथ पर बथा गेलहुँ। कपारमे ठोका गेलहुँ । गराँक ढोल भऽ गेलहुँ । ई अहाँक भाग्यक दोख । एहिमे हम की करू ? मुदा एहन लोकसँ अहाँ नहि बाजब तँ अहाँक किछु बिगड़त नहि । कोनो खगता-बेगरता नहि होयत । निमाहि लऽ सकैत छी...।'

हम तामसमे और बजितहि जैतहुँ कि ओ भभा कऽ हँसि देलनि– वाह ! एही नान्हिटा बात लय एतेक तामस ? हमरा तँ होइत छल जे कोनो भयानक बात भऽ गेल।' ओ कनेक थम्हि कऽ बजलाह– ई बात सब तँ ओहिना हँसी-चौलमे बाजि दैत छलहुँ । एकरा अहाँ सत्ते बूझि लेलहुँ । बेस, आब नहि कहब कहियो । आब तँ मानि जाउ ।' एतबा कहैत ओ हमर हाथ पकड़ि लेलनि । हुनकर हाथ पकड़ब हमरा नीक लागल मुदा तैयो हम हाथ छोड़बैत कहलियनि– हमरा नहि कोनो काज अछि मानबाक ।'

एहि पर ओ गम्भीर भऽ कऽ बजलाह– हमहूँ बतहपनी कऽ बैसैत छी । बहीनदाइ कहने छलि । माय सेहो कहने छलि जे एना अलबल नहि बजबाक चाही। नामकेँ बिगाड़ि कऽ नहि बजबाक चाही । एहिसँ लोक हल्लुक भऽ जाइत अछि । मुदा हमरासँ तँ बजा गेल । त्रुटि भऽ गेल । अहाँकेँ कोनो बातसँ दुख होअय, से तँ हम नहि चाहैत छी । हमरा तँ होइत अछि जे आन अपरिचित गाममे आबि अपनाकेँ अनठीया नहि बूझी । अनचिन्हार लोकक बीचमे मन टौआइत नहि रहय । कोनो ने कोनो अनमाना लागल रहय । सदिखन खेलाइत-धुपाइत, हँसैत-बजैत, हलसैत-फुलसैत रही आ अपन गामक बिछोह-विरोगकेँ बिसरने रही. ..।' ई सब होइत-होइत तँ भोरे भऽ गेलैक । ओ मुँह बिधुऔने घरसँ बाहर चल गेलाह ।

हय बहिना, तोँ अपन पाहुनक मिट्ठ-मधुर बोलसँ भरमिहह नहि । एहन ओ कय बेर कऽ चुकल छथि । जे मिट्ठ से ठोरे मिट्ठ । हुनका मनमे किछु आने बात छनि, से हमहीं बुझैत छियनि । तोँ कहबह जे हमर बहिना कोना बुझैत छैक ? तँ सुनह । तोरा जे बेराबेरी दू-दू टा चिट्ठी लिखलियह से तोरा भेटलह कहाँ । हमरा लगमे टिकस वला लिफाफ सठि गेल छल, तँ सादा लिफाफमे तोहर चिट्ठी राखि, नाम-ठेकाना लीखि कऽ तोहर पाहुनकेँ देलियनि जे एहि पर टिकस साटि कऽ डाक घरमे लगा देबैक। हम आस-बाट तकैत रहलहुँ जे बहिनाक चिट्ठी आब आओत, आब आओत । तोहर कोनो चिट्ठी नहि पाबि निठोहर भऽ गेलहुँ तँ परसू रातिमे हुनका लगमे बजलहुँ जे बहिनाकेँ दू दू टा चिट्ठी देलिऐक मुदा एखन धरि कोनो उतारा नहि देलक अछि । ताहि पर जे ओ उत्तर देलनि से सूनि कऽ तामसेँ देह जरि कऽ कोइला भऽ गेल ।

ओ कहलनि– आहि रे बा ! डाकघरमे टिकस छलैके नहि, सठि गेल छलैक। तेँ लिफाफ डाकघरमे देलिऐक कहाँ । हमरे लगमे छैक ।

हय, तोँही कहह, डाकघरमे कतहु टिकस नहि होइक ? टिकसक अकाल भऽ गेलैक की ? हम बुझैत छियनि जे जरूरसँ जरूर हुनका मनमे हमरा लेल अभेलाक भाव छनि।

तँ हमर चिट्ठीकेँ अपना लग राखि लेलथुन । भेल होयतनि जे हम तोरा हुनका सम्बन्धमे कोनो अनट-विनट लिखने होयबह । अपन कयल लोककेँ अनेरे ने झलकि जाइत छैक । तोरा हमर चिट्ठी गेलऽहे नहि, से तँ हमरे करमक दोख ने भेल ! हय बहिना, ओ दुनू चिट्ठी एही चिट्ठीक संग दऽ दैत छियह । मुदा इहो लिफाफ तोरा भेटतह कि नहि से नहि जानि । जँ फेर ओ कहि देताह जे एखन धरि डाकघरमे टिकस अयबे ने कयलैक अछि; तखन हम की करब ? हम छी आन ठाम, आनक वशमे, अपन सक तँ चलत नहि ।

बहिना हय, हम तँ कोनो चिड़ैमारा द्वारा सिम्मरक वनसँ बझा कऽ आनल गेल ओहि सुग्गा जकाँ छी जकरा ओ कोनो धनिक लोकक हाथेँ बेचि दैत छैक । किननिहार ओहि सुग्गाकेँ तेहन पिजरामे बन्द कऽ दैत छैक जाहिमे ओकरा सरिया कऽ पाँखियो ने पसारि होइत छैक । सुग्गापोसनिहार पिजरामे दू-तीन टा कटोरी धऽ दैत छैक । नित्तह दिन पिजराक फड़की खेलि कटोरी सबमे नीक-निकुत आहर आ पानि धऽ दैत छैक आ भरि दिन कहैत रहैत छैक- मिट्ठू !! कहू-चित्रकूटके घाट पर... ।'

हय, और की लिखियह ? एतबेसँ हमर सब हाल बूझि जयबह । जँ हमर चिट्ठी भेटि जाह किनसाइत, तँ तुरन्त उतारा दिहह । अनठबिहह नहि । एकदम नहि अनठबिहह। तोरा हमरे सप्पत । --तोरे बहिना

**हय बहिना !** **27 [ नैहरतः ]**

तोहर चिट्ठी सब भेटल । तोँ लिखलह अछि जे नैहरसँ झरकी लागल छह से एखन तोँ नैहर नहि अयलीह अछि । जाबत एतऽ तोँ छलीह ता तँ तोहर गाम छलह । तोँ अपना गाममे छलीह । तखन की एहि ठामकेँ नैहर कहैत छलहक ? मुदा सासुर तोहर अपन गाम आ अपन गाम आब गाम नहि रहि नैहर भऽ गेलह । सासुरमे देल नाम आब अपन नाम असली नाम भेलह । दुनियाँक रीतिए यैह थिकैक से हम तोरा कोना बुझबियह ? हय, हमरा नैहरक प्रति कोनो रोख-राग नहि अछि, मुदा तैयो कहैत छियह जे केहुनीक चोट आ नैहरक बोल एकरंग होइत छैक से कहनिहार कोनो झूठ नहि कहलकैक। हमरा आश्चर्य होइत अछि जे तोँ एखन धरि अपन सासुरक वस्तुसँ, लोकसँ, घर-आङनसँ सिनेह नहि जोड़लह अछि । जाबत तोरा ओहि ठामक प्रति ममता नहि जगतह तावत नैहरक हेतु एहिना छान-पगहा तोड़ैत रहबह । हय, नैहरमे बेसी दिन रहब की कोनो नीक वस्तु थिकैक ? तोँ जे लिखलह अछि जे जँ जिनगी भरि अपना गाममे रहऽ देअय तँ खुसीसँ रहब, से नीक गप्प नहि । हमरा कोनादन लागल । एहन सन जेना ओ कोनो अशुभ बात होइक । हम ओहि दिन महादेवबाबाकेँ पचीस टा बेलपात आ पाँच लोटा जल चढ़ा अयलियनि जे हमर बहिनाक ओ अशुभ कथाक पाप कटित भऽ जाय । जे बजलह से बजलह, आब सपनोमे एहन बात जुनि बजिहह ।

आर जे बात लिखलह से बड़ बेस । हमरा बहिनाकेँ यैह चाहबे करी । मुदा एकटा

गप्प बड़ सोचक अछि । हमर पाहुन तोरासँ एना किएक असन्तुष्ट रहैत छथुन ? हुनका संबंधमे जे गप्प सभ लिखलह अछि, ताहिसँ तँ यैह बूझि पड़ैत अछि जे दुनू गोटामे नीक जकाँ मिलान नहि रहैत छह । हय, एखन तँ नव-नौतारि लोक छह, खैतह-खेलैतह से रूसे-फुल्लीमे समय गुदस्त करैत छह । तोरासँ एना उखड़ल-पुखड़ल किएक रहैत छथुन से बुझबाक कोरसिस करह । एखन जँ तोँ पाहुनक मोनमे नहि बसबऽहुन तँ फेर जिनगी भरि उपेखलिये रहि जयबह । पाहुनसँ मिलानक जे एकटा अओसर भेटलह तकरा तोँ लोहछल आ तोड़ल बोल बाजि कऽ गमा देलह, से नीक बात नहि भेलह । आब तोरा के बुझौतह ? अपने ने होसियारीसँ काज लेबह तँ आगाँ सुख होयतह ? ओहि संबंधमे फेर लिखिहह जे पाहुनक की रुखि छनि।

हय बहिना ! आम तँ एहू ठाम खूबे फड़ल छैक । मुदा आमक गाछीक ओ रंग-रभस कतऽ । नवकी छौंड़ी सभकेँ जाइत देखैत छिऐक तँ सेहन्ता होइत अछि जे हमहूँ एकरे सभ जकाँ खूब उजोड़ खेलितहुँ । मुदा आब तँ ने ओ नगरी ने ओ ठाम । जहिना लोकक वयस बीतल जाइत छैक तहिना पछिला वस्तु सभ छूटल जाइत छैक । दोसर गप्प, अपना सभक हेड़क ओ लोक सभ कहाँ अछि ।

भरि आङन अमोट पसरल छैक से ओहीमे बाझल रहैत छी; माय कहैत तँ नहि अछि, मुदा अपने संकोच होइत अछि जे हम बैसलि छी आ ओ काज करैत छैक । हय बहिना, पहिने एना संकोच कहाँ होइत रहय ? कोनो काजो अढ़बैत छलि तँ अनठा दैत छलिऐक । बात कहैत छलि ताहि लेल धन्न सन बूझि पड़ैत छल ।

प्रीतमक वियाह भऽ गेलनि, से ओ अपन प्रीतममे लिपित भेल रहैत छथि । आब की ओ हमरा सभसँ बजतीह ? हुनका आँखिक रंगे एखन दोसर छनि । गंगाजलीक बच्चाक मोन कने अनमना गेल छलैक, मुदा आब ठीक छैक । हय, चोरा कऽ आम खा लेने छलैक ने । बेला मातरिक गेलि आम खयबाक लेल । कोनो चिट्ठीयो-पत्री ने देलक अछि । मातरिक गेने जँ ई हाल तँ सासुर गेलापर बिसरिये जायति ओ । रामजोड़ी आ अकाशफल हमरे जकाँ अमोटमे सनागल अछि । साँझ कऽ कहियो काल भेंट होइत अछि।

अपना गाममे तीन-चारि गोटाकेँ बियाह भेलैक अछि । आब तँ बूझि पड़ैत छैक जेना वऽर जनमबे ने करैत छैक । ढील-उड़ीस जकाँ खाली छौंड़ीए सोहरल छैक तेँ ने वऽरक एना महगी ? आदर्श बियाह लेल जे पाहुन मुँह विधुअबैत छथि से बेकार । नीक काज कयने एहिना स्वार्थी लोकक बात सहऽ पड़ैत छैक ।

हय, घरक काज-धंधा नहि करैत छहक किछु ? किछु-किछु काज-ताज कयल करी ने । तोरा हम कतेक बुझबियह हय ? मुँह देखनिहारि सभसँ तोँ अकच्छ तँ ने होइत छह ? कहैत छैक जे जाबहि धरि लाल नूआ ताबहि धरि कनियाँ । से जावत नऽव छह, तावते लोक औतह देखबा लेल । ईहो सभ सऽख-सेहन्ता थिकैक। तेँ हुनका सभसँ अकच्छ जुनि होइ । आरो गप्प सभ लिखिहह । –**तोरे बहिना**

हय बहिना !



तोहर चिट्ठी पाबि मोन बड़ प्रसन्न भेल जे आब तोँ हमरा बिसरैत नहि छह। जल्दी–जल्दी चिट्ठी दैत छह। एहिसँ हमरा बहुत भरसाहा होइत अछि। हय बहिना ! एहि बातक पंचैती के करत जे नैहर अधलाह थिक की नीक ? हमरासँ कोन बात एहन लिखा गेल जे तोरा अशुभ लगलह ? अपना सासुरसँ मोन मोट कऽ कऽ जे क्यो नैहरमे रहऽ चाहैत अछि ओकरा सन अलच्छि के होयत। लोक कहैत छैक जे बेटीक वास सासुरे नीक, से ओहि बातकेँ कटैत कहाँ कहाँ छिऐक ?

तोँ लिखलह अछि जे सासुरक लोकसँ सिनेह जोड़बाक लेल, ममता जगयबाक लेल, से बात तँ एकदम ठीक। हम मानैत छियह, मुदा से अपना कयने आ बनौने तँ नहि होइत छैक। ओ तँ अपनेसँ ने भऽ जाइत छैक।

तोहर पाहुन हमरासँ दिनो दिन रुष्टे जकाँ भेल जाइत छथुन। कखनो तँ झाड़ियो कऽ बाजि लैत छथि। हमरा किछु ने फुराइत अछि जे हम की करू। ओ तँ हमरासँ केहन सिनेहसँ गप्प करैत छलाह पहिने। से आब ओना किएक भेल जाइत छथि से नहि कहि। हमरा तँ होइत अछि जे खूब भोकासी पाड़ि कऽ कानी। आब एकटा की ढाठी धयलनि अछि से बुझबह ? ओछाओनपर जाइते देरी निन्नसँ सूति रहताह। एको बेर उनमुनयबो ने करताह। हम डरेँ उठबैत नहि छियनि जे कोन ठेकान, तमसा जाथि। हम अपने उकस–पुकस करैत रहब, अडैठी–मडैठी करैत रहब जे एहू बयबेँ हुनक निन्न टूटि जयतनि, मुदा ओ छथि जे कथी लेल एको बेर सुगबुगयबो करताह। हय, हुनकासँ गप्प करबाक लेल सेहन्ता होइत रहैत अछि। पहिने ओ केहन भरि–भरि राति गप्पे करैत रहि जाइत छलाह ! हमरा औंघी लागि जाइत छल, आँखि ढेउरैत रहैत छल, अपने झपलाइत रहैत छलहुँ तैयो ओ हमरा उठा–उठा कऽ गप्प करैत छलाह। जहाँ कनेक आँखि लागि जाइत छल कि पाँजरमे आङुर भोंकि कऽ कहैत छलाह जे अय, सूति रहलहुँ ? निन्न तोड़ू ने ! गप्प नहि करब ?' हम हुनका कहि बैसैत छलियनि जे– हमरा बेसी उकठ नहि करू। सूतऽ दियऽ, बड़ औंघी लागल अछि।'

ओ कहैत छलाह– हमरा कहाँ लगैत अछि औंघी ? हम तँ जगले छी।

–भरि दिन रहैत छी सूतल तँ औंघी कोना लागत ?'

–अहूँ किएक ने सूति रहैत छी ?' ओ कहैत छलाह।

हम कहैत छलियनि– हँ–हँ ! हम सुतैत छी तँ लोक सभ खिस्सा करऽ लगैत अछि जे भरि राति गप्पसँ फुरसति नहि होइत छैक।'

एहिपर ओ हमरा अपनामे समेटैत कहैत छलाह– जखन लोक कहिते अछि तखन भरि छाँक गप्प किएक ने करी ?' आ हम बेसुध भऽ जाइत छलहुँ हुनक मधुबोलमे।

से आब वैह तोहर पाहुन हमरासँ भरि मुँह बजबो ने करैत छथि । टोकबो ने करैत छथि । ई सभ थिक अभाग, आर की कहबैक ? जँ हमरा नसीबेमे ई अनस्था लीखल होयत तँ के टारि सकत ?

हय बहिना ! प्रीतमक वियाह भऽ गेलैक से जानि बड्ड हर्ख भेल । हय, ओकर वऽर केहन छथिन ? देखबा लय बड़ मोन लागल अछि । सिउँथिमे सिन्नुर कयने, पीयर नूआ पहिरने, माँथ झपने हमर प्रीतम केहन लगैत होयत से देखबा लेल सेहन्ता होइत अछि। जानि नहि, कहिया देखबैक ! हय, ओकरा सासुरसँ की सभ गहना अयलैक ? भार-दोर केहन छलैक ? सभ बात फड़िछा कऽ लिखिहह । प्रीतमकेँ हमरा दऽ कहि दिहक । अयँ हय ! अपना हेड़क सभ गोधियाँ छिटफुट भऽ गेलैक ?

अमोट खूब पाड़ैत छह ने ? होयतैक मोनो-दू-मोन की ? एतऽ आम तँ, बीचमे जे बदरी भऽ गेल छलैक से सड़ि कऽ लिद भऽ गेलैक । गाछीसँ ढाकीक ढाकी पाकल आम अबैत छैक आ राइ-छाइ भऽ कऽ फेका जाइत छैक । केओ पुछनिहार नहि । तोहर पाहुन आङनमे एक दिन बजैत रहथुन जे एहि बेर आमक जे गाछ फड़ल नहि आ जाहि वऽरक वियाह नहि भेलैक से फेर जिनगी भरि ओहिना रहि जायत । हय, एहि बेर बियाहो बहुत भेलैक अछि ।

बहिना हय ! वऽरक पक्षमे जे लोक एतेक गनबैत छैक से किएक ? बेचल तँ जाइत छैक चीज-वस्तु, खेत-पथार, माल-जाल ई सभ ने ! लोक कतहु बेचल जाइक ! लोक सभ एना बाउर किएक भऽ गेल छैक हय ?

हय बहिना ! एखन मधुश्रावणीक झमेल चलि रहल छैक । उमादाइ ओहीमे लिपित छथि । हम कहलियनि जे एखन जँ अहूँकेँ वियाह भेल रहैत तँ एहिना ने रङलसाड़ी पहीरि चङेरामे जाही-जूही लोढ़ऽ जैतहुँ ?' एहि पर ओ तुनुकि उठलीह– हमरा नहि काज अछि ओकर । अहीं लोढ़ू गऽ ने ?'

एक बेर कऽ सभ छौंड़ी आबि कऽ धौजनि कऽ जाइत अछि । नऽव बियाहलि छौंड़ी सभक आँखिक रङ देखि कऽ अजगुत लगैत अछि । एकटा छथि जगदम्बा । ओ बड़ि सज्जनि । ककरोसँ ने बाजब ने भूकब । ने झगड़ा ने दन । मुदा जाहि दिनसँ हुनकर बियाह भेलनि अछि, ओहि दिनसँ जे बजक्करि भऽ गेलि छथि से जनि पूछह । उग्रतारा दाइ पुछलथिन जे– हय, आब तोँ ऐना बजन्ता किएक भऽ गेलीह ?

ताहि पर जगदम्बा कहलथिन– पहिने नहि बजैत छलहुँ जे लोक खिस्सा करत, मुदा आब बाजब तँ की होयत ?

काज-धन्धा दऽ जे लिखलह से हम की करिऐक ? हमरा केओ करैए ने दैत छथि तँ ताहिमे हमर कोन दोष ? एक दिन घर बहारैत रही कि उग्रतारा दाइ आबि कऽ हमरा हाथसँ बाढ़नि छीनि लेलनि । एक दिन हमर सासु आबि कऽ बाढ़नि छीनि कऽ कहलनि–

एखनेसँ ई सभ करऽ लागब तँ सासुरक सुख की बुझबैक ? आगाँ तँ अहींकेँ घर सम्हारबाक अछि । एखन ई सभ हमरे करऽ दियऽ ।' लोक सभ जे देखनिहारि अबैत छथि तनिकासँ अकछाइत कहाँ छी ? ओ तँ नीके लगैत अछि हमरा । आरो की लिखियह एखन? पत्रक उतारा तुरन्त दिहह । तोरा हमरे सप्पत । –**तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **29 [ नैहरतः ]**

तोहर चिट्ठी समयपर भेटि गेल । तोँ जे उतारा देबाक लेल सप्पत देलह से किएक ? बिना सप्पत देने की हम नहि लिखितियह ? नैहरक प्रति जे तोहर विचार छलह ताहिमे थोड़ेक बदली तँ भेलह, मुदा तैयो सन्देह बनले छह । हय, मधुश्रावणीमे जे गनौरीमाय फकड़ा कहने रहथिन से नहि मोन छह ? ओहिमे एक टा नव वऽर–कनिञाक रूसा–फुल्लीक भाव छैक । वऽर अन्तमे कहैत छैक–

**मेरी मनाइनि मानु गे सुन्दरि मेरो गयो बहुते पछतैहों**
**तोँ रुसिहौं दिन चारि के कारन मे रुसिहौं बरिसे बिति जैहों**
**सोनाक सुन्दरि रूपाक आगरि नाकक बेसरि तोँ बेचि खैहौं**
**नैहर गुमान मति करू गे सुन्दरि फेर समाद इहाँ के भेजैहौं**

तोँ तँ अपने बुझनुक छह । तोरा हम की बुझबियह ? यैह बूझि लैह जे सासुरे सभ किछु थिकह । हय, ज्ञानसुन्नरि भौजी एकटा छन्द लिखा देने छलीह, ओहूमे एहने गप्प छलैक । ओ तँ हम तोरो लिखा देने छलियह, तकिहक कोनो कौंपीमे होयतह । नहि तँ हमही लिखि दैत छियह–

**सधवा नारि रहथि जे सब दिन सासुर छोड़ि बापकेर गेहे**
**केहनो रहथु सती ओ तैओ करय हुनक प्रति सभ सन्देहे**
**पतिक रहथु ओ प्रिय वा अप्रिय तैयो हुनक बाप ओ माय**
**राखहु चाहथि तरुनि सुताकेँ पति समीप सासुर पठबाय**

नैहरक रटना रटब छोड़ि सासुरसँ सिनेह जोड़ह, सिनेह । सिनेह अपनेसँ नहि होइत छैक, ओ बनाबऽ पड़ैत छैक । से जावत नैहरपर आसक्ति रहतह तावत सासुरसँ मोह नहि होयतह ई मानल बात । देखैत छियह जे एखन धरि तोँ अपना सासुकेँ सासुए कहैत छहुन, ई बड़ दु:खक गप्प ।

पाहुनक जे हाल–चाल लिखलह अछि से बूझि कऽ बड़ सोचमे पड़ि गेल छी, बड़ चिनता भऽ रहल अछि जे हमरा बहिनाकेँ ओ किएक उपेखने छथिन । हय, तोरेसँ कोनो अपराध भेलनि अछि तेँ तँ ने ओना कयने छथुन ? पता लगाबह जे की बात थिकैक । अकारणे कोनो बात नहि होइत छैक । ओ रूसल छथुन, रुष्ट छथुन तँ ओहि पाछाँ अवस्से किछु होयतैक । पाहुनकेँ हम खूब नीक जकाँ चिन्हैत छियनि । ओ बड़ गम्भीर लोक छथि । हुनका मोनमे अवस्से कोनो बातक दुख भेल होयतनि । तोँ अनधैर्य नहि होइहह । जँ एक बेर

ओ जी खोलि कऽ बाजि देथुन तँ सभ मनोमालिन्य समाप्त भऽ जयतनि । जँ तोरासँ कोनो गलती भेल होअह तँ ओकरा सुधारह आ ओहि लय पाहुनसँ मिनती कऽकऽ छमा माङि लैह । अपना लोकक लऽगमे लऽत होयबामे कोनो हानि-गरानि नहि होइत छैक ।

हय, बहिना ! प्रीतमक वऽर तँ छथिन सयमे एक । महाग सुन्नर । मुदा भार-दोर खूब ठठगर नहि । जतेक टाका ओ लोकनि लेलथिन ताहि हिसाबेँ गहना-गुड़िया सेहो नहि । कपड़ा-लत्ता धरि खूब बढ़ियाँ छलैक । मधुश्रावणीमे एही ठाम छलथिन । परसू खन अपना गाममे बेस धमगज्जर रहलैक । अङने-अङने हकार पुरैत-पुरैत टाङ दुखाय लागल । भरि पथिया अंकुरी भऽ गेलैक । हय, सभसँ बलाय तँ भऽ गेल तेल-सिन्नुर लेब । जाहि आङन जाइ से लेबा लेल आग्रह करबे करय । जँ नहि लितिऐक तँ अनेरे मोन छोट । एखन धरि तेलसँ माथ चप-चप कऽ रहल अछि । सौंसे साड़ी सिन्नुरसँ लाल भऽ गेल अछि । एक बेर कहबो कयलिऐक तँ लोक कहलक जे- एह ! ई सभ ऐहब-सुहबक सोभा थिकैक ।'

प्रीतम से, तीन दिनसँ हाड़-काप होइत जे कोना टेमी पड़त, कोना नहि । ओ हमरा भरि पाँज कऽ धयने जे 'कोनो उपायसँ एहि विधिकेँ टारि दैह ।' हय बहिना ! हम कहलिऐक जे केहनि बताहि छह ? ई विधि छिऐक आ विधि कतहु टारल जाइक ? हमरा तँ मोन होइत अछि जे एक बेर आरो मधुश्रावणी पूजऽ कहितय तँ पुजितहुँ ।' बहिना हय, कतेक बढ़िया लगैत छल जे हरियर साड़ी पहीरि कऽ हमरा लोकनि कनैलक फूल तोड़ऽ जाइत रही ! जाही-जुही बिछबामे कतेक मोन लगैत छल ! दुख एतबे जे ई एके बेर जिनगीमे अबैत छैक । हय, आब ओ दिन-दुनियाँ सभ पुरान पड़ल जाइत छैक । फेर नहि औतैक ओ दिन ! नोन खाइ लय नहि भेटैत रहय तँ हम खौंझा कऽ बाजलि रही जे 'एहन पाबनिक कोन काज ?' ताहिपर गनौरीमाय कहने छलीह जे हय फूलदाइ ! एना नहि बाजी। पाछाँ एहि दिन लय सेहन्ता होयतह ।'

एहिपर हम कहने रहियनि जे- कथी लेल सेहन्ता होयत ? नहि होयत ।'

आ से हुनकर गप्प सवा सोलह आना सत्त । हय, प्रीतम बेस मोटायलि जाइत छथि। देह बेस पूर-पार भऽ गेलनि ।

काज-धन्धा तोरा लोक कहतह तखन करबह ? सासुरमे तँ एहिना काज नहि करऽ देथुन । काज नहि करबह तँ ओहि ठामक लोक कोना बुझथुन जे तोँ लुरिगरि छह कि नहि ? हय, लोककेँ पहिने कनिञाक लेल मोन लटकल रहैत छैक जे केहन अछि, केहन नहि । कनिञाकेँ देखला उत्तर ओकर स्वभाव, प्रकृति, लूरि-बेबहार सभ जनबाक कंछा रहैत छैक । सुतबाक बेरमे सासु लोकनिक पयर जाँति दहुन । लोक सभ जे देखऽ अबैत छथुन ओहिमे जे श्रेष्ठ होथुन तनिका आँचर लऽ कऽ तीन बेर पयर छूबि कऽ गोड़ लागी। हुनका लोकनिक पयर जाँति दियनि । हय, ई सभ कुलीनक लच्छन थिकैक । से सभ नहि कयने लोक हिनस्ताइ करतह । एखन एतबे, पत्रक उतारा जल्दी दिहह । **-तोरे बहिना**

हय बहिना !

तोहर चिट्ठी भेटल तँ बड़ धैर्य भेल । हय, अपन लोकक भरसाहा भेटने कोनो दुखक भार हल्लुक भऽ जाइत छैक । मुदा फकड़ा धरि खूब लिखलह, जेना हमरा अबिते ने होअय ! हय, तों कहैत छह जे सासुकें सासुए कहैत छहुन से नीक बात नहि ।' ओहि संबंधमे की कहियह ? एतेक दिन तँ मायकें माय महैत छलिऐक, बाबूकें बाबू कहैत छलियनि । मुदा एहि ठाम आब फेरसँ नऽव कऽ ओ सभ सीखऽ पड़ल अछि । धीया-पुता जकाँ माय-बाबू कहब सिखलहुँ अछि । बुढ़बा सूगाकें पढ़ायब आ पाकल बाँसकें लिबायब पार लगैत छैक ? मुदा हमरा से करऽ पड़ल। अपन सासु-ससुरकें माय-बाबू कहबामे कोना दन लगैत छल । ओरिअयबे ने करैत छल । मायकें 'गय माय' कहि कऽ सोर करैत छलिऐक आ एहि ठाम 'अय' कहऽ पड़ैत अछि । 'गय माय'कें 'अय माय' करबामे अपना बड़ कठाइन लगैत छल। हय बहिना ! गामपर तँ माय ई सभ सिखा देने छलि, मुदा सुनबामे आ करबामे बड़ भेद छैक । एहि ठाम अपना सासुकें 'अहाँ' नहि कहि कऽ 'ई' कहऽ पड़ैत अछि– ई खयलथिन, ई लेथिन, ई सुनथुन ।' जे हो, मुदा आब अभ्यस्त जकाँ भऽ गेल छी । तें तोहर उपराग आब हमरा नहि भेटक चाही ।

काज-धंधा दऽ जे लिखलह अछि से ओहिमे हमर कोन दोष ? जबरदस्ती हम कोना की करी ? तखन हँ, भोरे उठि कऽ हम पिड़ही सभकें माँजि लैत छी । ईहो लोकनि एक दिन-दू-दिन रोकलनि, मुदा फेर छोड़ि देलनि । हय, सभ दिन कऽ भोरमे एक बेर कऽ हँसी लागि जाइत अछि । जखन पिड़ही माँजऽ लगैत छी कि माय (सासु लिखने तों तमसा जयबह) कहथिन जे–

**काठके कठोला बाबा माटीके हुरदंग, ओही लऽ कऽ कहैये रगऽड़ गे रगऽड़ ।**

बुझलहक जे की माने होइत छैक एकर ? हय, दच्छिन भरक कनियाँ उत्तर भर गलैक तँ ओकरा एहिना माटिक लोढ़ी लऽकऽ पिड़ही मँजबाक लेल देलकैक । कनियाँकें ओरिआइते ने रहैक । जखन ओकर बाप अयलैक तँ कनियाँ ओकरा कानि-कानि कऽ ई गप्प कहलकैक। कठोला भेलैक पिड़ही आ हुरदंग भेलैक ओ रगड़ना ।

ठाँव-बाट करबामे नहि केओ रोकैत छथि । साँझमे लालटेम लेसि कऽ साँझ देब, तुलसीचौरापर दीप देब– ई सभ काज हमरे करऽ पड़ैत अछि । आब सौचैत छी जे एक दिन जबरदस्ती भनसाघरमे जा कऽ भानस-भात करऽ लागब । बड़ कोनादन लगैत अछि बैसलि, हय ! मायकें पयर जाँति दैत छियनि ।

हय बहिना ! मधुश्रावणी दिन हमरो मोन कोनादन करैत छल । होइत छल जे एखन जँ अपना गाममे रहितहुँ तँ कतेक आनन्द होइत ! हय, प्रीतमक ने हम बियाहे देखि सकलहुँ ने मधुश्रावणीये । प्रीतम एकटा चिट्ठीयो ने लिखैत अछि । सभ संगी-बहिनपा हमरा बिसरि देलक । केओ ने मोन पाड़ैत अछि । एकटा तों छह जाहिसँ हम नाभरोस नहि होइत

छी । हय, प्रीतमकेँ कहिहक जे अपना प्रियतममे लिपित भऽ कऽ हमरो सभकेँ बिसरि गेलि । हय, हमरो सभक बियाह भेल छल कि नहि ? आब देखा चाही जे प्रीतमक साँझोभतरासि पूजब देखबाक सुजोग लगैत अछि कि नहि ।

बाबूजी से पुछारि पठा कऽ बैसि रहलाह । ककरो भारक संग पठयबो ने कयलथिन। हम बाट तकैत रही जे केओ अवस्से आओत, मुदा से हमरा भाग्यमे लिखल रहय तखन ने । कहुन ने जे एक बेर अपनो आबि कऽ भेंट कऽ जयताह । अपना लोकक मुँह देखबा लेल मोन छटपटाइत अछि ।

तोहर पाहुन सत्ते बड़ गंभीर लोक छथुन । एतेक गंभीर जे ककरो कोनो थाह नहि भेटैत छैक । हुनकर ई गंभीरता तँ हमरा लेल आरो दुखदायक भऽ गेल । जँ एहिना करबाक छलनि तँ हमरा अनबे कयलनि किएक ? ककरो पिजरामे राखि ओकरा बिनु अपराधे ताजन देब की उचित छैक ? जखन लगमे उमादाइ, बड़कीदाइ, माय, पीसी कि सादीपुरवाली देयादनी रहैत छथि तँ मोन लगैत अछि आ एकसर होइते छाती फाटऽ लगैत अछि । एकदमसँ अन्हार लगैत अछि ।

तोहर पाहुन तँ आब पयरमे तेलो नहि लगबऽ दैत छथुन । जँ कि लगाबऽ जयबनि कि पयर समेटि कऽ चद्दरिसँ झाँपि लेताह । एकटा आरो गप्प शुरू कयलनि अछि । मन्दिरपर झूलन होइत छैक । साँझे किछु पनिपियाइ कऽ कऽ ओतऽ चल जाइत छथि आ अबैत छथि अधिरतियामे । आङनोक लोक सभ झूलन देखऽ चल जाइत छथिन । खाली माय नहि जाइत छथिन । हमरा डऽर जकाँ होइत अछि एतेकटा आङनमे । तोहर पाहुन अबैत छथुन तँ उग्रतारादाइ जागल रहैत छथिन तँ वैह खायक परसि दैत छथिन। नहि तँ चुपचाप आबि सूति रहैत छथि । हम कहबनि जे परसि दैत छी तँ ओ चुपचाप लालटेम मिझा देताह । हम तँ फटकफन्दमे जेना पड़लि छी।

हय, मायकेँ ई बात सभ नहि कहिहक । ओकरा बड़ दुख होयतैक । हमरा भाग्यमे जे लिखल अछि से तँ हम भोगबे करब । ओकरा आन केओ की बाँटि थोड़बे लेत ? जँ भगवती एही विधिएँ रखतीह तँ ओहिमे अपन कोन सक ? आरो कुशल समाचार लिखिहह । तोरा हमरे सप्पत, पत्र देखैत उतारा दिहह । **—तोरे अभगली बहिना**

**31 [ नैहरतः ]**

**हय बहिना !**

तोहर चिट्ठी भेटल । पढ़ि कऽ बड़ चिन्तामे पड़ि गेल छी । की भऽ गेलनि हमरा पाहुनकेँ जे ओ तोरासँ एना रुच्छ व्यवहार करैत छथुन ? चिट्ठी पढ़ि-पढ़ि कऽ हमरो छाती फाटऽ लागल । पाहुनकेँ तँ हम बड़ नीक पुरुख बुझैत छलियनि, हुनका ताइञे हमरा बहिनाकेँ ताजन भेटत से तऽ सपनोमे ने विश्वास छल । हय, जगदम्बापर ध्यान लगौने रहह। सभ किछु हुनके इच्छासँ होइत छैक । वैह कल्याण करथुन।

हय, जँ दुख नहि करह तँ हम एक बात लिखियह । हय, ओना तँ जे भावी रहैत छैक सैह होइत छैक, मुदा ओकर दोख मनुक्खेकेँ लागि जाइत छैक । तोँ अपन व्यवहारमे कहियो कोनो त्रुटि तँ ने कयलहुन अछि ? नऽव लोक बड़ तुनकाह होइत अछि, खाहेँ ओ मौगी रहओ कि पुरुख । मौगी तँ थोड़ेक सहनमा होइतो अछि, मुदा पुरुख तँ एको रत्ती ने । कनी-कनी टा बातक रोख लागि जाइत छैक ? कोनो तेहन बात तँ ने कहलहुन जाहिसँ हुनका मोनमे बड़ दुख भेल होनि ? पता लगाबह जे एहिमे कोन भेद छैक ?

अपन सासुकेँ ई बात नहि जना देलहुन ? नहि होअह, तँ आने-मानेसँ ननदिकेँ ई बात कहि दहुन। तोरासँ पाहुन एना कयने छथुन से हुनको लोकनिकेँ नहि नीक लगतनि। ओ सभ कोनो उपाय करबे करथुन ।

हय, हमरो एक बेर एहिना भऽ गेल रहय । तोहर ओझा हमरासँ एहिना रुष्ट भऽ गेल छलाह । कतेक दिन धरि तँ हमरासँ बजबे ने करथि । जेना हमर बात तीत रहय तहिना ओ करथि । मुदा हमरा ननदिकेँ जखन ई बूझल भेलनि तँ ओ मायकेँ कहलथिन । एक दिन खूब इजोरिया राति रहैक । हम आ हमर ननदि दुनू गोटा आङनमे आबि कऽ बैसलि रही । तोहर ओझा घरमे खाइत रहथुन आ माय आङनमे बाड़ तुमैत रहथिन । बातेपर बात चललैक तँ हमर ननदि कहलथिन जे 'गे माय ! लोक कनेको टा बातपर बाजा-भुक्की बन्द कऽ लैत छैक से कोना नीक लगैत छैक ? आ बहुत दिन धरि जँ बाजब-भूकब बन्द रहैत छैक तँ फेरसँ बजबामे बड़ असौकर्य होइत छैक ।'

हम हुनकर हाथ जतैत, बिट्ठू कटैत जे ई बात जुनि बाजी, मुदा ओ बाजिए देलथिन । एहिपर माय कहलथिन जे 'कोनो असौकर्य ने होइत छैक ।'

एकटा खिस्सा कहलथिन जे एकटा बूढ़ीकेँ बेटा-पुतोहु रहैक । दुनूमे कहियो गप्प-सप्प नहि होइक। ओहि बूढ़ीकेँ सेहन्ता होइक जे हमर बेटा-पुतोह गप्प-सप्प करैत, मुदा रातिमे कान पाति कऽ सुनय तँ गुम्म-सुम्म । ओ लोक सभ लग ई बाजलि। लोकसभ, मने सखी-बहिनपा कनियाँसँ ई बात पुछलकैक । कनियाँ कहलकैक जे ओ किछु बजिते ने छथि तँ हम की बाजू ? गप्प-सप्प करबाक तँ मोन होइत अछि, मुदा करू की ?' एहि पर ओकर सखी कहलकैक जे अहाँ अपनेसँ गप्पक सूरसार करब । नहि हो तँ हुनक कोनो वस्तुक प्रशंसे कऽ देबनि ।' कनियाँ ओहि दिन खूब सिङार-पटार कऽ कऽ गेल । ओकर वऽर एकटा नऽवे दोहरि बनबौने रहैक । वऽर-कनियाँ दुनू चुपचाप सूतल छल । ककरो दिससँ कोनो लाड़-चार ने। तखन कनियाँ ओहि दोहरिकेँ हाथसँ छुबैत कहलकैक- ई दोहरि केहन सुन्नर छैक। बलिहारी लला एहि दोहरिकेँ !!'

वऽरकेँ विचित्र जकाँ लगलैक । ओ कनियाँक कानक झुम्मककेँ छूबि कऽ कहलकैक- आ ई झुम्मक केहन बढ़ियाँ छैक ! बलिहारी लला एहि झुम्मककेँ !'

केबाड़ लग ओ बुढ़िया बेटा-पुतोहुक गप्प सुनबा लेल कान पथने छल । से ई गप्प

सूनि बड़ खुसी भेलैक, ओ बाजि उठलि– वाह ! बलिहारी लला एहि दुन्नूकेँ !!'

एकटा चोर बड़ी कालसँ एहि जोहमे रहय जे ई सब सूति रहत तँ चोरि करब। मुदा ओ ललाक लटझड़मे से नहि कऽ सकल तँ ओ तामससँ ओहि बुढ़ियाकेँ ठुनका मारैत ई कहैत घरसँ बाहर भऽ गेल जे– बाढ़नि मारू तोरा तिन्नूकेँ ।'

हय बहिना ! ओ तँ भनसाघरमे खाइते छलाह, से ओ गप्प तोरा ओझाकेँ कानमे पड़लनि आ तामस सभ पार । रातिमे अयलाह तँ कहलियनि जे– आबो एहि गप्पक अर्थ लागल कि नहि ?'

ओ हँसैत बजलाह जे भरि दिन घरमे बैसल यैह सभ खुरपात करैत रहब की ! जँ माय बुझने होयत तँ की कहने होयत ?'

हम कहलियनि जे– सप्पत खाउ जे आबसँ हमरासँ कहियो बाजब नहि छोड़ब।'

ओ कहलनि– वाह रे वाह, बलिहारी लला एहि सप्पतकेँ ।' आ बस...

तोरो कोनो एहन उपाय करऽ पड़तह । तोँ एको रत्ती अनधैर्य नहि होइहह । हुनकासँ बाजब बन्द नहि करिहह । अपनोसँ उपकरि कऽ किछु-किछु गप्प कयल करी ।

काज-धन्धा दऽ जे लिखलह से नीक बात, मुदा भानस लेल एखन ओतेक उताहुल होयबाक काज नहि । थोड़ेक-थोड़ेक कऽ काज करी । हय, सासुर गेलापर सभकेँ बजबामे थोड़े दिन एहिना अभ्यास करऽ पड़ैत छैक, पाछाँ ठीक भऽ जाइत छैक । अपना सासुकेँ माय कहबामे कोन हर्ज ? कठाइन किएक लगतैक ? पाहुनक माय तँ तोरो माय भेलथुन । तखन 'गय' आ 'अय' बला गप्प । से अपन माय जखन 'गय दाइ' कहैत छैक तखने बेटी 'गय माय' कहैत छैक । जखन सासु 'अय कनियाँ' कहैत छथुन तँ हुनका 'अय माय' कहब तोरा लेल उचिते । कोनो पुतोहुक संग यैह बात होइत छैक ।

मधुश्रावणी बीति गेलैक । प्रीतमक वऽर चल गेलथिन । हुनक रिजल्ट बहार भेलनि। हुनका गेलापर प्रीतम बड़ उदास भऽ गेल छलि । कय दिन ओ सरि भऽ बजिते ने छलि । कहैत छलि जे हमर मोन कोनादन करैत अछि । हम तँ कहलिऐक– गय प्रीतम ! जे तोरा हीयामे से हमरा कीयामे । हमरेसँ बात नहि नुको ।' आरो की सभ से अगिला चिट्ठीमे । तोँ जे लिखलह जे हमरा सभ क्यो बिसरि गेल से की बिसरल जाइक ? हम सभ सतत तोरे चर्चा करैत छियह । तोँ घबड़ाह जुनि। भदवारिक बाद दिन होइते मात्र आबि जयबह । प्रीतमक साँझभतरासिमे अबस्से रहबह। चिट्ठी दिहह । **–तोरे बहिना**

**हय बहिना !** **32 [ सासुरसँ ]**

तोहर सिनेह पाबि कऽ हम जीवन धरौने छी सैह बूझह । हम बड़ि अभागलि छी, हय । हमरापर की बीति रहल अछि से हमही बूझि रहलि छी । जानि नहि, ई पहाड़ सन जिनगी कोना खेपब ? की यैह सभ हमरा नसीबमे लिखल अछि ? तोहर चिट्ठी पढ़ि

कऽ जे थोड़ेक भरोस होइत अछि सेहो सभ छने भरि लेल ।

हय, हम अपना जनैत कोनो अधलाह बात नहि कयलहुँ अछि । ने एहन कोनो बात बजलहुँ अछि। जानि नहि, अनजानमे हमरासँ कोन एहन चूकि भऽ गेल जकर कुफल हमरा भेटि रहल अछि । कोनो बातक दुख हुनका छनि से लाखो कोसिस कऽ कऽ नहि बूझि पबैत छी ।

ओ एहन निठुर भऽ जयताह से की हमरा कहियो शंका छल ? हय, आब बुझैत छिऐक जे हुनका एना करबाक छलनि तेँ सुरूमे ओतेक सिनेह देखौलनि । हुनकर ओ सिनेह ! ओ दुलार-मलार !! ओहिमे हम नहा जाइत छलहुँ । सुधि-बुधि सभ बिसरि जाइत छलहुँ । होइत छल जे सभ दिन एहने रहत । एहिना हुनका सिनेहक सरोवरमे उभ-चुभ भेलि रहब । ओहि दिनमे हम अपनाकेँ सभसँ बेसी भागमन्ति बुझैत रही । मुदा सभ किछु उसरि-पसरि गेलैक । कहैत छैक-

**प्रथमहि सुपहु सिनेह बढ़ाओल देलनि मनि सन मान**
**से निरदय निरसल मोहि आली गुनि गुनि होइ झमान**

आब तँ ओ हमरा दिस घूमि कऽ तकबो ने करैत छथि । ओहि दिन आङनमे आयल छलाह तँ कथी लेल हुनका होयतनि जे एक बेर एहू अभगली दिस तकिऐक । हमरा लगमे थारी छल । हम गिलास उठा कऽ थारीपर खसा देलिऐक । एके बेर झन्न दऽ बाजि उठलैक । मुदा हुनकर कान जेना बहीर भऽ गेल छलनि । कय दिन हुनका देखि कऽ चूड़ीकेँ झनझनौने होयब जे एकोरत्ती एमहर ताकथि, मुदा से हमरा भाग्यमे अछिये ने । जेना तोरा मिलान भऽ गेलह तेना जँ हमरो होइत ।

हय बहिना ! ओ अपन आसन-बासन आङनसँ उठा कऽ दलान परक कोठलीमे लऽ गेलाह अछि। आङनमे रहथि तखन ने । लऽगमे रहितथि तँ की करितहुँ, उपकरियो कऽ हुनकासँ बजितहुँ । हुनकासँ पुछितियनि जे अहाँ हमरासँ एना किएक बिरुझल छी ? हमर कोन अपराध अछि ?' मुदा हम दलानपरसँ कोना बजबियनि ? अङनो जँ अबैत छथि तँ भरि आङन लोक । कखनो सुनहटमे आबथि तखने ने । उमादाइ ई बात बुझने छथि, मुदा ओ कोना की बजतीह । कुमारि लोकके तँ एहि सभमे बड़ संकोच होइत छैक ने। उग्रतारादाइकेँ ई बात बूझऽ नहि देलियनि अछि । जँ बूझि जयतीह तँ ततेक छाती फाटऽ लगतनि जे नोरेँ-झोरेँ कानऽ लगतीह। हय, उग्रतारा दाइक मोनमे कोन व्यथा छनि से एखन धरि नहि बूझि सकलियनि अछि। केओ कहबो ने करैत छथि । ओ अपने किएक बजतीह किछु ? हमरा लेल ओ रहस्ये बनलि छथि । से यैह बुझि कऽ हुनकासँ ई बात नुकौने छी जे ओ कानऽ ने लागथि ।

मायक मोन एखन अस्वस्थ रहैत छनि तेँ हुनका एहि सभक सुधि-बुधि कमे रहैत छनि । भानस-भात उग्रतारादाइ करैत छथिन ।

दीदी जे छलथिन से चल गेलथिन । जाहि दिन ओ जाइत रहथि ताहि दिन कनैत-कनैत बताहि भऽ गेलीह । बेर-बेर हमर मुँह उघारि कऽ देखथि । जखन जाय लगलीह तखन दुरुखापरसँ घूमि कऽ फेर हमर मुँह उघारि कऽ देखि गेलीह । हय, ओहि दिन हमरा बड़ करुना भऽ गेल छल ।

की लिखियह, लिखबाक तँ बहुत किछु अछि । अपने थाकि जायब लिखैत-लिखैत, तोँ थाकि जयबह पढ़ैत-पढ़ैत, मुदा तैयो हमर कथा नहि सठत । आमा माइक खिस्सा तोँ कतेक सुनबह ? तोहूँ कहबह जे बहिना खाली अपने पोथा पसारि दैत अछि । सत्ते, हमर चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत अकछि गेलि होयबह ।

प्रीतमक वऽर चल गेलथिन हय । हमरो दऽ हुनका कहने छलहुन ? हुनका हमरा दऽ कहिए कऽ की ? जकरासँ कहियो चीन्ह-पहचीन्ह नहि तकरा लेल हुनका उत्सुकते किएक होयतनि ? प्रीतम किएक उदास भऽ गेलि होयत से हमरा बुझबामे भाङठ नहि रहि गेल अछि। आब तँ प्रीतम बुझैत होयतैक जे एहने होइत छैक । हमरा लोकनिकेँ कोना खौंझबैत छलि ? भरि दिन किचकिचबैत रहैत छलि । कोना कहैत छलि जे ई तँ बड़ अजगुत बात तोँ सभ करैत छह । केओ कतहु जयतैक तँ ओहि लेल लोक खयनाइ-पिउनाइ तेजि देत ?'

हम कहने रहिऐक जे 'प्रीतम ! जखन अपनापर पड़तह तँ मोन पाड़ि देबह' तँ कहने रहय जे तोरे सभ जकाँ हम नहि छी । देखि लिहह । हमरा लेल धन्न-सन रहत ।' चिट्ठी लिखैत-पढ़ैत देखि कऽ प्रीतम कोना बिढ़नी भऽ जाइत छलि ? मारि कहूँ कहऽ लगैत छलि जे 'हय, तोँ सभ जे एना लिपित भेल रहैत छह ओहि चिट्ठीमे से की चिन्नी घोरल रहैत छैक ? के-कहाँ, कतऽ रसय कतऽ बसय, ककर बेटा, कतऽक रहबैया से सभ आबि कऽ तोरा सभकेँ कोन मोहनी लगा देलकह ?'

हम सभ कहिऐक जे– प्रीतम ! जखन मोहनी लागत आ सुतली रातिमे चिट्ठी लिखब आ पढ़ब तखन मोन पाड़ि देब ।' एहिपर ओ कहैत छलि जे– रोग हसोथि कऽ धऽ देबनि जे हम ककरो चिट्ठी लिखबनि आ पढ़बनि ।'

प्रीतमक बात सभ बिसरल नहि होयबह । हमरो नहि बिसरिहह आ उतारा तुरन्त दिहह– तोरे-बहिना

●

## श्रीरामदेवझाक प्रकाशित कृति

**प्रथम प्रकाशित कथा :**
'मुदा आब की ?' ( मिथिला मिहिर, दरभंगा, जुलाइ 1953 ) ।

**कथाकृति :**
एक खीरा : तीन फाँक 1965 / मनुक सन्तान 1966 / इजोतीरानी 1967 / धरती माता 1985 / अंगरेजीफूलक चिट्ठी 2002 ( मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1960-61 ) / बहिनाक विरोग 2002 ( मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1961-62 )/ रामजोड़ी कागतक पाँखिपर 2002 ( मिथिला मिहिरमे धारावाहिक 1963 ) ।

**नाट्यकृति :**
पसिझैत पाथर 1989 ( साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1991, प्राप्त ) ।

**अनुसन्धान-आलोचना :**
शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन 1959 / पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन 1960 / मैथिली शैव साहित्य 1979 / उमापति 1980/ मैथिली शैव साहित्यक भूमिका 1982 / जगत्प्रकाशमल्ल 1990 / जगज्ज्योतिर्म्मल्ल 1995 / जनार्दनझा जनसीदन 1998 / मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य 2002 ।

**अनुवाद :**
पृथ्वी परिचय ( भाग चारि ) 1988 / जीव विज्ञान ( प्रथम भाग ) 1988/ वाणभट्ट ( अंग्रेजी मोनोग्राफ ) 1989 / सगाइ 1992 ( उर्दूक 'इक चादर मैली सी', साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 1994, प्राप्त )।

**सम्पादन :**
नन्दीपति : गीतिमाला 1965 / रामविजय नाट ओ वर गीत 1967/ हरगौरी विवाह नाटक 1970 / नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत 1972 / कुञ्जविहार नाटक 1976/ मैथिली भाषा सरिता ( भाग चारि ) 1984 / दशावतार नृत्यम् ओ षोडश गीतम् 1988 / मैथिली प्राचीन गीतमञ्जरी 1991 / दुर्गाचरित नाटक 1996 / रमेश्वरचरित मिथिला रामायण 1999 ।

**पत्र-पत्रिका सम्पादन :**
वैदेही ( मासिक ) 1964 सँ 67 धरि / संकल्प ( अंक 1 सँ 5 धरि )।

**सम-सम्पादन :**
मैथिली प्राचीन गीतावली 1977 / कविवर जीवनझा रचनावली 1980/ विद्यापति गीतसंचय 1999 ।